

प्रकाशकः—

नंकर-सदन, आगरा ।



मुद्रक—

यज्ञदत्तशर्मा, प्रभाकर प्रेस,  
राजामण्डी, आगरा



विक्रेताः—

साहित्य-रत्न, भबहार  
ठण्डी सड़फ, आगरा ।

# पद्मावत-प्रकाशिका

## पद्मावती-खण्ड

विशेष—ग्रन्थ के आदि में मंगलाचरण करना सभी धर्मों और सम्प्रदायों में प्रचलित है। सूफीसम्प्रदाय के कवियों द्वारा लिखित मयनवियों में इसके आन्तरिक रसूल, बादशाहे वक्त और धर्मगुरु (पीर) की भी स्तुति की जाती है। इसी प्रथा के अनुकूल पद्मावत में भी ईश्वर, रसूल, बादशाह और पीर की स्तुति की गई है। यह प्रेम-गाथा-काव्य सूफियों की मस्तनवियों के ढंग पर लिखा गया है।

करतारु = कर्ता, परमेश्वर। मुसलमानों के यहाँ परमात्मा के कर्ता होने पर विशेष जोर दिया गया है। उनके मतानुसार परमात्मा ने हम को अपनी इच्छा से रचा। जिउ दी ह कीन्ह मंनारु = मनुष्यों में जीव बाला और चगचर मयार रचा। मुसलमानों का विश्वास है कि सर्व प्रथम ईश्वर ने मिट्टी गूँध कर एक पुतला बनाया और उसकी नाक में होकर ईश्वर ने उसने अपना दम (स्वप्न) फूँक दिया जिससे वह पुतला जी उठा जो कि मनुष्यों का पूर्व पुरुष जादम हुआ।

प्रथम ज्योति = महादेव। जायनी का विश्वास है कि मुसलमानों के बाद जादम हमारे यहाँ के महादेव जी थे। प्रथम ज्योति का अर्थ मुरम्मद साहब भी हो सकता है।

कीन्हेनि केलाम = उनसे लिए दहे में पर्वत बन या।

गगिन (अग्नि) पवन नक (हवा) (हृषीकेश) मुसलमान लोग ईश्वर को चार नाम मानते हैं। वे प्रकृत तत्वों के नहीं मानते। उल्लेख—(उल्लेख) रचना चित्रकारी। पनारु = पानल। दमन दमन = नाना प्रकार के।

अहा = था । बंदि मँह = कैद में । बंदिहुति = कैद से । पुनिधि  
फिर लोट कर ।

बं..... आण = जब से वह पत्नी हुआ और उसके पंग्र निकले  
से उसको उठाने की शक्ति आगई अर्थात् वह उठ जाने के लिए ही  
था मनुष्य के भी जन्म के साथ ही मृत्यु लगी रहती है ।

पिजर... मयज = जिसका पिंजड़ा था उसको सोंपकर वह  
गया, जो जिसका था वह उसका हो गया । मनुष्य के लिए भी यह  
लागू होती है । गरीर पंच तत्वों का होता है । मरने के पश्चात् वह टूट  
मिल जाते हैं और जीव जो परमात्मा का अंश है परमात्मा के पास  
जाता है ।

दश द्वार = दश छेद । दश रश्म को मिलाकर दश छेद हो जाते हैं  
मँजारी = तात्पर्य है मृत्यु से ।

धरती = पृथ्वी । केतलीला = लीला का घर । पेट . . टीला  
पेट वा ऐसा गहरा गढ़ा है उसमें जो पहुँच जाता उसको वह नहीं छोड़ता  
सूआ बिल्ली के पेट में पहुँच गया वह अब नहीं निकल सकता है । अथवा  
मृत्यु के मुग्न में पहुँच गया वह वापिस नहीं आता । जहाँ  
जहाँ न जाते हैं ओ. दिन हैं और न जाते पवन और पानी हैं सूआ ऐसे  
पहुँच गया है । वहाँ से लाकर उस कौन मिला सकता है ? दिन-रात  
पवन पानी सभी इस लाक की चीज हैं । परलोक में मनुष्य इन सब  
से परे हो जाता है ।

कल = कल । बयव = बहेलिया । दुका = दुषा । टाटी =  
( घाघे की टाटी ) । बहेलिया लोंग धोखे का प्रेमा झूठा वृत्त बनाने  
जिम पर आकर्षित हो पत्नी बंध जाते हैं और उनके पंगों में लासा  
जाने से वे कैम जाते हैं । चापत = दवाता । पंग दवाता हुआ  
आया कि जिमसे आहत न हो । मूलि मन थाका = वह धोखे के वृत्त



करना चाहिए जिससे प्राण देना पड़े । अब तुम नहीं जानते कि इच्छा  
तोता मौन है ।

नोट — मनुष्यों को भी चाहिए कि जो अपना दोष हो उसे स्वीकार  
करें, दूसरे को दोष न दें ।

## रत्नमेन खगड

पृष्ठ १८

कै सजा = अपने गठ और जिने का उम्मेद करने के समान  
सजाया था । उजियारा = उज्ज्वल । दाग = दाग । सामुद्रिक = वह ज्ञान  
जिसके द्वारा गरीब के अज्ञान को दूर करने का काम किया जाता है ।

लघन = लक्षण । विशेष = विशेष । निरमरा = निर्मल । रत्न  
ज्योतिः परा = रत्न के से प्रकाश वाली रत्न अर्थात् पद्मावती इनके  
मगज (भाग्य) में लिखी हुई है ।

अनोरी = प्रकाशमान, उज्ज्वल ।

जस जोगी = तब प्रभार मालती पुष्प के लिए भौंरा लोग  
सब सुगन्धित फूलों से वियोग कर लेता है उसी प्रकार रत्न मेन उम्मेद  
लिए जोगी बनेगा ।

मिद्ध हांड = प्राप्त कर । भोग भोग = गता भोग के समान  
इसको सब भोग प्राप्त हुए और गता विक्रमादित्य के समान अपने  
पराक्रम के कारण एक नया सवत चलावेगा । न के परदेने वाले  
ज्योतिषी लोगों ने सब बातों को जाँच कर उप-पन्नता को लिए  
दिया ।

हुत = था । चलन बेपारी = आपागिरा के चलन पर । मुक =  
शायद । वादी = नफा या लाभ । नाधि = पार करके ।

देख हाग = हाट में उन आग कुट्ट न दिखाई पडा  
‘सब चीजें’ बहुत परिमाण में थी अर्थात् बहुत कीमत की था थोड़े परि-  
माण और थोड़ी कीमत की कोई चीज न थी ।



निष्ठुर.....शाय = नू निष्ठुर होकर दूसरों की जान लेता है। म  
मुझे हत्या का डर नहीं है ? यहाँ अस्मिता विषयक मन दर्शाता है।

कहमि.....बिगारू = बालक कहता है कि नू पत्नी का दोष क  
लता है कि पत्नी चारे के लोभ से श्याने है, किन्तु वास्तव में निष्ठुर की  
दोषी वही है जो पगवा मांस खाता है, क्योंकि यदि ऐसे पगवे मा  
खाने का शोभ न होता तो बोलिया पत्नियों को क्यों परहता ? पग  
दोष बोलिया और मांस खाने वाले का है। पत्नी तो जय लोभ में पग  
है जब कि स्वामी लोग उसे लोभ दिखाने हैं।

'कहमि पंगि का दोष जनावा' का दूसरी जगह इस प्रकार पाठ है—  
'कहमि पंगि स्वादुक मानावा' अर्थात् नू ( बोलिया ) कहता है कि पंग  
मनुष्यों का राजा है। देसाहा = गरीब लिया। मति = बुद्धि।

भा .... पंग = चित्तौर का राजा लिया। मय साजा = मय नगर  
हो गया अर्थात् मर गया। कहीं कहीं 'मिड साजा' पाठ है। इसका अर्थ  
होगा शिव-लोक की तैयारी की।

पृष्ठ २०

राने... काँटा = उसके गले में लाल और बाले दो कण्ठे ( रानी  
लकीरें ) हैं।

नोट—रहा जाता है कि तोते के जब यह कण्ठे निकल आते हैं तब  
वह उड़ान होता है और तभी उसमें बोलने की शक्ति आती है।

राने पाठा = लाल पंखों पर अनेक शाखों के पाठ चित्रित हैं।  
पाठा का अर्थ पृष्ठ जोड़ भी हो सकता है। उसके शरीर के सब पंख  
चित्रित हैं। राने यना = लाल चोंच से अन्न-मयी दात करता है।

बाघ जनेऊ = कंधे पर जनेऊ की सी लकीरें हैं। कवि व्यास, पंडित  
महदेव = व्यास के 'मान' कवि और महदेव ( पाठकों के सबसे छोटे  
16 ) के समान पंडित हैं। 'बोल अर्थ सों बोलें' = जो वाणी बोलता है  
अर्थ-शुद्ध, मारगर्भित बोलता है।





पड़ता है, नहीं तो उचित न्यून नहीं मिलेगा। जब तक गुण प्रकाशित नहीं होता तब तक कोई उसका मर्म या मूल्य नहीं जानता।

नोट—इन पत्रों में तोते ने आत्म-विज्ञापन की भूमिका बर्णित है। विज्ञापन वाले भी इसी सिद्धान्त पर चलते हैं। वैसे साधारण जीवन में तो यही शीक है 'गुनी न कोई आपु सराहा' (Self praise is no recommendation) लालनजी ने भी परशुराम जी की इसी लिए हँसी उड़ाई थी 'आपन कानी, बार, अनेक भोति बहु बानी'। किन्तु जहाँ व्यवहार और दुकानदारी की चान हो वहाँ यह सिद्धान्त नहीं लागू होता है अर्थात् उसी कसेक हूँ।

मेरचो = मिलाऊँगा। नेव ... ठाँव = उस स्थान में मैं सेवा करता हूँ।

चीन्हा = उसके गुणों को पहचाना अर्थात् यह जान लिया कि मूँगा गुणी है। पयाना = प्रयास कर गया, चला गया। भाखा = बातचीत।

जो बोलै ... जोवा = जो वह राजा का मुख देख कर उसके मन के अनुकूल बात कहना है अथवा जब वह बोलता है, राजा उसके मुख की ओर दबता है। जानो परोवा = जब तोता बात करता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह मोतियों का हार परो रहा है।

जो गेंगा = अगर वह बोलता था तो माणिक और मूँगा की सी मूल्यवान् बात करता था नहीं तो मौन धारण किये चुप बैठा रहता था।

महुन मेला = मानो वह पहले तो अपने विरह-भरे वाक्यों से मार डालता था और फिर मुख से अमृत डाल देता था। वह मारता भी था और जिलाता भी था। तसग अर्थ यह हो सकता है कि मानो मारि (मार = कामदेव) ने उसके मुँह में अमृत डाल दिया हो।

पेमक रहनि लाइ चित गहेऊ = प्रेम की कहानी कह कर वह चित आरुपित कर लेता था।





पुहुप = पुष्प । जहाँ 'पाया ? = नाथे के ग्रामे पैर का क्या किया जावे । नाथे और पैर का क्या मुकाबला विनिमय साधना व ग्राममे पाक' कहूँ कहूँ चरण और कहूँ मया

गद्दी 'लाग = मिटल-दीन की स्त्रियाँ मुग-अयुक्त नोते ने गड़े हैं । वे रूप और भाव्य से भरी हुई हैं अर्थात् उनमें रूप और भाव दोनों हैं ( प्रायः रूपवती भावहीन होती हैं ) उनमें ऐसा नहीं है, सुनकर सारी रुठ गई और तोंते की धान उसके हृदय में तनक सी अड़ई = गड़गा । प्रियोगी = उसका प्रियोग मानेगा, उसके दुग्धित होगा । अथवा सुखमंत्रिमुक्त होन चंगा ।

पृष्ठ २०

थँहरु = थँहरुति हो उठता है । तनचूर = तानचूर, ताउ है जिसकी । मयद 'तमचूर = कर्षा सुर्गे की भौंनि यह पद्मावत मूर्खद्वय की मूर्चना न दे दे ।

धय = दारु, नौकरनी । शनिनी वेग प्रियकी शौची तेरा कि न चाहने वाली जिसमें कि वह गोत्र कथ कर मरे । उसका यह जो न हो सकता है कि प्रियकी की तैरी के साथ बहुत गोत्र युताया । युताया = युताया । आदि मोंपा = मुर की ओर नौ । दिया । दीप जिस भगै-द्वय में दही गुम्पा थी ।

मँदयाना = मंद आचरण वाला, दुष्ट । भयउ 'पाता = जिस सात उसका भी नहीं दुष्ट । वक्ष में नाग का यहाँ चला आया । मुख ग्रामा = मुख से तो और प्रकार की धान कहता है और पैर उलट दूरी से बात करता हुआ है । जिस वगैर कलक-कलक है ।

परी = पक्षी । मा नी = मा नी । पवि 'मा नी = उस पक्षी के उड़ना नही चाहिये कि स्वप्न राखने वाला है उसे ऐसी पक्षी मरने में नही चाहिये कि मरने के बाद उसे मरना न हो ।



तद्वत् व्यवहार करेगी। बाही पाठ होने से तुक भी निज बर्ती है  
अर्थ ठीक हो जाता है।

मकु = शायद, न मालूम।

तुग्य-रोग ( तुस्य = तुगा ) घोड़े का रोग। हन्ति = बन्दा।  
जाए = घोड़े की बला बन्दा के मर पड़े। ग्रन्थाल में पन्दा  
है कि घोड़े पर रोग न आवे और बन्दा पर घोड़े का रोग  
बढ़ने का अभिप्राय है कि दूसरे के अपराध से मैं नाराज जाऊँ।

दुष्ट..... आप = दो चीजें छिपाए नहीं छिपाती एक एक  
छोड़े किया हुआ पाप। वे मुझे हाँ गवाही देकर अत कर देते हैं।

धाय मति साज्जा = धाय को बुद्धि बन आई अथवा धाय  
ठीक हुई। जो उसने सोचा वही हुआ। संजारी = माझी,  
खीन्हा = पकड़ लेगई, मारगई।

कहाँ..... बाही = वहाँ बसन्त, जिसमें नाना प्रकार के फूल  
रहते हैं और कहीं करील जिसमें पत्ता नक नहीं। करील में पत्ता  
भी पत्ता नहीं आता। 'पत्र' अब यदा करील बिछपे दोषो बसन्त

का लोभ भाऊ = मेरा पुरुष क्या है? वह तुम्हें ऐसी काली  
का पति है वह तुम्हें से अधिक कुद नहीं जानता है। यह बात नहीं  
तुम्हें से सुन्दर और कोटि नदर हिनो इसका सुन्दरता की परवाह  
है। उल्लू दिन का भाव ( नद अथवा प्रभाव ) क्या जाने?

नोट — नगमती वी मनोज्ञ निक निति से बात कह रही है  
सुधा के मुख से गंगा की दृष्टि और परब में दोष कहला कर गंगा  
दमक प्रति ( प दिखाना चाहती है।

पृष्ठ २२

हट नई छे = हट, कल-हट-विष, जिसके मुख में हट-  
मरा हो।











जो आत्म-बलिदान करता है और अपना सिर काट कर रख देता है उसी को प्रेम करना शोभा देता है ।

देविण प्रेम के मन्वन्ध ने कबीरदास जी क्या कहने हैं ( यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि । नीस उत्तरं भुईं यरै, तत्र पैठे या नाहि ॥

प्रेम " ..टूटा = प्रेम का फटा जो एक बार पड़ जाता है वह टूटना नहीं है—वह प्राण देने पर भी नहीं टूटना है ।

मिर नेजा = सर डाल दिया, सर रख दिया । पांच न टेज राखि कै बँला = अब प्रेम-मार्ग का चेला बना कर पैर से हटा दो; अब तो मेने प्रेम-मार्ग में सर रख दिया है, अब उलेंगा नहीं । 'गोबली' में सर देकर चोटों से क्या उरना, और प्रतिवों ने पथ के स्थान में 'फोड़' पाठ है, फोड़ के साथ नेजा का योग ठीक बैठता है ।

वरनेसि = वर्णन करता है । नगरसिख = नागून से लेकर चौटी तक श्वेत-श्वेत का वर्णन । वरनु सिगा ( श्रृंगार ) नगरसिख श्रृंगार का वर्णन को । मेरवै = मिलावे ।

अंति ..... राजा = उसका श्रृंगार उसी को शोभा देता है ।

कस्तूरी केसर = कस्तूरी के से बाने और सुगंधित बाज । बलि = बलि जना, न्योदापर होता । बलि बसुकि " ..नरेण । उनके पातों पर स्वयं बसुकि नाग भी अपने को न्योदापर का देने हैं और राजाओं का तो कहना ही क्या ? राज बसुकि सरो के राजा है । बालों की उरना शस्त्रेन और चिकनेपन के कारण सदा न दी जाती है । अब उन बालों के नरेणों के राजा ही न्योदापर हो जाते हैं तब और राजाओं का क्या कहना ?

नौर ना-ति र नी = वह रानी नालनीलता की नोति सुगंधित है, उन पर बल-रूपी-नारे बाहर गुप्त नाये । नुरे = नुके हुए हैं खोटे हैं । आगे भी सच को खोले हुए बतलाया है, 'खोले हि चतुप ला' ।

( ५२ )

विसहर = विपधर = सर्प । विसहर ... रवानी = वेशरूपी ।  
 वहाँ मुकेरु, उसके शरीर की गंध का आनन्द कर आनन्द लेते  
 वेनी ... अधियारा = चोटी को ले कर जो बाल भाड़ते  
 तो याक श-पाताल में अधकार छू जाते हैं — ये लब्ध हैं = वह व  
 जिनसे आकाश पाताल तक आच्छादि होते हैं ।

कंवर = कोमल । नग = नाग = सर्प । लहर = ... दसारे =  
 ( वात ) ऐसे हैं मानो सर पर नद । उद्य से भरे हुए सर्प ...  
 गये । अब सर्प दीन की याचना से मन्त हो जाते हैं तब उसका ...  
 वर जाता है ।

आन्य प्रतियों में दसारे के स्थान में विसारे पाठ है ।

वेद = विद होकर । चहुँपासा = चारों ओर । गिड = गला ।  
 सँहर ... पी = मानो वे दे ने वालों के गले में प्रेम की मोकल रीत  
 प ना ... फ-चार = फटे में फँसाने वाले । परा सीन गिड  
 फॉ = सस और गले में दूरों को फँसाने के लिए फटे ...  
 अस्ता दुरी = ... कुलों के नाम उस्तान के पीछे दिखे हुए हैं ।

... केस के बंद = केस के बंधन में उलझे हुए हैं ।

उगाह = उपर । मंदूर ... नार्ही = जिसमें प्रभा मिनदूर नहीं भरा  
 गया है । उगाह विवाहिता होने का सूचक है ।

मि ... क या = बिना सिद्ध के भाव दीपक के समान क्षतनी  
 प्रकाशना ... वह रात में भी उज्ज्वल पथ पर देनी है ।

कदन रे ... परगमी = माँग ऐसी मालूम होती थी मानो कलूरी  
 न-र ... हो आर मानो यादलों में विजली का प्रकाश हुआ हो ।  
 धूमनी = माना विगेष समय ( वर्षाकाल ) के आकाश की  
 सूर्य-किरण ... समय की किरण में सुनहलापन अधिक होता है ।



होते हैं उसी प्रकार ईश्वर दूसरों को मिलाने में तृप्त रहता है। जियना = जीवना। आसहर = आसधर, आशा रखने वाले। कहीं कहीं इस प्रकार लिखा है। 'मरहि आस ताकरि हर मोना। हर एक को प्रत्येक आशा पर उनकी आशा है।

मरहि निरागा = मर्यादा आशा रखने वालों को उनकी आशा नहीं है, किन्तु वह न किसी में आशा रखता है, न निराग होता है।

उ दुग = दीन्ह = उसने अपने दोनों हाथों को ऐसा दनाया है कि उनसे युग युगान्तर में देता चला आता है फिर भी उनका भाँटार घटा नहीं है और जो कुछ संसार में दूसरों द्वारा दिया हुआ दिनाई पड़ता है वह सब उसी का दिया हुआ है। छाज = गोभा देने है।

छरहि पछत = पादा = जिसके छत्र हैं, अर्थात् जो राजा है उसे छत्रहीन प्रार्थना से दना देता है और जो छत्रहीन है उसको राजा बना देता है। कोई दूसरा उसकी दारादारी नहीं कर सकता है।

विशेष — छत्र गजा होने का निशान है।

टाह = गिरा देता है। चोटहि जंग = चौड़ी को हाथी की दारादारी करने योग्य बना देता है। निन्हि = तब को।

ताक = होई = उसका बिना कंठ नहीं बनना और वह ऐसा बात करता है जो और किसी के विचार में न आई हो।

साग = दनाया। मरहि = मरि।

मये कर = समार में सब वस्तु और नाशवान है किन्तु वह स्थिर और अचल बना रहता है जिसके ऐसा मान है अर्थात् उसी निम्न की बताई है। वह एक के प्रभाव है एक का विनाशक है और फिर चाहे तो उसी को दनात है। अलखर = अलखर, अलग्न = बरा रहित।

सो = मे। वरना = विना दान के मर्ना दान की तरह देता हुआ भी हो सकता है। इस पद में दान दान का वह अर्थ होता कि सब उसमें रस्मी की तरह दान होता है और वह सब में देता हुआ है अर्थात्

लिलार = मस्तक । श्रोती = उतनी ।

टिपाई = दीप्त होता है । महस ..... जाई = महस करणों वाला प्रकाशमान सूर्य उसके द्वितीया के चन्द्रमा जैसा माथा देग कर शरन के मारे टिप जाना है । सत्वरि = बराबर । मयंकू = माँग । चाँड कलंकी वह निष्कलकू = चन्द्रमा कलंक वाला है पर वह निष्कलंक है ( व्यतिरेक और प्रतीप अलंकार ) हासा = ग्रस लेता है ।

दुडज ..... दीठा = द्विज के सिंहासन पर मानो ध्रुवका नज्म बैठा हो । कनक पार ..... साजा = टीका ऐसा मालूम होता था मानो सोने के सिंहासन पर गव शृङ्गार और शस्त्रों से सजा हुआ राजा बैठा हो ।

ओहि .. मंजोऊ = उसके सामने जो कोटं तुलना में खड़ा जावे वह स्थिर नहीं रह सकता । जायड ही ऐसी सुन्दर सामग्री का संयोग हो सकता हो । कहीं कुछ सामग्री कभी होता है और कहीं कुछ कभी रहती है पर यहाँ पर संयोग-वश सब उत्तम सामग्री उपस्थित हो गई है । अथवा उस रूपवती को देखकर कोई विचलित हुये बिना न रह सका देखें किसकी ऐसा संयोग उपस्थित हो जो उसे पा सके ।

खरग = खड्ग ( नाक ) धनुः = धनुष, ( भोंह ) चक्र = श्राव की पुतली ( चक्र ) दान दुइ = ( कटाक्ष ) हाट = हने = मारे ।

खरग कुशौव = नासिका रूपी खड्ग, भोंह रूपी धनुष, श्राव की पुतली रूपी चक्र और कटाक्ष रूपी दो बरणों का, जिनका नाम जग के भागने वाले है, वर्णन सुन कर राजा मूर्च्छित हो गया और कहने लगा कि मुझे बुरी जगह अर्थात् मर्मस्थान में मारा है ।

जो महु ..... बाना = जो सामने देगता है उनको काली भोंहों के धनुष कटाक्ष रूपी-बाण मारते हैं ।

हर्न धुनं गढे = उन भोंहों पर चढ़े हुए कटाक्ष-रूपी-बाण देखने वालों को मारते हैं और धुन टालते हैं । काल ने यह कैसे हथियार गढे

हैं अथवा जिन हत्यारे काल ने उनको बनाया है अथवा किसने इन हत्यारे हथियारों गढ़ा है । नैन राँक = सुन्दर और तिरछे नेत्र ।

मानमरोवर ..... दोऊ = दोनों नेत्र अपनी सुन्दरता के कारण मान-सरोवर के लालने अथवा मनरूपी मानमरोवर में उथल-पुथल मचा देते हैं ।

राने ..... अपमर्वा = नेत्र-रूपी-लाल-कमलों में ( नेत्रों की लाली सुन्दरता की प्रतीक होती है ) छाँट की पुतली रूपी कमल भ्रमण करते हैं वे नम्र होकर ( लाल शराब के रंग में धूमते हैं फिर नम्र क्यों न हो ? ) घूमते हैं और ऐसे नलूम होते हैं कि वे आगे निकल कर भागना ही चाहते हैं ।

उग्रहि . . . लागा = वे नेत्र घोटों की भाँति उग्रते हैं और वे अपनी चंचलता के कारण लगाम में नहीं मानते हैं उड़ल कर आकाश में लग जाना चाहते हैं । बिशगी ने भी कहा है —

“लाज लगान न मानी, नैना मो मन नाहि । ये सुँहजोर तुरंग लौ;  
ऐँचत हूँ बलि जाहि ॥”

जग . . . मादो = नेत्रों के चरने से मनार डामाडोल हो जाता है और पल भर में डेर के डेर प्रजार प्रशगा घट्ट लिखाँट उलट जाती हैं ।

मसुड . . . भूले = नेत्रों के हिलने पर मानो मसुड लहरें लेता है अथवा मानो खनन लहने के अथवा मानो मृग गन्ता भूल गये हों । नेत्रों के उड़ने पर यह तीनों उन्प्रेषणों की गई हैं ।

सुरर . . . ना = उनके नेत्र सुन्दर सरोवर की तरह हैं । उनमें लाख मशियाँ की लहरें उठती हैं । अर्थात् वे चरन हो रहे हैं और जो उनके निवट ( वा किनारे पर ) गगना हैं उनको वे नेत्र-रूपी-काले-भर्रे ऐसे मारने वाले काल-चक्र ( भेदक ) में घुमाने हैं ।

काल-भर्रे यहाँ पर रिन्द है । इसके दो अर्थ हैं वाले भर्रे और वाल चक्र ( भेदक ) बरनी = बलनी । इनि = ऐसी । घनी = तेज ।







रवि परभात .....जूड़ी = हथेली सुवन्न के सूर्य के समान अल्प है, किन्तु उसमें और सूर्य में इतना अन्तर है कि सूर्य तो गरम होता है - - लिए उसका स्पर्श सुखर नहीं होता किन्तु हथेली शीतल है और इसे लिए उसका स्पर्श सुखकर होता है ।

हिया .....चारु = हृदय अर्थात् वनस्थल थाल के समान है, ७५५ कुच सोने के लड्डुओं की भाँति हैं । वे ऐसे मालूम होते हैं मानो सुन सोने के कटोरे उठे हुए हों ।

वेधे . . . कचुकी = ऐसा मालूम होता है कि केतकी के कर्दों भौरों को वेध लिया है और वे चोलो को भी वेधना चाहते हैं ।

जोवन.....वागा = जीवन के बाण लगाम नहीं मानते रुकने नहीं हैं । यहाँ पर दो रूपक मिला दिए गए हैं इसी को इंग्लिश में CONNECTION OF METAPHORS कहते हैं ।

चाहे . . . लागा = प्रसन्न होकर वही उमंग के साथ हृदय में लगा चाहते हैं ।

उत्तंग . . . वारी उँचे उठे हुए नीचियों की रगवारी हो रही ( मुरझित है उनसे किसी ने हाथ नहीं लगाया है ) राजा के वारीचा ? कौन हस्यमत्ता है ? वारी गिनष्ट ह, वारी का अर्थ लटकी भी है । पर वारी र वा नी लटकी थी और एक दूसरे राजा के उपभोग के लिए की न त मुरझित थी । मुण = मर गए । भुँड = पृथ्वी । गए मरों हाथ = पड़ने लगे हुए चले गए ।

पृष्ठ २६

परन = परत नह । लावा = लेप । कु कुम = रोली, केशर । साम-काली । भुयगिनि = सर्पिणी । रोमावती = रोमराजि; शरीर पर छोटे-छोटे फल । नाभी . . . चली = ऐसा मालूम पड़ता था कि मरि नाभी के तिल से निरुत्त कर मुख की ओर चली । नरँग = नरग



होते हुए देख कर पीली हो गईं और निसिया कर अपने डंक से को छेदने लगी । नालखंड = कमल के डंठल ।

मानहुँ.....गए = कमर ऐसी मालूम होती है कि मानो कमल डंडी बीच में से दो टुक हो गई और उसके बीच के तार कम गये हों । कमल की डंडी जब तांडी जाती है तब उसमें से तार निकलते हैं । केलों के गामे को तोड़ने से भी उसमें से तार निकलते हैं ।

हिय .. तागा ? = हृदय की धड़कन में वा सोंम लेने सबह रूपी तागा हिलता है । पंग देत किन सहि सक लागा = पंग रगने किस प्रकार भार ( लागा ) सह सकती है । दूसरी प्रतियों में इस पाठ है 'पंग देत कन सहि सक लागा' अर्थात् पंग रगने में कितना ( ढर ) लगता है ।

नाभिकुण्ड.....गैर्भार = नाभिकुण्ड मलय समीर ( शरीर सुगन्धित वायु से ) ऐसा गहरा होकर चकर खाता है ( भवै ) जैसे समुद्र का भँवर ।

नीचड़ .. चीरु = स्त्री के शरीर में कमल की गंध है और वह पर लहरियादार चीर गोभा देता है ।

वरनि .. जोग = उसके अदृष्ट ( अभोग ) नज़ शिख सोन्दर्य वर्णन करने की में सामर्थ्य नहीं रहता है । समार में उसके योग्य चीज नही मिली जिससे उपमा २ ।

गाना .. आटे = न नां उसे लू ( मुरा के लहर ) लग गई विनोभार ( वि + नोभार = शरीर की नोभार रहित ) वेपुध ।

वृण्ड ::

भाँवरि = चकर । विन निन = छया-छया ।









वह सन में धोत प्रोत है। इस मत में मुसलमानी भाव कम है, हिन्दू-भाव अधिक है। आगे की पंक्ति में यह न बताना चाहिये कि

धरमी पापी = धर्म करने वाले हैं, पर पापी नहीं पहचानता है।

जना न कहूँ १२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००  
 और न किसी ने उसको उत्पन्न किया किन्तु जहाँ तक जो कुछ है उसी का किया हुआ है। ऊपर कहा कि उसने किसी को नहीं उत्पन्न किया है इसका अभिप्राय यह है कि उसको किसी के उत्पन्न करने का कष्ट नहीं करना पड़ा। सब उसकी इच्छा मात्र से हो गया। जैसे पिता पुत्र को उत्पन्न करता है उस प्रकार उसने किसी को उत्पन्न नहीं किया। इसी लिए आगे कह दिया कि जो कुछ है सब उसका किया हुआ है। कीन्ह = किया हुआ।

हुत ..... कोई = वह पहले था और अब भी वही है और फिर भविष्य में वही रहेगा और कोई नहीं रहेगा अर्थात् सब के नाश होने पर भी वह रहेगा। इसी लिए हिन्दू लोग उसे 'शेष' कहते हैं।

और ..... अंधा = उसके अतिरिक्त ससार में और जो कुछ है वह बावला और अन्धा है अर्थात् संसार के और सब लोग पागल और अज्ञानी हैं और दो चार दिन अपना काम करके अर्थात् संसार में रह कर नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

बड ..... अनेक (अनेक) = वह मालिक बड़ा गुण वाला है जो चाहता है उसे शीघ्र ही, बात की बात में, बिना किसी प्रयास के बना डालता है। वह ऐसे गुणियों को ( अर्थात् मनुष्यों को ) बनाता है जो अनेक गुणों को प्रकाशित करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वह स्वयंही गुणी नहीं है परन्तु जिनको वह बनाता है वे भी गुणवान् होते हैं। यही परमात्मा का महत्त्व है कि वह ऐसे गुणवान् मनुष्यों को बनाता है।

पृष्ठ ३—इस पृष्ठ से मुहम्मद साहब की स्तुति प्रारम्भ होती है।



गग गति लेई = गगा में जाकर गति (सद्गति) को प्राप्त करता है।

मैं ... परावा = घरदार की मैं क्यों फिक्र करूँ, मैंने उसे कहाँ पाया, एक घड़ी भर को वह अपना है और मर जाने पर (अथवा राजभ्रष्ट होने पर) पराया हो जाता है।

हैं ... जाहु = मैं तो राहगीर और पत्नी हूँ। जिस वन में मेरा ब्याह होगा (विधाम मिलेगा) उसी वन को मैं अपना खेल खेल करता हूँ। तुम लोग अपने-अपने घर जाओ और अपना काम देखो। ननुप रमाना के पान से थाया है वही उसको विधान मिलेगा, यह भाव।

आन सोडिया फेरी = नज़ीरों ने (सोडिया = सोटे बदर = नज़ीर) आन की आज्ञा (आन) को सब लोगों ने पहुँचाया। तुरय = तुरग = घोड़ा। तरग कै डीठी = योगियों की भोति आकाश पर दृष्टि लगाये हुए। माया = माता।

माथे ... पाया = तुम्हारे मस्तक पर हमेशा छत्र रहा है और पैर महासन पर रहा है, तुम क्यों जमीन पर रहो और योग साधो?

लच्छि पियारी = लक्ष्मी के समान प्यारी स्त्रियों को। लिलसहु = लोभो। जिनि = मन, नहीं। भरन = भरने हुए, खाने हुए। दर = दरवाज़ा। परिग्रह = परिग्रह = नाक-चाकर साज-सामान आदि। प्रजियार = प्रकाशित होने हैं अच्छे लगते हैं।

बैठ ... अथियर = पढ़ें और आनन्द करें और यहाँ पर अथर करके न चले जायें।

जो ... नरा = जो दुःख में। निचान = निदर = अन्न में। गरीर नाश होगा ही तो व्यर्थ हम गरीर-रूपी-निंदी के दर को पालना हुआ कोई क्यों जान दे।

गोपीचन्द = एक राजा जो योगी हो गये थे।



हैं। योगी को दृष्टि स्थिर करनी पड़ती है। वह भी ध्याने को देखा  
 और उसको मार्ग में बहुत सी घाटियाँ ( कवन अरु कामिनी दुर्गम  
 यो योग ) और कठिनाइयाँ पड़ती हैं। अद्वैती की पुस्तक (Pilgrims  
 ) में भी इसी प्रकार की प्राध्यात्मिक यात्रा का वर्णन है।

पोंरी = पावड़ी = चटाई । अकरोरी = ककड़ी । बीन्क वन = निजंन  
 वन । दृष्ट = दीप = देवें काँनना रत्ना निहल दीर को जाना है।

नाट—प्राध्यात्मिक मार्ग के यात्री को भी इसी प्रकार का संदेह  
 हुआ करता है। फिर मुद्रा ( गुरु ) आगे होकर उसे सार्थ मार्ग  
 बनलगाते हैं।

नायक = साक्षात् = दृष्टि प्राप्त बनाना चाहता है तो । गजरतो =  
 कलिंगदेश का राजा । पहुनाई = आतिथ्य । इन मुद्रा एक, नाय  
 गिरा = इन तुम बाल्य में एक ही छे देखने में अज्ञान-चलन हैं ।

रोहित = जहाज । निजु = काम तोर पर । अरु = सेना । जो ...  
 वर = यदि जिन्हा रहा तो जोहूँगा और यदि नर नर तो उसी के दरवाजे  
 पर नरूँगा ।

नांर पर मो ग = प्रापसी प्राप्त ( मो ग ) निर पर है । मोना =  
 कभी । नर गटे = नर जाने हुए । मोनि = मोना कभी नरान  
 ना नरान गरी दे सकती दालिये नये नरान बनर ये देना हूँ ।

पूव = पूर्व = पूर्व में ही प्रत्यक्ष मोना देव पर उठे । उन्ही पूव  
 मा हाता प्रार्थन हो मो देता नये अर्पण हो नये । उन्ही नमुष्य न  
 वन नर नये उन्ही पूव मोना ना लेना पर लके । निर ग = निरान ।  
 लकी लीक = लकी । लीना = लकी नरान नरान ।

गजनि = गज = गजानन । गजानन = गजानन । गजानन = गजानन ।  
 गजानन = गजानन । गजानन = गजानन । गजानन = गजानन ।  
 गजानन = गजानन । गजानन = गजानन । गजानन = गजानन ।



दस ... रोम = धर्म, कर्म और नियम ने चलने वाले दस आद-  
मों में कोई एक विरला ही भगवान तक पहुँचना है। जहाज द्वारा जल  
मुद्र से पार हो जाये तभी कुशल होन सम्भूतता चाहिए। मार्ग में  
हुत से विघ्न आ सकते हैं। इस दोहे के ऊपर की पंक्ति ने गीता के  
संश्लिष्ट रत्नोक्त की झलक पार्स जाती है।

मनुष्याणां मर्त्येषु कश्चिद्यताते निद्वये ।

यत्तामपि सिद्धानां कश्चिन्या वेत्ति तत्र न ॥

अर्थात् मर्त्या मनुष्यों में कोई विरला सिद्धि प्राप्त करने के लिए  
कोशिश करता है और कोशिश करने वालों में भी कोई ही मुक्तो-  
त्पत्त होता है।

सायर = सागर। सत = सत्य। जो जिउ सत कायर पुनि सुरा =  
इस में सत्य होने से कायर भी शूर हो जाता है। बोहिन कुरी = जहाज।  
लाने पारु = पार लगाता है। चढ़ पतारा = उतर  
गलनाम तक ऊँची जाती है और फिर पाताल तक नीची चली जाती  
। तरेहोहे = नाँच चले जान ॥ उपरार्त = उपर आ जाते हैं।  
हि कौधा = जिस सत्य का महारा लक्ष पराउ अध पर  
ले लिया जाता है।

॥ १६ ॥

असि के स्थान में 'अस' पाठ हो तो अच्छा है, क्योंकि एक शब्द कह कर असि कहने की आवश्यकता नहीं। दीन्ह.....बीरा = बीरा का शब्दार्थ 'पान' है।

ठाकुर ..... होई = जिसका मालिक बहादुर होता है वह बहादुर होती है।

जाँ ..... कौंधा = जब तक सती अपना मन दृढ़ नहीं कर लेती तब तक नरार लोग उसकी पालकी नहीं उठाते।

कान = 'कण' पतवार। समुद्र = समुद्र, इसका यह भी अर्थ (स + मुद्र) मोड़ सहित। यह अर्थ यहाँ पर ठीक बैठता है।

कान ..... होई = राजा के प्रोत्सहन देने पर सबने प्रसन्न होकर पतवार हाथ में ले लिये अथवा सब लोग पतवार लेकर समुद्र प्रांगे चले और राजा के जहाज के पीछे हों लिये। कोई किसी दूसरे नहीं सम्मानता है सब अपनी-अपनी फिक्र करने हैं।

तुमार = तुम्हारे देश के पोंडे। गरियार = मुस्त।

कुण्ड ३५—

गरिया = कतका। गरिया = नारी। कोला = कोला। भीर = भीर।

कोड़े = कोड़े मरद नहीं करना है। अगमन देश = अगमन देश। कोड़ा = मरद। परना = पत्नी। हुन = हुन।

गजा की चाल अग टूटा। कोड़ा = मरद। परना = पत्नी। हुन = हुन।

कोड़े = कोड़े मरद नहीं करना है। अगमन देश = अगमन देश। कोड़ा = मरद। परना = पत्नी। हुन = हुन।

कोड़े = कोड़े मरद नहीं करना है। अगमन देश = अगमन देश। कोड़ा = मरद। परना = पत्नी। हुन = हुन।



शक्ति . . . खोले = यह है ! यह है ! कह कर सब नाथी पुकारने लगे । जो लोग अभी तक अन्धे के समान थे परमात्मा ने उनके नेत्र खोल दिये । अध्यात्मिक पक्ष में इसका अर्थ यह है कि साधक-जीवन में ऐसा समय आता है जब कि उनके आन्तरिक नेत्र खुल जाते हैं । और उससे सब बातें स्पष्ट रूप में दिखलाई देने लगती हैं और उसको परमात्मा ने पूर्ण विग्वह आ जाना है ।

फवेल . . . लेही = मानसरोवर में आकर देखा कि कमल खिलते हुए हैं रहे हैं और भारे उनके ( अर्थात् अपने ) दाँतों द्वारा रस ले रहे हैं ।

नोट—ऐसा मालूम होता है कि बीच में कुछ रह गया है और यह वर्णन पद्मिनी स्त्रियों का है कि वे कमल की भाँति हैंसती हैं और अन्तर दाँतों से रस लेते थे ।

शुँ के स्थान में और प्रतियों में दिन पाठ है वह अधिक ठीक प्रतीत होता है । जुडन = जुड़ा हुआ । कचन मेर = सोने का चुमेर । जग आव = सत्तार में आ रही थी अथवा जग रही थी ।

विष्णु आदी = विष्णु आदि । हरिचन्द्र दैन सतवादी = हरिचन्द्र । सतवादी = सत्यवादी ( वन ) का बोलने वाला । देन का अर्थ राजा वेगु भी हो सकता है ।

जीत कैलसु = तर प्रसन्न पृथ्वी और आकाश का जल किया और कैलास के समान प्रकाश वाला निहल्लस दिग्दृष्ट पदम लला रन्ना = स्त्री ।

भौर नासा = जल नदी पद्मवर्ण १ किन्तु जल सफेद नहीं अर्थात् उसके जो दर्प का उपलब्ध करने वाला वह न सफेद = जल वही परन्दा भी पर नहीं मर सक्त

पाविल पद = शुरु पद । मिरी-रचन = यन्त्रन रचन ।

पृष्ठ ३८—

बारू = डार । उवरिहि = खुलते हैं ।

नोट = वसन्त पंचमी को लोग महादेव जी की पूजा करते हैं ।  
देव जी ने राम को जलाया था वसन्त ऋतु में कामदेव के  
तथा ग्रावानों से बचने के लिए लोग महादेव जी की शरण में

मिनि = बहाने से । दंड मंरावा = दण्ड का मिलान । पूरे =  
करै । पूरे = पूर्ण करै । यमक अलंकार ।

पृष्ठ ३९

## प्रेम खंड

जोग-सयोग = स्तनमेन के योग के प्रभाव से ।

कैंचाच = कैंच की फली जिसके स्पर्श से शरीर में सुखी  
लगती है । चंदन चौरू = चंदन के लेप में भोगा हुआ कपड़ा । गंभीर =  
गहरा । कल्प = कल्प पुरुष महेश्वर चतुर्भुजी का समय । तिल.....गाई =  
पुरुष चण पुरुष युग के समान कठिन मान्य होता था ।

सवि शयन = चन्द्रमा की सवारी = मृग । श्रीनाई कुठ प्राता या  
गई श्रीन श्रीनाई । पचावनी इस ख्याल से बीन हाथ में ले लेते  
श्री हि गायक ( मृग ) बीन बजाने से कुछ मन बहने और रात से  
जाग किन्तु दुर्भाग्य से इसका उल्टा असर होता था । इसकी बीन मृग  
का चन्द्रमा का सवारी का मृग इस ओर आकर्षित हो जाता था प्रा  
गत के प्रातः से रात तक जाता था । इस कारण चन्द्रमा को भी  
का - का जाता जाता था और रात बड़ी नीतनी थी ।

गति गति । रात थी ( रात ) चन्द्रदेव के रहने की रात  
प्रातः १७३ ० दिवसिद का दिवस - बीननी थी ( उरई लाना = रोके  
हो ) दिवसिद रात = दिवस का काल

कहें \* परेषा = वह रत्न लेने वाला भौरा कहों है कि वह मयूत की तरह कला खाता हुआ उसी के योगन में प्रामर गिर पड़े ।

नो \* \* लीप = वह स्त्री जिह ने पतंगे के नमान होंगई और अपने प्रेम मात्र रूपी दीपक ने जलना चाहती है । उसका प्रेमी भूढ़ी ( लखेरी ) बन कर नहीं आते जो भूढ़ी प्रार पतंगे की भोति उसे अपने रूप में मिलाएँ करने में क्या । जो गुंसा नहीं हो रहा है तब चन्दन के छेप लाने ? हेरी = दिगई पटता है ।

चतुर दिना = चारों दिना । नति = मालती । यही पर रतनमेन की प्रेर नकेन है । कमल \* पाये = उसी बन में पद्मावती रूपी कमल की रतनमेन रूपी भौरा मिलेगा ।

अग \* \* \* पार्षी = उनके शरीर का अङ्ग-प्रग कमल की भोति था । उसका हृदय पीला होकर परस्पर प्रेम की पीड़ा का लोतक बन रहा था ।

चहे \* \* प्रवास = वह कमल के शरीर वाली पद्मावती रतन सेव रूपी रवि का दर्शन करना चाहती है । रवि के उदय होने से उत्पन्न प्रसन्नता हुई । अब वह नरे के ललान द्वारा उत्पन्न वरती रवि से प्रसन्न की ओर ध्यान लगाकर देखती है । जिह न लोग प्राय आकाश को ओर देखते हैं । प्राय = परिवर्तित । परि = तब । राग = लज्जा । नेतर वरन = पीला रंग । भोति अम पीला । पन = उन वरों पर हवा का भी लहर नहीं है और वही नरा ना स्थाय्य है । पन = पन के नरे से लिपना करिये का फिर हुआ था । अब पन के वर को है । पन = वर भोति की लहरों से भरा रहा । यह प्रवास = प्रवास है ।

भूति राग = भूति हुई है । लीप = लीप है । नरे नाने उमे लिह दिगई है । नरे नाने ।

हु ४०

भाव = वरती = पद्मावती कमल की लहरों में लिह है । पन

पुरुष निरमरा = निर्मल मनुष्य, तात्पर्य है हज़रत मुहम्मद से ।

पूनी करा = पूर्णिमा के चाँद की कला (की भाँति पूर्ण प्रकाश युक्त) ।

प्रथम .... उपराज = ईश्वर ने मुहम्मद साहब को प्रथम ज्योति

के रूप में बनाया ( मुसलमानों के यहाँ ईश्वर को प्रकाशमय माना है )

और सारे संसार को उस से प्रीति करने के लिए अथवा उसकी प्रसन्नता के लिए बनाया । इसमें मुहम्मद साहब को इतना महत्व दिया है कि सारे संसारको उनके लिए बनाया है, ऐसा कहा गया है । मिहिर = सृष्टि ।

लेसि = जला कर । मारग चीन्हा = सन्मार्ग को पहचाना ।

दीपक ' लीन्हा = ईश्वर ने मुहम्मद साहब को संसार के लिए दीपक के रूप में प्रकाशित करके दिया अर्थात् उनको संसार का पथ-प्रदर्शक बनाया । उनके कारण संसार ने सन्मार्ग को पहचाना और मल-रहित हो गया ( मुसलमानों का विश्वास है कि मुहम्मद साहब अपने अनुयायियों के गुनाहों को माफ़ करावेंगे ) ।

उजारा = उजियारा, प्रकाशमान और प्रकाश देने वाला ।

पाटन = मुहम्मद साहब का बतलाया हुआ पाट, बलमा अथवा उनकी दी हुई शिक्षा । बलमा यह है—“ला इलाहिल्लिहाह, मुहम्मदुररसूलिहाह ।”

दूसरे निगे = परमात्मा ने बलमा में उनको (मुहम्मद साहब) को अपने पश्चात् दूसरा स्थान दिया । जिन्होंने उनकी शिक्षा ली और बलमा पढ़ा वे लोग धर्मी हो गये । लाइलाहल्लिल्लाह मुहम्मदुररसूलिल्लाह का अर्थ है कि अल्लाह के सिवाय और कोई दूसरा नहीं है, मुहम्मद मुझ का रसूल है ।

इई = ईश्वर । बर्न'ट = रसूल दूत । 'रसूल पैगम्बर जान बर्न'ट ।  
- 'खालिफ़दारी ।

इह ' लीन्हा = जिन्होंने उसका नाम लिया वह इन लोहर और परलोक दोनों में तर गया, उसने भय और भय दोनों की प्राप्ति की ।

खालेता तो अचढ़ा था अथवा मैं लडकी ही बनी रहती अर्थात् मुन  
यौवनावस्था की पीडा न भुगतनी पडती ।

जोवन.....मैं मतू = मैंने सुना था कि जोवन बसत के मन्त्र  
है किन्तु उस वन में विरह रूपी मन्त्र हाथी धुमपडा है ।

अव . . . साम्बा = अव योवन रूपी यगीचे की कौन रत्ना कंज  
विरह रूपी हाथी ( कुंजर ) उसकी गाथाओं को तोड रहा है ।

समुद्र समानी = समुद्र की भाँति गम्भीर और सय नी । मरी =  
बराबरी । समुद्रडोल = अपना धर्म छोडकर नदी.....समाई = चुँ  
छोटी नदियाँ तो समुद्र की शरण में जाती है । समुद्र अपनी मर्मा  
नहीं छोडता । समुद्र अपनी मर्यादा छोड देतो वह कहाँ जावे ? ( नदी  
बढती हैं तो समुद्र में चली जानी हैं ) बडे आदमी जब धैर्य धैर्य  
देगे तब छोटे आदमी कहाँ जावेंगे । कंवल करी = कमल की क  
अर्थात् अभी वालिका ही है । आइहि.....जोरा = जो तेरे जोड के लि  
भौरा ईश्वर ने नियत कर रक्खा है वह समय पर आवेगा ( कला प  
भौरा नहीं आता फूल खिलने पर आपसे आप आजाता है । जब  
नीर = जिस प्रकार समुद्र के बीच में बडवाग्नि को सहती हुई सीप स्वा  
बूँद की प्रतीक्षा करती है सो तूभी जब तक प्रियतम न मिले तब तक  
को साध अर्थात् सहन करे ।

देह . . घीऊ = हे धाय यह यौवन जीव को ऐसा जला रहा  
मानो अग्नि में घी पडा हो ।

कवत = प्रारा । दाधा = जलन । अमेंभारा = सँभाल से बाहर,  
सँभला न जा सके ।

भौरा मारा = पानी के अमर ने जीव को चक्कर में डाल  
लहरों से मारा । उपना = उपना । बाँध मत्त = मत्त अर्थात् धैर्य धैर्य  
मन . . . भारी = मन को अधिक चञ्चल न बना । जो . . . . .आमी  
जो हृदय में सत्य है तो अग्नि शीतल हो जावेगी ।



मालेता तो अन्धा या अथवा मैं लक्ष्मी ही बनी रहती अर्थात्  
यौवनावस्था की पीड़ा न भुगवनी पड़ती ।

जोवन ... मैं मनु = मैंने मुना था कि जोवन बचन के  
हैं किन्तु उस वन में विरह रूपी मन्म हाथी घुसपड़ा है ।

अथ ... साव्या = अथ यौवन रूपी बर्गाने की कोन रत्ना  
विरह रूपी हाथी ( कुजर ) उमकी जासाओं को तोड़ रहा है ।

समुद्र मनानी = समुद्र की भाँति गम्भीर और सय नी । मरि  
बराबरी । समुद्र डोल = अपना धर्म छोड़कर नदी ... समाप्त =  
छोटी नदियाँ तो समुद्र की शरण में जाती हैं । समुद्र अपनी स्था  
नहीं छोड़ता । समुद्र अपनी मर्यादा छोड़ देतो वह कहाँ जावे ? ( नदि  
बढ़ती हैं तो समुद्र में चली जाती हैं ) बड़े आदमी जब धैर्य वृ  
देने तब छोटे आदमी कहाँ जावेंगे । कंवल करी = कमल की क  
अर्थात् अभी बालिका ही है । आइहि ... जोरा = जो तेरे जोड़ के बि  
भौरा ईश्वर ने नियत कर रक्खा है वह समय पर आवेगा ( कर्ता प  
भौरा नहीं आता फूल खिलने पर आपसे आप आजाता है । जय ...  
नीर = जिस प्रकार समुद्र के बीच में बड़वाग्नि को सहती हुई सीप स्वादि  
बूँद की प्रतीक्षा करती है सो तूभी जब तक प्रियतम न मिले तब तक प  
को साध अर्थात् सहन करे ।

देह ... घीड = हे धाय यह यौवन जीव को ऐसा जला रहा है  
मानो अग्नि में घी पड़ा हो ।

करवत = प्रारा । दाधा = जलन । असँभारा = सँभाल से बाहर, जे  
सँभला न जा सके ।

भौरा ... माग = पानी के अमर ने जीव को चक्र में डाल क  
लहरों से मारा । उपना = उपजा । बाँध सत्त = मृत्यु अर्थात् धैर्य धर ।  
मन ... भारी = मन को अधिक चञ्चल न बना । जौ ... आभी =  
हृदय में सत्य है तो अग्नि शीतल हो जावेगी ।





अमारी = मेल । चांचरि = मर्ग । सेंदुर-वेह = निन्दूर की राख ।  
रिड = मय ।

पृष्ठ १५—

तुनानी = इकट्ठी हो कर पहुँच गईं । पैनारा = प्रवेग । नहका =  
अनियेक किया । मरी = मरी ।

निरगुण = गुण रहित, अजानी । गुन .... देवा = तुन सदके  
हो गुणी निगुणी का न्याय नहीं करने हो । मेरवहु = निलावो । क  
जाति हों म नि = मैं कलम चढ़ने की मदन मना जाती हूँ । नि  
खिप प्रायः महादेव पार्वती की ही शरणा की जाती है । मीता ई  
गौरि की पूजा करने गई थी । कौतुक = तमाशा, अचाने की क  
संत = तन । नि रे = निकले । अनु ... योग = मानो गुट देकर  
मे मर को पागत कर देना है । प्राय लोग कुछ मिला कर बटु  
करने हैं । गुट से यहाँ पर रूप-मायुर्य की ओर मकेत है । दमपूतन =  
मन योगिया ने वर्त्म लक्षणों में दमपूत लक्षण मन्त्र कहा है । पिंगला = श  
पिंगला न ही निसे यागिय को काम पढत है । पिंगला हेतु = नि  
नाडी का विद्व करने । गार्पाचद की म्या का नाम पिंगला नहीं था ।

करी अरन = कदली बन । मुद्रा = करने की रीति । अवस्तु =  
मा । म यानों । व र = चक्र के स्थान में कबोर गड चाहिए । क  
म न छत्र क । कटरा भी मद्र ( गगय ) से भरा जा सकता है ।

मट्टे = मामन । रिमि = दृष्ट ।

गंगा ... द हा = गंगा न परमावर्ती से दृष्टि मिलाई है  
अप । ... म परवर्ग का श्रिता का प्रेम का मद्र लक्ष्य है  
दा गया ।

पृष्ठ १६

लक्ष ... शाल = जिसका प्रेम का मद्र चढ़ता है वह उसी



काली = कल । आली = मयी । रवि (सांकेतिक अर्थ) ।  
 रावनगद = लंका । मनो राम ने लंका पर चढ़ाई की है ।  
 निवेच = यहाँ पर अनहोनी से मालव है ।

अरजु.....बान—वेधा = अर्जुन के वाण से राहु मङ्गलीवेध  
 द्रोपदी के स्वयंवर में धर के लिये यह पीछा रानी गई थी कि वे  
 चलते हुए चक्र के बीच में होकर नेल के पात्र में मङ्गली की पराई  
 कर उसका वेध करे वही द्रोपदी को यह समेगा । अर्जुन ने उनके  
 का द्रोपदी को प्राम किया और अपनी माता की आज्ञा के अनुसार  
 का पाँचों भाइयों से विवाह कर दिया ।

शृष्ठ ४७—

लंक = लका । विधंसी बारि = हनुमान ने बाटिका भा बिज  
 दिया । वर = द्वार, मन्दिर । परसन = प्रसन्न । तुम्हरानी = तुम  
 प्रसन्न हुई ।

दैव .....आनी = देवता ने आका मिल दिया है । पच्छिउँ = पश्चिमी  
 खण्ड । रामा = स्त्री । लागि तुम्ह रमा = तुम स्त्री के लि  
 बुगयिला = पूर्वान्म का । रस = आनन्द । कै = करके । तब असत  
 भई = तब उसको होग आया कि वमन्त होगया और पद्मवती  
 गई । वमन्त की खबर होना सुहावरा भी है ।

ना .. सुहाई = न वह ( पद्मावती ) है और न उन्का सुहा  
 रूप है । हेराइ = खो गई ।

केइ... ताग = इन वपते हुए वसन्त की किन्ने उताप  
 रंग में भग कर दिया ? वह चाँद स्वयं चला गया और तारण के  
 अस्त (अथवा) हो गया । दया = दात्राग्नि । दुहेला = दुखित । हुँत =  
 आँक = अक्षर । फजरे = प्रज्वलित हो रहे हैं ।



अब.....सेली = अब ऐसी मुयोग क्यों है जो उम्मीद  
 डालूँ। जब मैं स्वयं जल कर नाक हो जाऊँ तभी मैं प्राणों के  
 अधिकारी होऊँगा। अपनी ही ग़ारु मर पर आ लने का विषय है।

कित = क्यों। गयउ .... काजू = राज्य का आनन्द भी गय  
 कार्य भी सिद्ध न हुआ दुविधा में दोनों गय माया मिली न  
 सर = चिता। घालिकै = डालकर। भयमेत = भस्म।

परवन ..... रग्यारी = मि लक्ष्मी के उम्मी परत में लक्ष्मी के  
 करते थे।

नोट—हनुमानजी ज़मर माने जाते हैं।

देह उठि होंका = वहाँ से उठकर गरत लगाते हैं। अथवा  
 करते हैं।

पूरी पुस्तक में भाव यह कि हनुमानजी जिन्होंने लंका जलाई  
 और खुद नहीं जले थे वे रत्नमेन की वियोगाग्नि से जलने लगे  
 उन्होंने अपने वचने के लिए शिवजी से करियाद भी थी।

रावन लंका हौं उही, वह दाँदाहैं आव।

गए पहार सब आँटि कै को रावे गहि पाव ॥

कुस्ति = कोढ़ी। हन्ती कर छाला = हाथी की गाल। महें  
 मरे हुए हाथी का आधा शरीर लिए रहते हैं।

पृष्ठ ४६

चँवर = चीर। घट = घटा। धने = स्त्री। अवतहि = आते हैं।

न ..... लागी = तुम भस्म मन हो तुमको उम्मी की क्रम है नि  
 कारण जलते हो। की ..... वियोग = क्या तुम अपने तप को पूरा करने  
 में सफल नहीं हुए या तुम्हारा योग भ्रष्ट होगया। जीते जी बिना नै  
 था! तुम अपना जीवन क्यों दे-दे हो? तुम अपने दुख ( वियोग ) के  
 मारा हाल कहो। बिलमावा = भरम या भुलावे में डाला। निस्तार =  
 निस्तार हो जावे। मर जाने से सब मामला एक ही चार तय हो जावे।



गुन .... मोख = कयामत ( प्रलय ) के पश्चात् जब सब आत्माओं के पाप-पुण्य का हिसाब होगा । मुहम्मद साहब अपनी उम्मत ( सम्प्रदाय के लोग ) के आगे होकर उनकी सिफारिश करके अपने अनुयायियों की मोक्ष करावेंगे । मुसलमानों का विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् रुहें पड़ी रहनी हैं ( वे लोग आवागमन नहीं मानते ) और कयामत के रोज़ वे जगती हैं और उसी रोज़ उन के शुभाशुभ कर्मों का हिसाब होता है । उस हिसाब के समय मुहम्मद साहब सब के आगे खड़े होकर बतलाते जाते हैं कि कौन बर्ख़ाने के योग्य है और कौन नहीं ।

विशेष—पाँचवे दोहे के आगे बादशाह की स्तुति है ।

सेरसाह = शेरशाह सूरी, जिसने हुमाँऊँ को परास्त कर राज्य अपने अधीन किया था ।

चारिउ . . भानू = चारों खण्ड में अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन में सूर्य की भाँति उसका प्रताप ( तेज ) फैला हुआ है । जस = जैसे । तपै = प्रताप विस्तार कर रहा है । छात औ पाटा = छत्र और मिहामन ।

ओई . . लिलाट = उसी को छत्र और मिहामन शोभा देते थे अर्थात् वही उनके योग्य था । अन्य राजा गण उसके आगे ज़मीन पर माथा टेकते थे ।

जाति सूर और रॉडे सूर = वह सूर वंश का था ( इसीलिए वह सूरी कहलाता था ) और तलवार का भी सूर ( बहादुर ) था ।

पूरा = भरा हुआ । सब गुन पूरा = सभी गुणों से युक्त ।

नवाए = फुलाये, अपने अधीन किये । बड़ = उसने । नई = फुल गई ।

नवौगण्ड = जम्बूद्वीप के नौखण्ड । वे इस प्रकार कहे गये हैं । भारत-वर्ष, किन्नरवर्ष, हरिवर्ष, कुरुवर्ष, हिरण्यवर्ष, रम्यकवर्ष, भद्राश्ववर्ष, केतुमालवर्ष, और इलावर्ष ।

तहँ . . कीन्हा = उसने अपनी तलवार के जोर से उतना सब देश

करते हैं वह सफलता नहीं पाते हैं। मित्र लोगों की दृष्टि होती उनकी दृष्टि मित्र के समान आकाश में रहती है, दूसरे से बग में हो सकेंगे, बिना दल के कुछ भी काम सिद्ध नहीं है।  
 गुदर = राज-द्वार। दर = दल = दौलत। नैन = नय, अमृन्ध = अपार। गाड़ = संकट। गहुर = न्यायी। नौह = न  
 पृष्ठ ५७

रन भागन = महानाग्न का युद्ध। सत...रनि = सत-  
 आचार पर इन दृष्टि रहेंगे अर्थात् इनाग वाल बँध नहीं होगा।  
 चेला निध होइ—चेला को भी मित्र की नौति को बंध देना चाहिए। बार = द्वार। कोइ = कोय। एहिमेंत = इससे, न पानिहि...नरा = नदग पानी का क्या बिगाड़ सकता है। नद... काटे भी तो पानी फिर जैसा का तैसा हो जाता है। रावे = रा...  
 छकि धरे = घेर कर पकड़ लिया। नैलागीवा = गर्दन में दार विमनौ = दुःख।

नोट—रनमेन ने जो अपने माथियों को उपदेश दिना ग्रहिसानक युद्ध का है।

नै...वेना = लुन्हे गर्दन में फटा पड़ने का अफसोस नहीं है मैंने जिस राज प्रेम-भाग में पर दिया था उसी दिन गले में डाल ली थी।

परगट... जावे = उहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है और उहाँ तक जाती है नय उगत प्रियतन का नाम मनाय। हुआ है, जियर... उसी को देवता हैं ऐसा कोटि ध्यान न्हा उहाँ में जा नई। नय नय जग जानी।

जव...दीन्हा = जब तक गुरु को नहीं पहचाना तब तक और मेरे बीच में मैकड़ों पड़े थे। मनुष्य जब तक ईश्वर को नहीं





हीरामन तोते को बुलाती है। विग्रह-रूपी-ग्रहण मानो उसके जंतु हरे ही लेता है।

नोट—यह उन्माद की सौ अवस्था है। पूर्वानुगण (मिलन-विरह में) दशा दशाणें मानी गई हैं। उनमें उन्माद दशा है। उन्माद दशा है उसका वर्णन 'घरी चारि इमि गर न गरामी' में हो रहा है। दशम दशा मरणा है, उसका वर्णन प्रायः नहीं किया जाता है। सौ अवस्था तक पहुँचा कर वास्तविक मरणा बना दिया जाता है।  
स्तिन = क्षण में।

कैवलहिं.....गाढ़ी = पद्म-वती के विरह की च्यवा ऐसी केसर के समान उसका पीला शरीर तो था ही, विरह के कारण हृदय में गहरी पीर (पीलापन और पीड़ा) हो गई। दगध = कारा = लपट।

होइ.....सोइ = ऐसा भालूम पड़ता था कि मानो शरीर में हनुमान प्रवेश कर गए हैं और लंका को जला रहे हैं। वत्रागी = खनी कठोर अग्नि। सायर = सागर। हिय-वारी = लड़की के हृदय अथवा हृदय-रूपी-योगीचे में। वारी का अर्थ बारीचा लगाना उपयुक्त है।

दुहेली = दुस्वित। प्रीति-बेलि—सोइ = प्रीति की बेलि किसी न उलझे अर्थात् कोई प्रेम के फन्दे में न पड़े। जो एक बार जग गई तो मरने पर भी नहीं सुलभती। टेके पाया = पैर पकड़ने हुत = से, द्वारा।

कहत .....पीऊ = कहने में लज्जा लगती है और बिना कहे नहीं जाता। एक ओर तो लोक-लाज की आग है और दूसरी ओर प्रेम का प्रेम। अगर बोलती हूँ तो कुल-कानि जाती है और नहीं बोलूँ तो मैं अपने प्रियतम का प्रेमिका नहीं।

खेचक = नाव चलाने वाले । दमनहि = दमयन्ती को । मेरावा =  
या ।

नोट—जिस प्रकार रतनसेन और पद्मावती के बीच में तोता था उसी  
र नल और दमयन्ती के बीच में हस्त था । हस्त ने ही नल को दम-  
ती की खबर दी थी ।

तुम्हें हीरामन नाम कहावा = तुम्हारा नाम भी हीरामन है, तुम उससे  
नहीं हो ।

भूरि ..... भानु = शक्ति का वाल पीडा देता है ( सालै ) और  
जीवन बूटी जिससे प्राणों की रक्षा हो सकती है मेरे पास नहीं है । अब  
ए शरीर से छूटग ( जुग ) चाहते हैं, शीघ्र ही रतनसेन-रूपी-भानु  
मुझे दिखालाओ ।

नोट—'येगि दिखावहु भानु' यहाँ पर ठीक नहीं बैठता । क्योंकि यहाँ  
लक्ष्मणजी को शक्ति लगाने की कथा का उल्लेख है । उस कथा में तो  
था कि यदि सूर्य निकल आवेगा तो लक्ष्मणजी नहीं बचेंगे । यहाँ  
तो संजीवन-बूटी मँगाना ही उपयुक्त है । कुछ तो वानु और भानु का  
न्यानुप्रास मिलाने के लिए और कुछ हिन्दू कथाओं का पूर्ण ज्ञान न  
ने से जायसी ने ऐसा किया मालूम पड़ता है ।

पृष्ठ ६०

लिलाट्ट = नाथा । सुग पाट्ट = मन्त्र और विनयन का नाम मन्त्र का  
महात्मन ।

पिता जोगी = तुम्हारा पिता राज्य का भोग करने वाला है ।  
स्व धर्म की बात नहीं जानता । वह ब्राह्मणों को पूजता है और जोगियों  
को मारने का हुक्म देता है । यह उनकी उलटी रीति है । लुबुध =  
तोभी । पौरि पेठा = दरवाजे पर कोन वाले का पहरा लग हुआ था  
तल्लिए प्रेम का लोभ । सुग क गुप्त मार्ग न घुमा । घरा = पड़ता ।  
हि पूरी = इसी करण तुम ने अनाध पंटा नर गइ है ।



पृष्ठ ६३

देइ बरगहाऊ = आशीर्वाद दे रहा है । असाई = अज्ञानी, दुष्ट, नील-विहीन । जोगी.....छाजा = हे राजा तू अग्नि के समान है और योगी ( सतनसेन ) पानी के समान है—तू क्रोध की अग्नि में जल रहा है और योगी सहनशीलता धारण किये हुए है । हे राजा, यह शेष ले कि अग्नि पानी से लड़ती हुई शोभा नहीं पाती ।

चूकु न = युद्ध न कर । चूकु = शिवेक से काम ले । खप्पर = निष्ठा-पत्र । वर तोहिं = तेरे दरवाजे ( वार = द्वार = दरवाजा ) पर ।

अभाऊ... .. दुर्भाव से युक्त अधवा अनिच्छित ( Undesirable ) देइ सेधि = सेंध देकर दीवार फोड़ कर । चोरी = छिप कर । भोट नाँव का = हे भाट, तेरा नाम क्या है यह बनला । मारा जीवा = मैं तुझे प्राण-दण्ड दूँगा । नाइ कै गाँया = गर्दन मुड़ा कर, विनयपूर्वक, अकड़ छोड़ कर । जां सत पूछसि = यदि सत्य पूछता है ( तो सुन ) । सत पै ... गाँया = यदि यज्ञ भी गिरे तो भी सत्य ही कहूँगा । जवू .... देना = जब द्वीप में चित्तोड़ नाम का देश है । नरेसा = राजा । ताका = उसका । नाइ नहि मेठा = भित्तिका कोड़ धियल नहीं कर सकता, निवे कोई मार नहीं सकता ( ऐसे बलशाली कुल का है वह ) । दाहिन ताही = दाहिने हाथ से उसे आशर्वाद देना है अथवा दे चुका है तात्पर्य यह कि मैं तो उसे आशर्वाद दे चुका हूँ उसका यह बर्ताव अथवा फरेगा । तू उसका विरोधी है फिर भी तूने नहिने हाथ से आशर्वाद देते दिया जा सकता है । दोनों विरोधियों का एक साथ एक साथ आशर्वाद देना तो निरर्थक हो जायगा ।

नावे टाट = मेरा नाम मारवाट है क्योंकि उसी का ही निवासी हूँ । बसीठ = दूत । जां ... ला ... वह बर्ताव ... मैं जान ... सुनने से क्रोध हो आवे दूँ वगैरहना है ... यह दूत कर रहा है ।

कनक... राजा = माँ के रूप में राजा को विनय की  
 मूर्ति = मैं मायाजी मयादेव हूँ । कदा = कभी दूर था ।  
 यदि = यदि भविष्य में तुम परिणाम निकलने हो तो जो कल  
 दी देना चाहिये । ओदि = इस लो । आता = जाता है । ओ  
 ओर उभे जिगहा पर निरंतर किया है उप ( पमावती ) के  
 नदर मान लिया है अर्थात् यह प्रेम एक ही ओर से नहीं है ।  
 ओर से है । हरि = करे । मोहा = तोरा, अर्थात् युक्त हो ।  
 कृष्ण ६४

मुण . . . वार = यह स्तनसेन मर कर भी तेरा दार न करे  
 ऐसा दुःप्रतिज्ञ है । नृकदु = विदेह में काम लो, अब भी समझ  
 कनक... देह = इसे भीम में कनक की कटोरी अर्थात्  
 देदो । नहिं मार = इसे मारो मत । यदि तुमने इसे मारा नहीं  
 पमावत दी नहीं तो 'मार' अर्थात् कामदेव का मारा मर जायगा,  
 वह मुनासिब है कि इसे न तो मारो और न कामदेव का मारा नावे  
 अर्थात् इसे पमावत दे दो ।

ओहट होहु = ओट में होजा, हट जा सामने से । भिलारी =  
 है सुद्रता-प्रदर्शन से अर्थात् तू भीख का अन्न खाने वाला सुद्र प्राणी  
 और मुझे शिखा देने चला है । असि = ऐसी कड़ी । तू = तुम के  
 सुद्र प्राणी । को . . . पारा = लसार में कौन ऐसा है जो मेरे प्यो  
 हो सके—जो मेरी बराबरी का हो, जिसे कन्या दी जा सके । ज  
 इताल = जिमकी ओर देख दूँ वही मेरे आतक के मारे पाताल में पहुँच  
 जाय । ऐसा प्रतापी हूँ मैं । फिर कौन मेरी 'सरवरि' का है—यह भव ।  
 प्राय = आया । आसमान = भयभीत । भा = हो गया । भीति...  
 प्रागे = भिचा लेकर आगे बढ़ जायँ और भीख माँगीं । ए . . . लो =  
 पर यह तो सारी रात किले पर चढ़ाई करते रहे हैं—भला यह कैसे

सारी हैं। जसहीसा = ऐसी करतूत करके जैसी उन्होंने इच्छा की।  
 थवा जैसी मेरी इच्छा है। चाहौं तिहरीन्हा = उसी के अनुकूल उन्हें  
 चाहता हूँ। मत्प भी है दान-पुण्य श्रद्धा तथा सान्ध्यानुकूल ही  
 होता है। नाहिं ..... लीन्हा = यही क्या कम है कि अब तक शूली से  
 छेद कर उनके प्राण नहीं ले लिये हैं। जेहि ..... रोजा = जिसे इस  
 प्रकार व्यर्थ ही अपने प्राण खोने की अभिलाषा है वह अन्त की ऐसे ही  
 होता है जैसे दीपक पर जल कर पतंगा। सुर ..... सेवा = देवता, ननुप्य  
 मुनिगण तथा गन्धर्व आदि को यहाँ कौन गिनता है? अर्थात् मैं क्या  
 उनकी परवा करता हूँ? वह तो निम्न ही मेरी सेवा करते रहते हैं।  
 तात्पर्य यह कि कोई भी मेरी बराबरी का नहीं है।

मोमों ..... टाट = हे झूठे भाट सुन ! मेरी बराबरी कौन कर सकता  
 है अर्थात् कोई नहीं। जो कोई ऐसी हिम्मत करे यदि उस पर मैं अपना  
 हाथियों का समूह छोड़ दूँ तो पिन कर धूल हो जाय।

काजा = कार्य, करतूत। जून् = युद्ध। दर = दल। जगत = सारा  
 ससार। असून् = अपार। कहहि धाण = अभी तक तो योगी आ  
 कर अपनी बात ही कह रहे हैं—अपना प्रस्ताव मात्र कह रहे हैं पर यदि  
 तुम स्वीकार न करोगे तो अभी-अभी चढ़ाई कर देने पर उतार है।  
 ईश्वर = महादेव। जावत = यावत् जितन भी। पुर = गेव अथवा लोक  
 या सभी अथवा पुर गये हैं छा गये हैं। पुर = एकत्र गये हैं।

जेहि ..... साजा—हे राजा जिस महादेव पर तुम्हें गव ..... उन  
 ने तुम से वैर साधा है। जहेवा = जहाँ पर।

चेर = दास। वारि कर = लटकी आप ही की .....  
 दीजिय = जिसे इच्छा हो उसे ही कन्या को द दीजिय।

जग पूजा = ससार द्वारा पूज्य। गुन चोदह = चोदह गुणों से युक्त।  
 सिख ..... दूजा = भला तुम्हें कौन शिक्षा दे। परेवा = पक्षी।

पृष्ठ २५

तर्हि नरेन्द्र = ५० गुण नरपूजे कि १५ गुण के  
 क योनी है यन्त्रा राजा राजा है। योनी = गुण = त  
 ही हीरामन का नाम गुण देवे से उग्रहा को र शान्त  
 उसने इस विषय पर इय म विषय किया। पवित्र  
 पवित्र न योना नदी से सकल। पवित्र का है कि पवित्र न  
 नर म सकल आर न पूरे हो यो म दे से सकल है। य  
 इगरो। नाप = ५० ( हीरामन के पुतले को )। इस  
 कदा तो सदी कि तु दार सागर पीला रंग पड़ गया तथा मुज  
 हो गया है।

चतुर..... गङ्गमद = तुम चतुर और ज्ञानी (वेद) की  
 शास्त्र और वेद को पढ़ें हुए हो। फिर भला बलाप्राता त  
 तुमने योगियों का लाकर न्या चढ़ा दिया है और जिले को त  
 गला है।

रमना रम तोला = जिहा के रम को तोला दिया—रम  
 में बोला। के = का है। आदि गो-आई = आरम्भ से ही मेरे स्वामी  
 तर्हि = तब। तेहि दोष = ऐसे आज्ञाकारी सेवक के कर्मों ने  
 निकाला जा रहा है—सेवा करते हुए भी स्वामी रोष कर रहा है।  
 यह है कि मैंने तो तुम्हारी भलाई का काम किया है, पर तुम  
 रहे हो। आ भागा = मुझ निर्दोष को जो दोष लगाया गया  
 उसमें डर कर यह सेवक ( यथात् मैं ) अपने प्राणों की रक्षा भ  
 से भाग गया। फिर देखेउ = तूम फिर का देखे। राजा = पहुँचा। उँ  
 उच्च, उत्कृष्ट, विशाल। ऊँच पहुँचा = वहाँ का राजा बु  
 है, तेरी बराबरी का है। आनेउ = लाया हूँ। जोगी के भेसू =  
 के वेश में।



सुधा..... बात = मैं सुधा सुन्दर फल ( रतनसेन ) को ले आया  
इस कारण मेरा मुख लाल है—मैं प्रसन्न बदन अथवा सुखरू हूँ । पर  
क्रम वाली बात याद करके मुझे डर लग रहा है, इस कारण शरीर पीला  
रहा है—कहीं मेरी दुर्गति न की जाय इस डर से पीला पड़ रहा हूँ ।

पहले..... साखी = पहले भाट ने सखी बात कही थी, फिर तोते ने  
सखी दी, उसकी पुष्टि की । राजहि..... आना = राजा को इस कारण  
एवं निश्चय हो गया और क्रोध किये गये रतनसेन को मुक्त कर बुलवाया ।  
रतन..... नलीना = जिस प्रकार बाँधने से रत्न नैला नहीं हो जाता  
सी प्रकार बाँधे जाने से ( क्रोध किये जाने से ) रतनसेन नलीन और  
दान नहीं हुआ । देखि..... जोगू = वर को कञ्चन जैसे शरीर वाली  
आवती के योग्य देख कर । अस्ति अस्ति = ठीक है, ठीक है । परोक =  
गाई । तितक-सँवारा = टीका कर दिया ।

पृष्ठ ६६—

पच्छिम..... निनारी = चाहे वर पश्चिम का हो और कन्या पूर्व  
में, फिर भी यदि विधाता ने उनकी जोड़ी बनाई है तो वह अवश्य ही  
मलेगी, अलग हो नहीं सकती—जोड़ी बिछुड़ नहीं सकती । मानुष.....  
पगज = मनुष्य लाख अभिन पाएँ और प्रयत्न करें पर होगा वही जो  
स्थाना ने रचा है— 'विधि का लिखा को नेंदुनहारा ' अथवा "हुइ है  
ही जो रन रचि राखा ।'

विरोप = यहाँ जायनी ने स्वप्न रूप में भाग्यवाद के पत्र में अपना  
प्रति प्रकट किया है ।

गए..... ओनाहे = जो बाजे युद्ध क्षेत्र को जीवों के मारने के हेतु  
जिते गये थे वही बाजे विपरीत अस्त्र अर्थान् मत्तलाचार में चरते लोट  
गये । तारस्य अर्थान् यह कि बाजे चजे तो सही पर उनके चरने का अव-  
सर एक दिन विपरीत हो गया ।

लेता .... दिया = दरान में प्रेम का दीपक जलाया । प्रभोर = प्रकाश । दूत = था ।

मार..... चेला । उसने मेरे पाग को मारे समुद्र में डल दिया मुझे पार उतारने के लिए धर्म की नाव दी और मुझे चेला बना दिया । बोहित = जहाज ।

पृष्ठ—४ अहा = था । उन्ह ..... गहा = उन्होंने मुझे अपने हाथ में हाथ पकड़ लिया, मुझको जो किनारा और घाट था, मिला गया ।

कन्धारा = कर्णधार, नायिक । दन्तगीर = हाथ पकड़ने वाला, मदद करने वाला । गाडे के साथी = विपत्ति में साथ देने वाले ।

बह अवगाह दीन्ह नेहि हाथी = मैं अगाध जल में बहा जाता था, उन्होंने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया ।

जहाँगीर = एक पदवी; यह पदवी उसी को दी जाती है जो नसार मर में मरना जावे । नवदीप की जैसी 'सारंगभौम' की पदवी है वैसी ही यह मालूम होती है । चिस्ती = एक जातिवाचक पदवी ।

निह कलंक = निष्कलंक । मन्वदून = जिसकी खिदमत ( सेवा ) की जावे, सेव्य, स्वामी । बाँद = बंधा, सेवक, गुलाम ।

निरमरा = निर्मल । तेहिघर ... सँवारे = उस घर में दो पुरुष कीपक के समान प्रकाश देने वाले हुए । रास्त ..... लिए ईश्वर ने इनको बनाया । ध्रुव = ध्रुवतारा, जो अपने

मेरु = स्वर्ण का पर्वत

नेवत = निमन्त्रण । सगरीं कैलासा = समस्त कैलास में ।  
 वस्त्र । साजा = सुसज्जित हुआ ( वस्त्रामूपण धारण किये ) ।  
 बाजे । मदन.....गाजे = मानो कामदेव की सहायता से दोनों  
 लगे अथवा कामदेव की सहायता को दोनों पक्ष के दब गये  
 राता = लाल अथवा रात में । गोहने = साथ । नइ = नमित  
 कर । जोहारा = प्रणाम । मसियर = मंगल । चहुँ.....तग  
 और जो मशालें जला दी हैं वह नक्षत्र एवं तारागण के समान हैं  
 पृथ्वी पर मशालें जल रही हैं और आकाश में नक्षत्र और तारे  
 जल रहे हैं । सूरज .....ताई = सूर्य अर्थात् तेजस्वी रतननेन  
 रूपवती पद्मावती की प्राप्ति-अर्थ रथ पर सवार हुआ ।

धरती .... मङ्गलाचार = पृथ्वी तथा आकाश में चारों ओर  
 जल रही हैं । बरात बजती हुई महल की ओर चली आ रही है,  
 मङ्गलाचार हो रहे हैं ।

सोने कर = स्वर्ण निर्मित । चित्तरसारी = चित्र शाला (   
 Drawing Room से ) महल । उत्तारी = ठहराई । मौन =   
 सिंहासन पाट = सिंहासन रूपी पट्टा । सँवारा = सजाया ।  
 लाकर । वैसारा = वैशाला । जेवनार पसारा = जेवनार का फैलाव ।  
 पसरे = प्रस्तुत किये गये । पनवारा = पत्तल । कनक .....  
 स्वर्ण पत्तों से निर्मित पत्तले परसी गईं । सोन.....करे = मणि  
 स्वर्ण-धाल गरीब अमीर सभी के सामने रखे गये । सँवानी =   
 फिरा अगगजा = चन्द्रनाटि का लेप किया गया, चन्दन लगाया ।  
 कुँह कुँह पानी = कुँह कुँह अर्थात् केशर का जल छिड़का गया ।  
 पान = पान दिये गये । बहुरा = वापिस हो गया । विवाह चा =   
 की क्रियाएँ और पद्धतियाँ । गाठि .....छोरी = दूल्हा तथा दुल्हन  
 अग्निय बन्धन हुआ, वे ऐसी गाँठ में बाँध दिये गये जो इन्हें तब  
 परलोक में कहीं भी नहीं खोली जा सकती ।

विशेष—यहाँ जायसी ने जहाँ हिन्दू-विवाह के आदर्श को प्रस्तुत है वहीं स्वयं भी इस प्रेम-बन्धन का समर्थन किया है। भला क़ और Divorce में यह बात कहाँ !

चाँद ..... रूप = चाँद तथा सूर्य अर्थात् पद्मावत तथा रतनसेन । ही विमल हैं, उज्ज्वल हैं तथा दोनों की अनुपम जोड़ी है। सूर्य व रतनसेन, चाँद अर्थात् पद्मावत के रूप को देखकर लुब्ध होकर रह और पद्मावती रतनसेन के रूप पर मोहित होकर रह गई।

विशेष.—रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार ।

६७

दुधौ नाँव लै = दोनों के नाम ले लेकर । दारा = बालाएँ, स्त्रियाँ ।  
 हे ..... मंगलाचारा = वे पद्मिनीयाँ मङ्गलाचार कर रही हैं । चाँद के  
 = पद्मावत के हाथ में । आनि = लाकर । सूरज गिठघाला = उस  
 हा को रतनसेन के गले में ढाल दिया । नूरन ..... पाई = रतनसेन ने  
 पद्मावती द्वारा पहनाये गये हार को क्या पाया, मानो उसे तारागण और  
 ग्रहों का हार मिला हो । पुनि .. दीन्हा = फिर उस स्त्री (पद्मावती)  
 अंजली भर कर जल लेकर रतनसेन को दे दिया मानो अपना योग्य  
 र सन्पूर्ण जीवन ही अपने पति को अर्पण कर दिया ।

कन \* हाथा = स्वामी का पाकर अथवा स्वामी का हाथ पाकर  
 पद्मावती ने अपना हाथ उसे दिया । मन = मन । भावरि = फेंकें ।  
 रत मोति = मोती रूपी नक्षत्र । मन फर = मान भाव मान धार  
 नि-प्रदक्षिणा । घुट के = घुट घुट कर टाँ करके । नानरु एक =  
 न ग्रन्थ में वेध कर उन्होंने मान भावरि फिर ।

राजाचार = राजरोचित आचार ( चलन ) । दायज = दान  
 हौं लगि = कहाँ तक । जत = जितना ।

पावा = पाया । सिर नावा = सिर मुकाबल प्रणाम दिया ।  
 लुम \* .. होई = समय कुछ भी क्यों न मोचे पर होता वही है जो

विधाता को करना होता है ।

विशेषः—ऊपर भी यह भाव प्रदर्शित किया गया है। वाक्य गंधर्वसेन के मुख से कहलवाये गये हैं। यहाँ भी जान-  
को भाग्यवादी प्रमाणित किया है, यथा—“मेरे मन कछु  
के कछु और” तथा ‘Man proposes God disposes’  
गोसाईं = स्वामी, मालिक । हम..... सेवकाई =  
करने को सेवक-मात्र हैं। तस..... नरेश = उसी प्रकार  
हमारे राजा हो। जंवू..... राजू = इतनी दूर जवू दीप में  
करोगे, यहाँ सिंहलद्वीप में रह कर राज्य करो। विनवा =  
अस्तुति..... मोरी = विनय करने योग्य वाणी मेरे पास कहाँ  
करने योग्य भाषा की भी तो मेरे पास कमी है—यह भाव।  
वड़ाई = वास्तव में तुम्ही स्वामी हो, जो तुमने मेरे शरीर की  
दूर कराया और इस प्रकार मनुष्य बनाकर मुझे इतना महत्व  
जौ..... जोग = जो तुमने दयापूर्वक मुझे प्रदान किया है  
जीवन तथा जन्म भर का सुख-भोग प्राप्त किया है नहीं तो मैं  
हूँ, पैर की धूल के समान। भला मैं जोगी किस योग्य था! मैं  
आप ही की कृपा का फल है।

विशेषः—इन पक्तियों से ‘रत्नसेन’ का चरित्र व्यक्त होता है।  
अभी कुछ समय पूर्व इतना उद्विग्न बन रहा था वही इतना  
हो गया है।

घौराहर = महल, अट्टालिका । वासू = निवास-स्थान।  
मानो । तराई = तारागण । होइ मडल..... पासा = चारों ओर  
चन्द्रमा रूप पञ्चावती को घेर कर। अकासा = ऊपर की अट्टालिका  
चलु..... तहाँ = हे सूर्य, जहाँ। दिन अस्त होता है उस  
चल अर्थात् अस्ताचल पर्वत को चल (यहाँ महल को बहुत ऊँचा)

रण पन्थावल पर्वत कहा गया है ) वहाँ तुम्हें निर्मल चन्द्रमा से मिलने का अवसर प्राप्त होगा यद्यपि हे सूर्य ( रतनसेन ) दिन अस्त पर तू वहाँ चल जहाँ तुम्हें विमल और सुन्दर चन्द्रमा ( पद्मावती ) मिल प्राप्त होंगे ।

देव

पद्मावति \* \* \* 'काँहा = पद्मावती ने जो अपने को नैवरा—जैसे  
उमने श्रृंगार किया उसे ही वह इतनी सुन्दर होगई मानो विधाता  
( = देव ) ने उसे इर्ष्या का चन्द्रमा बनाया हो । करि \* \* \* \*  
, = उमने मञ्जन तथा स्नान का जैसे ही चर ( वस्त्र ) पहना वैसे  
सका सौन्दर्य इतना बढ़ गया कि उसके मनने सूर्य भी लजित  
र छिप गया । रवि पद्मावति = केश मैं मान का । माँग \* \* \* \* चूना =  
मैं बिंदू भर कर उसे मोती तथा माणिक के चूर्ण से सजाया ।

एहिनि \* \* \* 'देखाव = वह मणि-नटित आभूषण एवं परिधान पहन  
जैसे ही खड़ी हुई उसी उम वस्त्र के सौन्दर्य का वर्णन नहीं  
जा सकता । वह उ \* \* \* \* मन्त्र की शक्ति पढ़ती थी मानो चन्द्रमा  
तारे आकाश-रूपी-दर्पण में पड़ हुए उसी के मुख तथा मणिया के  
चिह्न हैं ।

पद्मिनि \* \* \* 'याता = पद्मिनी रं चान के देव का रम्य द भाग  
, हाथी ने लजित हा में पर चुन टल ली । उसके मुख के देवका  
देमा घटने-घटते छिर ग । तब उसके दोता ही चमक के देवका  
गली लजित होगई । उसके नय के देवका ख न उसके नयु बली  
चुन कर कोकिल उर अवा का देवका मोर पतल कमर का देव  
सिंह ( लदूरु = शादल ) का ह के आका का देवका धनुष छिप  
तया बेसी को देवका र मुक्ति पाताल में जा दिया । उसके सुन्दर  
सिका को देखकर खरुग उ छिग तथा अमृत उसके अधर-मृत के

सम्मुख लजित हो जा छिपा । कमलनाल उसकी कलाइयों को तथा केला उसकी जंघा को देखकर लजित हो जा छिपे ।

अछरी.....लाजि = जब वह स्त्री ( पद्मावत ) श्रद्धा तो अप्सराएँ उसके रूप को देखकर जा छिपीं तथा जितनी भी थीं वह अपने-अपने मन में लजित हो जा छिपीं ।

विशेषः—इस सङ्कलन में कुछ अंश इस स्थल पर छोड़ दिए हैं । प्रथम-मिलन के पश्चात् जो वार्त्तालाप हुआ वह पश्चात् दिया ।

पुरुषक = आदमी का । बोल.....वाचा = शपथ और पूर्वक कहा हुआ समझो । यह .....सारी = हे स्त्री ( पद्मावती ) तुम जैसी ( रूप-लावण्य तथा सद्गुणशीला ) से अथवा प्रकार इस मनको लगाया था कि यह मन दिन-रात तेरे ही रहता था । अथवा यह मन दिन और रात तेरे साथ सारण करता था । ( नित्य तुम्हें ही जीत लेने की फिर में पौपरि = कभी पौ पड़ेगी ( में जीतूंगा—यह भाव ) । सोचा करता था, अभिलाषा करता था । सिरसों खेलि = मिर कर, सिरको हथेली पर रख कर । पैत जिउ लाएउँ = प्राण लगा दी । हँ .....कांची = मैं चौका पंजा से अर्थात् बार बार फेंकने के फेर से बच गया । अब मेरी गोट बीच में से न लौटेंगी तात्पर्य यह कि तुमको पालिया, मेरी गोट लाव है अथवा कच्ची गोट तुम्हारे बीच में नहीं आ सकती है—जो हो वही तुम्हें पा सकता है ( आध्यात्मिक अर्थ दृष्ट्य है ) पाकि जीता = आशा करते-करते आशा पूर्ण हुई, गोट पक गई, मेरा पूर्ण हुआ; फिर भी मैं हार गया और हार कर मैंने अपना जीव तुम्हें दे डाला और तुम जीत गईं । निनारी = अलग । कहा हारी = इधर-उधर की चगली





रूप में दीख पड़ती है । साधारण अर्थ के अतिरिक्त यहाँ यह है कि जिस प्रकार संतप्त अमर अन्ततः सुगन्ध प्राप्त करता है, भोग करता है, उसी प्रकार तू भी मेरे साथ विलास कर ।

कौन.....मोहीं = न जाने कौनसी मोहनी शक्ति तुझ में समय थी कि जो मर्ज नुस्ते या वही मुझमें भी उत्पन्न कर दिया । तड़पता था । डाढ़ि डाढ़ि = जल-जल कर । जिमि कोहल = आँति काली । पंथ.....सेवाती = मैं स्वाँति बूँद की प्रतीक्षा करने सीप बन गई । भइँ.....गई = मैं रात भर जागती रही हूँ प्रकार चकोर बन गई हूँ । तोरे.....तयऊ = जिस प्रकार अग्नि में तपा कर लाल कर देती है, अपने रंग में रँग देती है, उसी प्रकार प्रेम ने मुझमें भी प्रेम उत्पन्न कर दिया । हीरा.....जोती = हीरा के प्रकाश के कारण चमकता है, नहीं तो पत्थर में प्रकाश परगासे = प्रकाशित होने से । विभासा = विकसित होता है । नाहि नहीं तो ।

अंतरपट = छिपाव, दुराव । निउछावरि .....जीउ = अब तन, जीवन और प्राण सभी न्योछावर कर दिये ।

मोरे रंग = मेरे प्रेम में । असकै ..... तुन्हारा = मैंने तुम्हारा ( हृदय में ) चर्चित किया, जान लिया ।

पृष्ठ ७०—

मत = मन्य । मोही = मुझमें । मतभाव = मन्य भाव से, कि छल-कपट के । भइँ कँठ लागू = गले में लग गई । सोहागू = मोहाना । थोनाट = जैसे कि कुसुम-चय पाकर मालती मुकजाती है अथवा जैसे कि चंपा की डाल पकट कर मुकाई गई हो, ऐसी वह प्रियतम के गले में प्रेम जान पड़नी थी । वानू = वर्ण । बिजुरी = बिजुड़ी हुई, बहुत दिनों के बिजुक्त । जोरी = जोड़ी, ( माग्य की जोड़ी प्रसिद्ध ही है )



साथी को (पति को) हर कर किस कसाई ने—चिह्नमर  
और मुझे विरह दिया है जिसके कारण मैं जल जल कर

शब्दार्थः—पीड-वियोग = पति के वियोग के कारण ।  
वाउर = वावला । जीऊ = जीव, तात्पर्य है मन से ।

अर्थः—पति-वियोग के कारण मन ऐसा वावला हो रहा है  
प्रकार पपीहा नित्य ही 'पीड-पीड' रटा करता है, उमी प्रकार  
नित्य ही 'पीड-पीड' रटने में ही मस्त रहता है । अथवा  
कारण मन ऐसा वावला हो गया है जैसे कि पपीहा हो, जो कि  
'पीड-पीड' रटा करता है ।

शब्दार्थः—अधिक काम = कामाधिक्य, काम की अधिकता  
दाधै = दग्ध करै, जलाता है; क्योंकि काम को अग्निवन कहा जाता  
सो रामा = उस स्त्री को ।

अर्थः—कामाग्नि की अधिकता उस स्त्री को जलाती है,  
तोता उसके पति को हर ले गया है ।

शब्दार्थः—विरहवान = पतिवियोग-जनित दुःख । तम = तम  
डोली = हिलडुल भी नहीं मकती थी । रक्त = रक्त, खून ।

छन्दार्थः—उसको विरहवाण पेने करारे लगे हैं कि अचेत  
है । उसके रधिर का पानी हो गया है, उसके पसीने के कारण  
रधिर के पसीने के रूप में निकलने के कारण सारी चोली भीगी

शब्दार्थः—मूया हिया = हृदय मूय गया है । हरि हरि  
धीरे, नारी = नारी ।

छन्दार्थः—उसका हृदय मूय गया है, उसमें कोई रस नहीं  
नहीं गया है । वह इतनी कृशतना ( कमजोर ) हो गई है कि  
वाग्ग कृशता तक उसके लिए सारी हो गई है । धीरे-धीरे उस  
नाशियाँ प्राण छोड़ती जानी हैं—वह निर्जीव और निष्प्रण  
जानी है ।



ने उनको संसार के सहारे के लिए स्तम्भ स्वरूप बनाया ।

‘दि’ शब्द यदि स्तम्भ के साथ लगाया जावे, तो दो स्तम्भ होगा । दोनों एक एक स्तम्भ हो सकते हैं, और यदि जग के साथ लगाया जावे तो उसका अर्थ होगा इस लोक और परलोक दोनों के लिए, दोनों की प्राप्ति कराने वाले ।

टेके = सहारा दिये हुए हैं । दुहूँ..... रही = दोनों के भार लेने से अर्थात् भारसे चृष्टि स्थिर है, ढाँवाडोल नहीं होती । जेहि . . . कया = जिसने इरान किया और उनके चरवा पकड़े, उसका उन्होंने पाप हर लिया और उसका शरीर निराल हो गया । मुरसिद = (मुराद) पहुँचा हुआ, गुरु ।

मुहम्मद ..... तीर = कवि नलिक मुहम्मद कहते हैं कि उसका मार्ग निश्चित है अर्थात् उसके निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने में कोई बाधा नहीं है, जिसके साथ कि पहुँचे हुए परम ज्ञानी गुरु हैं । जिसके पास धर्म की नाव और गुरु ऐसे सेवक ( नाव चलाने वाले ) दोनों हैं, उसको शीघ्र ही किनारा मिल जावेगा ।

नेहरी = मुहीउद्दीन । उताइल = जल्दी । खेरा = पतवार ।

नोट—यहाँ पर एक शका उपस्थित होती है कि जायसी ने आरम्भ में सैयद अशरफ को पीर प्यारा कहा और कहा ‘लेना हिण प्रेन कर दिया’ और आगे चल कर कहा है कि ‘गुरु नेहरी खेवक मैं सेवा’ क्या यह दोनों ही उनके गुरु थे ? ऐसा मालूम होता है कि सैयद अशरफ को तो अपनी गुरु-परम्परा का मूल पुरुष होने के कारण पीर कहा और मुहीउद्दीन से उन्होंने मादानी रूप में सेवा ली ।

अरुखा = मार्ग चलने वाले गुरु नेता । शेख दुस्मान = शेख मुहीउद्दीन के गुरु थे ।

पथ लाइ मोहि ईन गियान = धर्म में लाकर अर्थात् दीक्षा देकर मुझको ज्ञान दिया । यहाँ मोहि टिक नहीं बैठता है । दूतरी मतियो में ‘जेहि पाठ है, वह अधिक ठीक है क्योंकि शेख दुस्मान जायसी के गुरु नहीं

चली । दुवार = दरवाजे पर । भईखरी = खड़ी हुई । विरति = वृत्ति ।  
 बंदन = सिंदूर । कै प्रनाम = प्रणाम करके ।

## नागमती-खंड

चित्तउर = चित्तौड़ का । पयहेरा = मार्ग देख रही है ।  
 पुनि.....केरा = फिर लौट कर न आये । नागर = चतुर नायक ।  
 तोइ .....हरा = उसने प्रियतम को मोहकर मुक्त से धीन लिया ।  
 पिठ नहिं जात . . . जाउ = चाहे प्राण निकल जाते पर प्रियतम  
 जाता । सुआ .....पीउ = मेरा काल बनकर तोता प्रियतम को ले गया ।  
 प्रियतम को तो क्या ले गया मेरे प्राण ही ले गया । भयउ .....का =  
 वह तोता वाचन शृंगुल के नारायण जैसा छली हो गया । छरा = दुरा ।  
 ( बलि और वाचन रूपधारी भगवात् की कथा प्रसिद्ध ही है ) ।  
 करन ..... इंदू = अथवा वह उस इन्द्र के समान हो गया जो प्राण  
 का कपट-वेप रत्नकर कार्य के पास कवच लेने को गया था और दान  
 में कवच ले आया था ।

अन्तर कथा—कण सूर्य के अंश से उत्पन्न थे और पैदायश के  
 समय ही कवच और कुंडल धारण किये हुए पैदा हुए थे । महाभारत के  
 युद्ध से पूर्व इन्द्र ने सोचा कि यह दिव्य कवच और कुंडल की  
 कणों के पास बने रहें तो अर्जुन, जो उसके अपने अंश से उत्पन्न है, उन्हें  
 को न जीत पावेगा । यह सोच कर उसने ब्राह्मण वेश धारण कर कर्ण से  
 इच्छा याचना की जो कि कर्ण जैसे दानी ने त्वरित ही दे दिये ।

मानव भोग .. योगी = राजा गोपीचंद को, जो कि भोगविह्वल  
 में विप्लव थे, जल पर योगी लेकर चलता बना । गरुड़ अलोपी = शीत-  
 गामी गरुड़ ।

दोहा ( १ ) मरम.....दीन्ह = मुक्त सारम के जोड़े को, ने

जीवरूपी हस रहता था उसके पंख जल गये और वह भाग गया अर्थात् वह निर्जीव ( मुर्दा ) हो गई ।

शब्दार्थ—पाट महोदह = पट्ट महादेवी, पटरानी । हिये न हारू = मन में मत हारो, हृदय को हाथ से मत जाने दो, पस्तहिन्मत मत हो । प्रमुक्ति जीउ = मन में समझ कर । चित चेतु सैभारू = चित्त में चेतना पैनालो प्रार्थन समझ-सोच कर स्वस्थ होओ और चित्त को प्रसन्न रखो । पैरगिनेह = स्नेह ( प्रेम ) का स्मरण करके । मेरावा = मिलाव । लग = साथ । परै = परस । परीहे = परीहा को । स्वांती = स्वांति नक्षत्र में बरसती हुई बूँद । कहा जना हे कि परीहा स्वांति की बूँद पीता है, साधारण जल नहीं । जब तक वह विशेष प्रकार का जल नहीं मिल जाता तब तक प्याना रहता और उसी की छाया में ऊपर को चोंच किये रहता है । अनन्य प्रेमी और भक्त की उपमा परीहे से दी जाती है । इस विषय में तुलसीकृत दाहानली का 'चातक चांतीसी' भाग दृष्टव्य है । जस = जैसी । टेकु = धानले, रोमले सहले । बोनुमन धींती = मन में स्थिरता धारण कर, मन को तुढ़ कड़ा कर । धरतिहि = पृथ्वी को । गगन सो = आकाश से । जेस = जैसा कि । पलटि प्रार = लौट कर आता है । आव = आवती है । नपेली = ऐ सुंदरी नदयोमन वाली । स = आनंद, नातुर्य । नधुपर = भोरा । पेली = ल-पै । नि करति = ऐसा ( दुखी ) मन मत कर, ऐसी दुखी मत हो । नू बारी = ऐ बाला । बारी का धर्म चाटिका का भी होता है । आगे तरपर ( तरवार ) के आगे से ऐसा दीख पड़ता है कि वरी का अर्थ चाटिका का होगा पर विचार करने से यह भ्रम दूर हो जावेगा और बारी का अर्थ सन्दाधन बरक में आजा होगा । उठिहि सब रि = सबल कर उठा । इस प्रकार का प्रह जाये । और फिर सुन्दर लगने लगनी । दिन दिन उन दिवस की नाच्य है जो तब के तब । बिनु जल = बिना पानी के । तुं जियेना = तुम्हारे ही होंगे ।

शब्दार्थ—बोई सखी राजा नागदत्त से कहती है 'जो ह पदमहा'...

( हे पटरानी ) हृदय को हाथ से मत जाने दो, हिम्मत मत हारो, सोच समझ कर चित्त की चञ्चलता को सँभालो, चैतन्य को हार न जाने दो, ज़रा सोच समझ कर काम करो । ( २ ) अनर का कौन मिलाप होते ही वह मालती के स्नेह को स्मरण करते ही प्रव्रण हो पास आवेगा; तात्पर्य यह है कि राजा किसी रानी ( पद्मावती के ) से प्रेम मले ही गया हो, पर जैसे ही वह उसे प्राप्त कर लेगा, उसे ( नागवती के ) स्नेह की जब याद आवेगी तो वह प्रव्रण तुम्हारे लौट कर आवेगा । नंतर.....नेरावा = इस कारण कहा गया है कि प्रसङ्ग में नागवती पहले कह चुकी है—

“नागर काहु नारि बस परा,  
तेइ मोहि पिय नोसों हरा ।”

‘जापसी नन्द’

और साथ ही वह तथा अन्य मल्लियाँ जानती थीं कि हीरानन्द पद्मावती के रूप को प्रशंसा सुनकर ही चढ़ गया है ।

( ३ ) पपीहा को स्वाँति के जल से उतनी श्रुति होती है कि साधारण जल को कभी नहीं पीता और जब तक उसे स्वाँति-जल मिलता तब तक प्यास को सहता रहता है । उसी प्रकार तुम भी प्रियतम से प्रेम करती हुई उससे मिलने की इच्छा ( प्यास ) को सहो और मन में स्थिरता धारण करो, मन ज़रा कड़ा करो । ( ४ ) जानती ही हो कि पृथ्वी को आकाश से कैसा प्रेम होता है, उसी प्रकार चरितार्थ करने को वह वपांछितु में मेह के रूप में पलट कर आता है । उसी प्रकार तुम्हारा जितने प्रेम है वह अवश्य ही लौट कर आवेगा ।

जदि को जेदि पर मय्य सनेहू,  
मो नेहि मिलै न कहु सनेहू ।”

‘तुलसीदास’



(२) वनन्त ऋतु के अभाव में बेलें नीरस हो जाती हैं, भौंरे उसके पास भी नहीं फटकते, परन्तु वे नवयौवन वाली ! जैसे ही वसन्त ऋतु आता है वही रस सर्वत्र दीप्त पड़ता है, वही भौंरे होते हैं वही बेलें होती हैं अर्थात् भौंरे फिर रस लेने के हेतु बेलों पर मँडराने लगते हैं। इसी प्रकार सुखवस्त्र पाने पर ही नवेली ! तुम्हारा भी भ्रमर (प्रेमी) तुम्हारे पास लौट आवेगा।

(६) हे बाला, तू इस प्रकार उन्नता न हो, यह वृक्ष (तेरा शरीर) शीघ्र ही संभल कर उठेगा, सौन्दर्य प्राप्त करेगा।

(७) दस दिन के लिये अर्थात् थोड़े समय के लिये सरोवर का जल, भले ही सूख जावे और वह सरोवर नष्टप्राय हो जावे तथा उसको हस्त गड जावे, पर एक समय वह आता है जब कि सरोवर फिर भर जाता है और उसके प्रेमीजन (हंस) फिर उसके पास आकर वास करने लगते हैं। उन्हीं प्रकार यद्यपि काल पाकर तू इस दुर्दशा को प्राप्त होगई है और तेरा प्रेमी तुझसे दूर चला गया है, पर एक समय आवेगा जब कि तू वही नागमनी होगी और वही तेरा प्रेमी होगा।

दोहा (३) शब्दार्थ — साजन = प्रेमी। अरुन्ध भेटि = गले से मिल कर, भुजाएँ भर कर भेट कर। गहत = गहने हैं पकट लेने हैं। तपनि = जलन। मृगसिरा = एक नक्षत्र जो कि गमियों ने पड़ता है। आर्द्रा = एक नक्षत्र जो कि वर्षा ऋतु में होता है। इन समय वर्षा त्वर जाँरो की होती है। पलुहेत = पल्लविन है वे हैं, हरियान।

छन्दार्थ — यदि विपुल प्रेमी मित्रता है तो पिदोम न्द्र उन्ने भुजाएँ भर कर भेटती हुई पकट रखता है ऐसा आनन्द उन्ने मिलता है कि एक दफा को छोड़ना नहीं चाहता। लेकिन बात यह है कि जो मृगसिरा की कटी धूप को तपन को महता है (विपुल वर्ध में जलता है) वही आर्द्रा नक्षत्र ने जाँरो की वर्षा से लाभ उन्नत हुए पल्लविन होता है, संयोग-सुख अतिशय मात्रा में प्राप्त करता है।

विशेष—आगे वारहनामा का वर्णन है, कवि ने यह कि वारहों महीने नागमती की वियोग के कारण केंपी गृहकार-रस के वर्णन में वारहमासा का एक स्थान-विशेष कवियों ने इसका वर्णन किया है। जायसी का वारहनामा पश्चात् लिखेंगे।

शब्दार्थ.—चढ़ा अमावस = आमावस मास चढ़ आया होगा; आमावस मान ने गिरिहिणी पर चढ़ई का टी। गगन = वन गाजा = बादल गरजा। माजा विरह = विरह द्वारा सजाया दुन्द = दन्द, तात्पर्य है युद्ध से। दल बाजा = दल (सेना) ग वज रहा हो। धूम = धुँए के से रग के। माम (ग्याम) = कलें म धौरे = धवल, श्वेत। व ए = दौड़े। सेन = सफेद। वजा = वन। पांति = बगुलों की पक्तियों। देसाए = दीख पड़ते हैं। खड़ा खड़ा (तलवार) के रूप में विजली। चहुँग्रोर = चारों ओर। बुंद बाणों के रूप में बूँदें। गोनई = लुकी। आइ बहूँ फूरी = चारों ओर। कंत = हे पति। उयारु = मेरी रचा करो। मदन = मदन। दारु = मंदर। पीऊ = पपीहे का 'पीऊ-पीऊ' शब्द। रंई वियुत, बिजली। घट = शरीर में। जीऊ = जीव, प्राण। नवत = नव दिनो वर्षारम्भ होने के कारण ग्राम्य लोग अपने घरों की दुनों की छराने, जहाँ छप्परों की आवश्यकता होती वहाँ पुराने छप्पर हटाने नये छवान हैं, इस कारण ग्रामीण स्त्रियाँ अपने पति के बाहर होने पेसा प्रयाग करती हैं। वह कहती हैं "हमारे घर को कौन छानेगा, जिस समय घर छान जान की समस्या सामने होती है, उसी समय हम छानने के कारण पति की अनुपस्थिति में वह स्त्री विरह दुःखिता नोई है। अतः मंदिर को छाना मे नायिका का विरह-दुःख मग पड़ा है।



हैं, मेरे घर को छीन दूँगा, मेरे घर की छीन म्हा दूँगा, तुम  
दुख में छीन उठारेंगा ? अब प्रादों नी आगटे जनकर घर में  
लेजा लग गया :- सारी पृथ्वी जननय रो रही है, आह मेरा  
है कि पति-वियुक्ता हैं, मुक्त पतिवियुक्ता को बिना सते  
आइर देगा ?

( दोहा ३ ) जिन्ह घर = जिनके घर । कन्ता = पति । ने =  
गारी = गौरव, प्रतिमान । गर्व = वनखट । जिन्ह = उनकी ।  
बाहर है । नय = नय ।

सुन्दायः—जिनके पति घर पर हैं वही आज दिन मुक्त हैं  
गौरव और गर्व उन्हें ही शोभा देता है; ( पति के पान होने से  
गौरवान्वित है तथा उनमें अक्षय कोड़े ऐसा गुण है, जो उनके सते  
उनसे वियुक्त नहीं होने देता । अतः उन्हें इस बात का गर्व है, तब  
कि वह प्रेम गर्विता और रूप गर्विता दोनों ही हैं । नागन्ती  
पति-प्रेम का सौभाग्य प्राप्त नहीं है, अतः प्रेम-गर्विता नहीं; यदि  
रूप आदि कोड़े गुण होता तो पति बाहर जाता ही क्यों ? अतः  
है उसके रूप को, वह रूप का गर्व भी नहीं रख सकती, रूप गर्विता  
नहीं हो सकती । अथवा जिनके घर कन्ता ( स्तनमेन ) हैं वही मुक्त हैं  
सचा गौरव और गर्व उन्हें ही शोभा देता है, वही ऐसी प्रेम-गर्विता  
रूप-गर्विता है ( नागन्ती का मानिया डह दृष्टव्य है ) मेरा तो  
बाहर है अतः सभी सुख भुजा बेंटी है ।

गच्छायं — वरम = वरमता है । भरनि परी = जेतों में चारों  
पानी ही पानी भरा हुआ है । भगती ( नचत्र ) लग गया है, (२) दान  
का अथ वनधार वषा का भी है । कुरानी = सुरन्ध्र रही हैं, सुख रं  
पुनरवमु = नचत्र-विजोष । वाउरि = वावली । मरेन्वा = चतुर । रत्न के  
रधिर क । आमु = अश्रु । योन् । परहि भुँड = पृथ्वी पर निरते  
दूटी = दूट कर । जम = जम कि । वीर बट्टी = वीरबट्टी, राम के



कै = किस प्रकार । भेटों = मिलूँ । कृत तुम्ह = हे पति  
मोहि = मेरे । पाँच = पत्न ।

चन्द्रार्थ.—हे पति मैं तुमसे किस प्रकार भेट करूँ । मार्ग  
दुर्गम पर्वत समुद्र, वीहड और अनेक टाक के वन हैं और मेरा  
है कि न तो मेरे पाँच ही हैं, अर्थात् पाँचों में इतनी शक्ति नहीं है  
तुम तक पहुँच सकूँ और न पत्न ही हैं जो कि उड कर तुम्हारे पास  
विशेष ( १ ) नामहि पाँच = पैर होजाना और पत्न हो  
यह दो मुहाविरें, जिनका अर्थ है विशेष शक्ति का उद्भूत होना  
निकल गाने का अर्थ इससे भिन्न होता है ।

विशेष ( २ ) जायसी में स्थान-स्थान पर रहस्यवाद का पुट  
पड़ता है । कहीं-कहीं तो उसी का साम्राज्य ही समझना चाहिए ।  
ऐसे स्थलों पर भी वह रहस्यमयी बात कहने से नहीं चूके । कृत क  
ईश्वर समझिये और नागमती का अर्थ भक्त आत्मा का, तो आपको  
हो जावेगा कि पर्वत, समुद्र आदि बाधाएँ जितनी है उनका व  
उन अनेक विघ्नबाधाओं का जो कि आत्मा को ब्रह्म-प्राप्ति के मार्ग  
आकर उपस्थित होता है अतः अर्थ होगा कि हे भगवन्, इतनी वि  
बाधाओं के उपस्थित होते हुए मैं अशक्त जीव किस प्रकार आपको प्र  
कर सकता हूँ । ऐसे स्थल जो बीच बीच में आ जाते हैं, वह न  
आनन्ददायक होते हैं तथापि मूल कथा पर उलटा प्रभाव पड़ता है ।  
जायसी ने तो सम्पूर्ण कथा को ही ग्रन्थोक्ति रूप से कहा है, उ  
विषय तो रहस्यवाद ही है, मानव-लाला-वर्णन तो गौण है ।

शब्दार्थ — दृभर = कठिन । भरो = काटूँ, चिताऊँ । सून = सुन  
निर्जन, पति-विहीन । अननै = अन्यत्र । नागिन = सपिणी । उमा =  
काटती है । गहे यकपाटी = विना करवट बदले । नैन पसारि—आँखें प  
कर । तरामा = त्रास देता है, डराता है । काल होइ = काल वन क  
जीउ गरासा = जीव को प्रस लेता है । मघ = मघवा; इन्द्र अथवा



ये । दोन दुनों रोमन सुरन्धर = दोन में अर्थात् उन वा परलोक में अर्थात् दुनिया में दोनों जगह जिनकी ग्यानि है और जो दोनों लोक में लोक प्रिय है । मिद पुरष संगम जेहि मिला = जो मिद पुर्ण के साथ मिला । इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि वे परमात्मा से मिले हुए (सुद रसादा) हैं । 'मिद-पुरष' परमात्मा को भी कहते हैं ।

हजरत ख्वाज जिजिर तेहि पाण = जिनको हजरत ख्वाजा जिजिर मिले । नण . . . राजे = सैयद ख्वाजा जिजिर गुरु दानियाल से प्रसन्न हुए और उनको सैयद राजे के पास ले जाकर मिला दिया अर्थात् दानियाल को सैयद राजे का शिष्य बना दिया । ओहि = मुहम्मदजीन जो गुरु परम्परा में हुए हैं । मैं पाई करनी = कर्त्तव्य बुद्धि वा योग्यता प्राप्त हुई । उघरी जीम . . . करनी = उनकी कृपा से मेरी जीम खुल गई मुझ में कवित्व शक्ति आ गई और मैंने पद्मावती की प्रेम-गाथा का वर्णन किया ।

विशेष — यहाँ 'सञ्चित पद्मावत' की भूमिका में दिया हुआ गुरु परम्परा का बड़ा वृत्त देखिये । यद्यपि जायसी ने सैयद अशरफ को ही मूल पुरुष करने लिया है, तथापि यह परम्परा निजामउद्दीन औलिया से जिनका देहान्त १३२८ ईस्वी में हुआ था चली है । यह परम्परा उस से कुछ भिन्न है जो मुसलमानों में प्रचलित है ।

पृष्ठ ४ दूत = से, द्वारा । वे केर = वे अच्छे गुरु हैं, मैं उनका चेला हूँ । मैं उनका सेवक होकर उनकी सदा विनती करता रहता हूँ उन्हीं की कृपा से मुझे परमात्मा का दर्शन मिल सका है ।

नवे' दीहे के पश्चान् कवि अपना परिचय देता है ।

विशेष — एक नयन = एक नेत्र वाला, कहा जाता है कि 'जायसी' का एक आँख बेचक में जाती रही थी ।

विमोहा = सुख हो गया । जेहि कवि सुनी = जिसने जायसी की कविता सुनी ।



प्लावित होरही है और मैं आक और जवाम के समान सुतनी रही हूँ ।

विशेषः—आक.....मूरी = आक ( अर्क, अर्कावा ) और गरमी में हरे-भरे रहते और वर्षा में जल जाते हैं, शायद वह दुस्मि और किसी का हरा-भरा होना नहीं देखना चाहते । गोस्वामी जी ने भी वर्षा-वर्णन में कहा हैः—

‘अर्क जवाम पात विन भयऊ’

—‘रामचरित मानव’

दोहा ( ६ ) छन्दार्थः—जलाप्लावित होने के कारण सारी पृथ्वी हो रही है, जल थल सब एक हो रहा है । पृथ्वी और आकाश एक गये हैं, क्योंकि सर्वत्र जल ही जल दीख पड़ता है । यौवन के मनुष्याह लेती हुई अथवा पार करती हुई स्त्री को दूबते से बचाने की प्रिययम, अब तो कुछ सहारा दो अर्थात् कृपा कर अब तो घर को आओ

शब्दार्थः—लगा कुयार = फार का महीना आरम्भ हो गया । नील = जल । तनलटा = शरीर कूश हो गया है । पलु है = पल्लवित अर्थात् हरी-भरी होती है । कया = काया, शरीर । उतरा चित्त = (१) तुम्हारा चित्त मेरी ओर मे उतर गया है अथवा फिर गया है (२) मेरा मन उतर गया है उसमें जोश का नाम निशान भी नहीं रह गया । मग = कृपा, दया । चित्रा = एक नक्षत्र । मीन = (१) मछली (२) एक राशि अगस्त = एक सितारा जो कि वर्षान्त पर फार माम में उदय होता है हस्ति-वन गाजा = बाटलों जैसे काले अथवा दीर्घाकार हाथियों को मारे जाते हुए । नुरय = घोड़े । पलानि = कमर । चढे रन राजा = राजा लोग रण के हेतु सुसज्जित होकर चल पड़े । चातक = पपीहा, इसी पक्षी में स्वाँति की बूँद-विषयक नोट दृष्ट्य है । समुद्र भरे = समुद्र के सीपों मोनियों में भर गईं अथवा समुद्र सीपों के मोतियों से भर गये हैं । गन्द पर दृष्टिपात करने से अन्तिम अर्थ ही ठीक दीप्त पड़ता है ।

प्रवरि = संभल कर । कुरली = एक पत्नी-विशेष । सँजन = सञ्जन, एक पत्नी-विशेष जिसकी पान्ते, सुन्दर पान्ते का उपमान मानी जाती है । सँजन के विषय में प्रसिद्ध है कि वर्षा-ऋतु में यह दिखलाई नहीं पड़ते हैं, सम्भवतः कहीं चले जाते हैं । भा परगास = प्रकाश हो गया, ज्योति सी फैल गई । कांस = कान, इसको मूँज या सरपता भी कहते हैं, फार नास में यह फूलता है, इसका फूल हाथ टेढ़ हाथ लम्बा और सफेद होता है । जहाँ यह फूलता है वहाँ चारों ओर श्वेत ही श्वेत दीख पड़ता है । न फिरे = न लौटे ।

छन्दार्थ—( १ ) आश्विन मास का आरम्भ हो गया, संसार में पानी घटने लगा अर्थात् वर्षा का जल जो यत्र-तत्र भरा हुआ था वह सूखने लगा, हे पति, अब भी लौट आओ मेरा शरीर बहुत कृश हो गया है । ( २ ) हे स्वामी, तुम्हारे दर्शन से शरीर हरा-भरा हो जाता है, मेरा चित्त बहुत उतरा हुआ है, मुझे बहुत दुःख रहता है, अतः अब फिर कृपा करो । ( ३ ) मीन अर्थात् मछली का मित्र अर्थात् जो कि मछली के अनुकूल है ऐसा चित्रा नाम का नक्षत्र आ गया है, परीहा 'पीठ-पीठ' शब्द पुकारता दीख पड़ता है । ( ४ ) अगस्त नाम के मितारे का उदय हो गया, अनेक हाथियों को सजा कर तथा घोड़ों पर जीन बन्ध कर राजा लोग रण-हेतु नज कर निकल चले हैं । ( ५ ) वर्षा-ऋतु में न्योति की घूँद चातक के मुख में पड़ गई है वहाँ न्योति नक्षत्र की वें सीपों में पड़ने से समुद्र मोतियों में भर गया है । नक्षत्र पर मछलियों को हम लौट आये हैं, वहाँ नारस आर कुरली का उदय न दीख पड़ने है । ( ७ ) वन में कासों के फूलन से चारों ओर कास में फूल फूल पड़ रहा है, ऐसे समय में भी मेरे पति न लौटे का विवेक मैं हूँ समझ रही ।

दोहा [ ७ ] शब्दार्थ — निरह हस्ति अरु नृप हाथ प्रय = घाव । चूर = तोड़ कर, चूर चूर करव । दण्डु = गेहूँ दाँत या ठेके

ऐसा करने से बाज रखो। गाजहु = गर्जो। मोड़ = वही।  
शादूल, सिंह।

छन्दार्थः—विरह का हाथी शरीर को दुःख देता है चित्त को  
चूर कर मुझे वायल किये डालना है। हे प्रियतम, हे वही शादूल,  
कि उस हाथी के मर्दन की सामर्थ्य है, आकर उसे ऐसा अनर्थ  
रोको। उससे लडो और मार-काट कर भगा दो, नहीं नहीं, उसका  
को अन्त ही कर दो।

शब्दार्थः—सरद चन्द्र उजियारी = शरद-ऋतु के चन्द्रमा की  
जो कि बहुत ही उज्ज्वल होती है। जग सीतल .....जारी = मारा  
तो उस चाँदनी से शीतलता लाभ कर रहा है, पर मैं विरहणी  
द्वारा जलाई जा रही हूँ। संयोग शृङ्गार के उद्दीपन विभाव वियोग  
उलटा ही काम करने है, विरह को अत्यन्त बढ़ाते हैं। परगासा = प्रक-  
शित हो रहा है। जनहुँ जैँ = मेरे लिये जैसे कि जल रहे हों। धरति =  
पृथ्वी। सेज = शैया। करँ अगिदाहु = आग में जलाती है। सपहि चन्द्र =  
मय के लिये तो चन्द्रमा है अर्थात् जो शीतलता आदि गुणों के कारण  
अन्य सभी को सुगन्दायी है। भणहु मोहिराहु = मेरे हेतु दुःखदायी राहु  
के समान हो गया। जिम प्रकार राहु चन्द्रमा और सूर्य को ग्रस लेता है  
आंग न न देता है उसी प्रकार चन्द्रमा मेरे लिये ग्रसने वाले राहु के  
समान हो रहा है—मुझे खाये ही जा रहा है।

राहु = समुद्र-मथन में सुर-ग्रसुर दोनों ही ने भाग लिया था।  
चोदर गन् प्राप्त हुए, उनमें अमृत भी था, इसी अमृत के हेतु समुद्र-  
मथन किया गया था। अमृत प्राप्ति के पश्चात् विष्णु और देवताओं ने  
निश्चय किया कि अमृत की एक बूँद भी किसी असुर को नहीं मिलनी  
चाहिये। वस ही यह देवताओं का नाक में दम किये रहते थे। यदि कहीं  
अमरत्व का प्राप्त हो जाते तब तो देवताओं का कहीं ठिकाना ही न रह  
जाता, यही मान कर विष्णु भगवान् ने यह मत स्थिर किया कि अमृतों

ही अनुपस्थिति में भगवान् विष्णु ने देवताओं को असृत दौटना आरम्भ किया साथ ही वह ज्ञाना भी प्रचारित करदी कि यदि कोई भी असुर उन्हें आकर मिल जावेगा और धोखा देकर असृत पीना चाहेगा तो उसका सर धड़ से अलग काट दिया जावेगा। जिन समय भगवान् विष्णु देवताओं को असृत पिला रहे थे, उन्ही समय देवताओं के कुरङ्ग में राहु और केतु नाम के दो असुर भी रूप बदल कर आनिले। असृत राहु के खे तक ही उतर पाया था कि चन्द्रमा और सूर्य ने उसकी जुगली खादी। केतु ने शीघ्र ही उसका सर धड़ से अलग कर दिया। असृत गले तक पहुँच चुका था, परन्तु उसका सिर धूमर हो गया। वही कटा हुआ सिर राहु के नाम से आकाश में घूमता फिरता है और अपना राव चलने पर, सूर्य और चन्द्रमा को निगल जाता है। पर उसका सिर कटा होने से खे की ओर से सूर्य और चन्द्रमा निकल कर अपनी प्राण-रक्षा करते हैं। जब ऐसा होता है तभी हम कहते हैं कि सूर्य-ग्रहण अथवा चन्द्र-ग्रहण हुआ।

जो=क्योंकि। निरुर=निष्ठुर, कड़े दिल वाले निर्मोही। एहि-  
ल=इन समय। परद देवारी=दिवाली का त्यौहार। मूनरु=‘मनोरा-  
रु नाम का एक गीत’—जायसी प्रत्यावली। अग मोरी=अग्नी को  
गोद कर। मुरावे=मूर्खता है, मूर्खी जाती हैं, कुतर्की हैं। मनोरथ  
जा=मनोरथ पूर्ण हुआ। मवति=मगनि मोगि।

धन्यार्थ—[ १ ] कालिक न नर्तन जगद गन्ध के चन्द्रमा की  
पिनीने मारा नमार गीतलन प्रण कर रहा है और मैं विरह की जगम  
त रही है, अथवा मुझे विरह जलन डालता है। [ २ ] बंदा रुमा से  
चन्द्रमा प्रकाशित हो रहा है चाने ओर धवन चर्चनी चिह्न रही है मुझे  
ने ऐसा दीव पड़ता है जैसे कि पृथ्वी से आकाश मनी उतर रहा है।  
[ ३ ] गैया तन्मन मनी को जलण डालनी है ज चन्द्रमा मने के विरह  
विह और सुखदायी है वही मैंने लिए गरु क काम कर रहा है मुझे

खाए ही जाता है, अथवा मेज मेरे शरीर और मन को जलाए ही है, जो शैया सब के लिये चन्द्रमा के समान सुखद है वहाँ मेरे राहु का काम कर रही है। (४) मुझे चारों ओर अंधकार ही दीख पड़ता है, क्योंकि मेरा प्रियतम घर पर नहीं है। (५) है इस समय भी आजायो, दिवाली ( दीपावली ) का त्यौहार समान में मनाया जा रहा है ( इस समय तो पण्डित भी अपने-अपने चले आते हैं ) (६) शरीर को मरोड़-मरोड़ कर सग्नियाँ, नाना गानगी हैं, मेरी जोड़ी बिछुटी हुई है, मेरा पति घर पर नहीं है। कुड़ा करती हूँ, जला करती हूँ। (७) जिनके पति घर पर हैं, सर्व सुख हैं—उनकी सभी मनस्कामनाएँ पूरी होगईं हैं, मेरे लिये विपत्तियाँ हैं एऊ विरह और दूसरा सपत्नी-दुःख अथवा जिसके घर पति आज दिन है, उसकी सारी मनस्कामनाएँ पूरी होगईं, मेरे लिये दो-दो आफतें हैं—एक विरह और दूसरा सपत्नी-दुःख।

श्लोक (८) शब्दार्थ —माने = मनायी है। द्वार = रात, धूल।

चन्द्रार्थ—सभी सग्नियाँ गाकर और खेल कर दीपावली का मना रही हैं, मैं बिना स्वामी के भला क्या गाऊँ, उनकी उपकारण मेरे तो पिर में धूल भर गयी है।

शब्दार्थ—दिवस घटा = दिन छोटा होगया। जाइ किमि गाये यद् गादी रात्रि—यहुन लखी रात्रि—किम प्रकार जावे, किम प्रकार लकी जावे। दिवस भा रात्री = दिन भी रात होगया। दिन के गत—पैसी जान पड़ने लगी। दिया = हृदय। जनावै सीट = शीत अनुभव करता है, जाड़ा लगता है। तोपै = तभी। नाहू = पतटि न बरुग = लौट कर न आया। गा = गया। बिछोई = छोड़ दिया। यत्र अग्नि = विष्णु की आग। दगवै = जलता है। द्वारा = दग्गदग्ग = जलन का दुःख। केरै भयमंनू = जला कर नष्ट देना है।



लेता है । सूक्त नहीं नियरे = निकट नहीं दीन पड़ता है ।  
 सपेती = सीर ( लिहाफ़ ) सहित भी । आवे जूडी =  
 का जाड़ा लगता है जैसे कि जूडी-ज्वर हो आया हो ।  
 चल = हिमालय, अर्थात् बरफ में । चकई = चक्रवाक,   
 पहले दिया गया नोट । कोकिला = जल कर [ कोयल ]  
 हो गई । पंची = पत्नी । सचान = बाज, एक पत्नी ।  
 भण्ड तन जाड़ा = विरह बाज को देख कर डगके कारण  
 जाड़ा हो आया है ।

वृत्तार्थः—पौष मास में जाड़े के कारण शरीर धर  
 रहा है, जाड़ा सूर्य की गरमी से दूर हो सकता है, पर  
 सूर्य [ पति ] सिंहलद्वीप की ओर जाकर छिप गया है ।  
 विरह के बढ़ने में शीत बहुत अधिक बढ़ने लगा है, मैं  
 काँप कर मरी जा रही हूँ, मेरे प्राण ही हरे लेता है । [ ३ ]  
 स्वामी कहाँ है, मैं उसके गले लिपट जाना चाहती  
 जिससे कि शीत दूर हो सके । मार्ग अपार है,  
 है और वह निकट दीन नहीं पड़ता है अथवा मुझे  
 वस्तु भी तो नहीं दीन पड़ती है । [ ४ ] लिहाफ़ ओढ़े हुए  
 तो ऐसा जाड़ा लगता है कि जूडी चढ़ आई हो, गैया इतनी  
 लगती है जैसे बरफ में दबा रक्खी हो [ ५ ] चकई रात को  
 से बिछुट कर दिन में तो उमंगें मिल गईं पर मैं दिन रात विरह  
 में जल कर कोयलवन [ काली ] हो गई हूँ । [ ६ ] रात  
 अकेली हूँ, साथ में मन्वा भी नहीं है फिर कौन पत्नी [ अर्थात्  
 विरहिणी ] किस प्रकार जीवित रहूँ । [ ७ ] विरह रूप बान  
 मयन ही शरीर में भय के कारण कपकपी हो गई है, वह एक  
 वैचित्र्य बान है कि जीन जी मन्वा और मग्न पर भी पीड़ा  
 डेढ़े [ प्रेम की महिमादृष्ट्य है, वह मने पर यही समाप्त है ]





तह रुई लेकर शरीर को ढाँपने हैं, नव भी जाड़े के कारण  
 और भी अधिक हृदय काँपता है। ( ३ ) हे पति, सूर्य बन  
 चमको अथवा सूर्य बन कर तपा दो, माव माम में तुम्हारे वि-  
 छूटता ही नहीं। ( ४ ) इस प्रकार जाड़ा दूर करने में अन्यन्त  
 ( आनन्द ) प्राप्त होता है। नू तो वह माँग है [ जो कि बड़ा ही  
 है, जोकि रस-प्राप्ति के हेतु सिंहल-दीप तक टाँट कर गया है ]  
 यौवन फूल के समान है; अथवा मेरा यौवन फूल के समान है इन्में  
 ही आनन्द उत्पन्न होता है और नू अन्यन्त ही रसिक माँग है,  
 था, इस यौवन रूपी फूल के रस को प्राप्त कर। ( ५ ) नेत्रों में  
 प्रकार अध्रुवपां हो रही हैं जैसे कि महावट हो रही हो, तेरे विशा  
 में बाणों के से घाव होते चले जाते हैं। ( ६ ) कर्मी कर्मा  
 समान गीतल बूँदें गिरती हैं पवन स्त्री विरह और माँ अज्ञों को  
 बनाये टालता है। तुम्हारी अनुपस्थिति में कौन शङ्कर करे और  
 रंगमी वस्त्र धारण करे? गले में हार भी नहीं है, कारण यह कि  
 हार को सहने की शक्ति ही नहीं रह गई है, वह तो कृण होकर टाँट  
 समान हो रही है।

बोहो ( ११ ) शब्दार्थ—धनिहिया = स्त्री का हृदय। तिनग =  
 तिनकों का समूह। डोल = हिल-डुल कर, उडउड़ा कर। चहँ = चाहता  
 है। काल = राख, भस्म।

शब्दार्थ—हे पति, तुम्हारी अनुपस्थिति में मुक्त अवनता का हृदय  
 काँप रहा है, और जिस प्रकार कि तिनके उड़ कर इकट्ठे हो जाते हैं,  
 निनकों का ढेर लग जाना है उसी प्रकार यह शरीर भी हलके [ सूते ]  
 निनकों के ढेर के समान हो गया है, उस पर भी आफन यह है कि वि-  
 दय तिनकों के ढेर [ शरीर ] को जला, भस्म कर उड़ा देना चाहता है।

शब्दार्थ—बहा = चलने लगा। माँट = गाँत। जय पियर पतन =  
 जैसा कि पीला पत्ता होना है। देह भकमोरा = भकमोरे देता है, पका



चौद ... उजियारा = ब्रह्मा ने मुझे चन्द्रमा के समान इस सत्सार में प्रवर्तीर्ण किया ( भेजा ) । जिस प्रकार चन्द्रमा में कलंक होते हुए वह सत्सार को प्रकाश और प्रसन्नता देता है उसी प्रकार मुझ में एक नैन का कलंक होते हुए भी मुझने सत्सार को ज्ञान और प्रसन्नता मिलेगी ।

जग सूक्ता ... माशों । कवि मलिक मुहम्मद कहते हैं कि एक नेत्र में ही उनको नव संसार दिखाई पड़ता है । जिन प्रकार शुक्राचार्य के एक नेत्र होते हुए भी उनके न न रा तारा सब तारों में अधिक प्रकाश देता है, उसी प्रकार वे एकनेत्र होते हुए भी संसार को ज्ञान का प्रकाश देंगे ।

नोट—शुक्राचार्य द्वैतदर्शन के गुरु थे । वामनावतार में जब भगवान् ने राजा बलि से तीन पैंड धरती का दान माँगा था तब गुरु शुक्राचार्य ने राजा बलि को इस दान के देने से रोका था । जब राजा कहने से नहीं माने तब शुक्राचार्य जी, जिस झारी से से मक्खर के लिए जल डाला जाने वाला था उसमें पैंड गए और पानी रुक गया । भगवान् ने पानी निकालने के लिए झारी की टोंटी में कुल डाला । उसी से शुक्राचार्य की आँख फूट गई । शुक्र का ताग प्रातः काल के समय उदय होता है और वह बहुत चमकदार होता है ।

अबहि = ध्यान में । डान = नजरी । नजरी में छेद ही छेद होते हैं । कवि अपनी कुरूपता के सम्यन्ध में यह बतलाना चाहता है कि जिस प्रकार ध्यान में जब तक नजरी नहीं लगती है तब तक उसमें सुगंध नहीं निकलती है उसी प्रकार मनुष्य में जब तक छिद्र और दोष नहीं होते हैं तब उसमें गुण भी नहीं होते ।

कोन्ह ... अपारा = ननुद का जल यदि खारा है तो उसी के साथ वह अधाह और अपार भी है ।

जो सुनेर ... प्रकाश = सुनेर पर्वत के पंच त्रिशूल से काटे गए, उसी के कारण वह सोने का हुआ और अपनी उँचाई ने आकाश तक पहुँच गया ।

दोहा [ १२ ] शब्दार्थः—झार कै = भस्म करके । मरु  
सम्भव है । तेहि मारग = उस मार्ग से ।

छन्दार्थः—इस शरीर को जला कर राख करके पवन से  
इसे उड़ा लेजा, सम्भव है यह राख उड़ कर उस मार्ग पर  
पड़े, जहाँ कि कभी प्रीतम के पैर पड़ेगे ।

शब्दार्थः—वसन्ता = वसन्त ऋतु । धमारी = स्त्रियों के गाने  
नाच । मोहि लेखे = मेरे हेतु । मेरी समझ मे तो । पचम = कोकिल  
स्वर या पंचम राग [ वसन्त पंचमी माघ मे ही हो जाती है ।  
पंचमी का अर्थ नहीं कर सकते ] पंचसर = पाँच वाण, कामदेव के वा  
कहे जाते हैं, वह फूलों के होते हैं । सगरी = सम्पूर्ण, सारा । पत्ते  
पत्ते । मजीठ = वृक्ष विशेष । बौरे = फूलने लगे । फरै = फलने लगे  
सभागो = सौभाग्यवान्, प्रसंगवश 'अभागो' शब्द कहा जाना चाहिए  
पर उसका काम विपरीत-लक्ष्यों द्वारा 'सभागो' शब्द से लिया गया  
अर्थात् तुम सौभाग्यवान् हो फिर ऐसा सुअवसर खोकर अपने को  
क्यों ग्रामाणित करना चाहते हो ? 'अभागो' न कह कर 'सभागो' इस  
कारण भी कहा गया कि कोई भी पतिव्रता स्त्री अपने पति को दुर्वचनों  
द्वारा सम्बोधित नहीं कर सकती । सहभाव = हजारों तरह से, अन  
प्रकार से अर्थात् अनेक प्रकार की । मधुकर = भ्रमर, तात्पर्य है प्रेमियों ने  
सँवरि = स्मरण करके । मालती = लता-विशेष जिसका फूल बहुत ही  
सुगन्धपूर्ण होता है, यहाँ तात्पर्य प्रेमिकाओं से भी हो सकता है ।  
चीटे = चीउटे ।

छन्दार्थः—[ १ ] चैत मास मे वसन्त-ऋतु भी आ गई, चारों ओर  
धमार गाई जा रही है, पर मेरे लिए तो ससार ऊजड़ ही है । [ २ ]  
कोकिल के स्वर अथवा पचम स्वर मे गाए जाने वाले गान को सुन कर  
ऐसा प्रतीत होता है जैसे विरह अर्थात् कामदेव अपने पाँचों वाण भर

हा हैं, उनके धारों से निकल कर रक्त सभी वन को आप्लावित किये  
 गलता है। [ ३ ] उस रक्त-धार में सभी पेड़ों के पत्ते डूबने लगे, नन्म-  
 ल इन्हीं लिए नये पत्तों का रंग लाल होता है। रक्त में भीग कर मजीठ  
 भी लाल हो गई है, और वन में देखू [ टाक के फूल ] भी लाल हो रहे  
 हैं। [ ४ ] और से लड़े हुए आम फलने लगे, हे नौभाग्यवान् [ चमत्कार ]  
 पति अब भी वर को लौट आओ। हजारों प्रकार की वनस्पतियाँ फूल रही  
 हैं। अमर मालती की याद कर घूमते फिर रहे हैं, अथवा प्रेमिकाओं की  
 याद में प्रेमी इधर-उधर चक्कर लगा रहे हैं। [ ५ ] मेरे लिए सभी  
 फूल काँटों जैसे दुःस्वभावी हो रहे हैं अथवा सभी सुख दुःख में परिणत  
 हो गये हैं, उन फूलों पर अब दृष्टि पड़ती है तो वह ऐसे लगते हैं जैसे  
 कि बिछड़े बिपट गये हों।

श्लोक [ १३ ] शब्दार्थ.—विरिणि परेवा = गिरहवाज् कवृत्तर या  
 कोटिस्ता पर्वा । न रि = [ १ ] स्त्री [ २ ] नाडी ।

द्वन्द्वार्थ.—हे पति गिरहवाज् कवृत्तर बनकर शीघ्र ही आ जाओ,  
 तुम्हारे बिना मेरे तो पर टूट गये, क्लेश हो गई है। मेरी नाडी दूसरे  
 के हाथ में है ( अर्थात् लोग इस आशङ्का में कि कहीं मेरे शरीर न टूट  
 जाय मेरी नाडी हाथ में लिए बैठे रहने दें ) अथवा मैं ( तुम्हारी रीति )  
 दूसरे के हाथ में ( कामदेव के हाथ में ) पड़ी हूँ तुम्हारे बिना आप  
 शरीर भी नहीं टूट सकते अथवा मैं इन क्लेश में दुःखी बन रही  
 हूँ मरती ।

जो कि जल आग आदि जला इतने हैं, पर अपनी अतिमिति  
 एवं न मृत्तुता की भाँति हैं। अग्नि, जल, वायु, आदि  
 सब, इसी भाँति हैं। अतएव यदि हम जल पर जल डालें, तो वह जल  
 जागा, जल मरता है। इसी भाँति जल के आगे जो जल  
 पड़ा, वह जल मर कर पक जाता है।

—इति शब्द — [ १ ] अग्निको जल से जल आग, जल प्रकृति  
 लगी, जो आग और जल न मरता। जो जल आग में जल और  
 जलाने वाले हो गये हैं। जल आग में जल आग ही और  
 की ओर लटका जा रहा है, इस कारण कि प्रकृति जल में  
 बुझा सके। उसके स्थान पर फिर की जल में जल और जल  
 होकर दिया है, [ २ ] इति । इस जल आग से भरी रज करी, मैं  
 के बीच जल रहा है, आकर इतने बुझाये। [ ३ ] अपने दूसरे  
 को अर्थात् मुक्त करवा दो शांत करें, शांतता पहुँचाये,  
 आग को अर्थात् आगवन कुलवारी को कुलवारी बनादो, फिर  
 करदो, जिससे कि पूर्ववत् सुनदायिनी हो जावे। [ ४ ] में जलने  
 और ऐसी जलने लगी है, जैसे कि भाँड जलता है। यद्यपि जिस  
 बालू भाँड को बरान्न जलाती है फिर भी वह उसे नहीं जलाती  
 उसी प्रकार यद्यपि दरवाजा मुझे बार-बार जलाना है फिर भी उसे  
 नहीं सकती। सम्भव है देखने को बार-बार दाढ़ कर द्वार तक आती  
 है। ( ५ ) बालू पर बैठना नहा छुँडती। यद्यपि वह मुझे अति ही जल  
 गमियों में तालाब घट गाने है उसी प्रकार हृदय का सरोवर घटता जा  
 है, और सूँघने पर जैसे कि दाँत तालाब में पड़ती जाती है वैसे ही  
 द्वारे पड़कर हृदय फटा जाता है। ( ६ ) हे पति इन फटते हुए हृदय के  
 ओक लो, अपने दृष्टि की वर्षा करके मिलाकर एक करदो। जिस प्रकार









कोन सो पर १३० सोगी १३ कि प्रियाम पापिम मोटेगा । [ १ ]  
 के म्नेह में जल-जल कर होया सोगे २, शरीर में एक मोटे  
 भास नही रह गया है । [ २ ] शरीर में रह कर नाम नक भी न  
 निरह के कारण नारा शरीर में जल गया ३ और ४ नों न  
 थोड़ा-थोड़ा करके । रही एक ग्राम्, उन कर ग्राम् के नाम में  
 निकल गया है । परों पड़नी टुटे और हाथ मोड़नी टुटे आरक  
 बिनय करती है कि दे नाथ, जगत् टुप म्नेह को आकर छि श  
 कर दो ।

शेष [ १० ] शब्दाथः—कौज = कौक कर । वृन्दनिर्गो  
 निकली, पड़ने लगी ।

वृन्दार्थः—वह स्त्री नागमती एक वर्ष रो-रो कर अन्तन न  
 बहुत ही कौसती हुई थक कर रह गई । वर-वर अपने पति के वि-  
 मनुष्यों से पूछ कर अब पत्तियों से पड़ने लगी ।

नोट.—नागमती—न्यगड का उपर्युक्त स्थल बहुत झलिन है  
 कारण यहाँ प्रत्येक शब्द का अर्थ विन्मृत रूप में दे दिया गया है  
 इससे आगे उसी पूर्व-वर्ती शैली का अनुसरण किया जायगा ।

पुद्धार = मोर अथवा पड़ने वाली । चिलवाँसू = चिट्ठा  
 का एक फन्दा । होइ तर वान = तीव्रण तीर बनकर । जो  
 है काग अगर नेरा प्रियतम आता हो तो उडजा । ( इस प्रकार उड  
 से यदि कौआ उड जाता है तो किसी प्रिय के आने का शुभ सूच  
 सनमा जाता है ) । हारिल = (१) धकी टुडे, (२) एक पत्नी-विहे  
 धोरी = (१) मक्के (२) एक पत्नी । पडुक = (१) पीली (२) एक पत्नी  
 चितरोन्व = चित्त में क्रोध (२) एक पत्नी । वया = लवा पत्नी  
 कंठलवा = गले से लगनेवाला । करे मेराव = मिलावे, मेल करावे  
 गौरवा = (१) गौरव-युक्त (२) गौरवा पत्नी । महरि = एक पत्नी  
 धि = (१) वही (२) जलाई । पेड = पेड पर । जल = जलमें । तिबल



यदि वहाँ यह चतुर्णें होती तो जिसका उन्में प्रभाव है  
वापिस लोट आता और लोट आर पपीड़ा के मोड़ने से ली  
घिराविला को आद हो आती और यह वापिस लोट आता,  
वापिस आया नहीं । इसमें प्रतीत होता है कि वहाँ न तो यह  
होती है और न यह पपीड़ी मोड़ने में ।

विहगम = पड़ी । दाढ़े सब पाणी = सब पक्षियों को  
है । केहि दुःख ... आनी = होन्या ऐसा दुःख है जिसके कारण  
को मोती तक नहीं । कारन कै = कारण काहे । तो ...  
पति से वियुक्त है वह कैसे सोमरनी है ? मन ... मोरे = मेरे मन,  
चित्त से उसका ध्यान नहीं उतरता, अतः गिन्य रोती रहती है ।  
का जल समाप्त नहीं होता है । जेहि ... सीपा = जिस त्वाति  
हित नेत्र सीपी हो रहे हैं । निमरा = निरुल गया, बरबाद होइ  
सो = वह । नाहू = स्वामी । तबहुँत = तबसे । निति = निम्न  
निजवात = मेरी बात । विहगम = हे पड़ी [सन्बोधन] ।

[ दोहा २० ] चारिउ चक्र = चारों दिशाओं । कोई ... टेढ़ =  
सन्देश लाने अथवा ले जाने का भार कोई अपने ऊपर नहीं लेता है ।  
दंड = दण्ड, पल ।

बीरा = भाई । लागै परपीरा = दूसरे की पीड़ा का अनुभव कर सक  
होइभिऊँ = भीम बन कर [इशारा है बक-सहार की बटना की ओर] ।  
दाहा = दूसरे का दुःख । अँगवै = अँग पर महे । चाहा = खर । किल  
= किकरी, चेरी । नआइ समेटा = याकर एकत्र न किया । ब्रैसिंगी पूरी =  
उसने नरसिंगा बनाया । ओहिकेरी = उसकी । पाँवरि = पनहीं, जूता ।  
सँवरत = स्मरण काने-करते । भइ माला = यह माला के समान अन  
अस्थिर और बेचैन । अबहुँ न बहुरा = अबभी न लौटा । उड़िया  
झाला = मेरे शरीर की साल तक उड़ गई अथवा वह झाल ओढ़ कर गया ।

सह ... जीया = विश्व मेरा गुरु है और हृदय रूपी खप्पर मेरे पास है  
 और मेरा प्राण पवन के आधार पर टिका हुआ है ।

[ दोहा २१ ] किंगरी = सारंगी, चिकारा । ताति = सारंगी पर  
 झाँके जाने वाली चर्म-रज्जु । धुनि = रावद । रोवै = रोम ।

कहेहु = तुम कहना । करि संगम = सयोग प्राप्त कर । तू ...  
 शता । हे मेरे प्रिय को हरने वाली, तू मेरे घरको घालने वाली नष्ट करने  
 वाली हुई अथवा तू उसके घर की गृहिणी बन गई । चरता = चत, उप-  
 शम । रावद कनक = स्वर्ण निर्मित महल । तो कहै = तुम्हारे । लक =  
 बड़ती हुई लका के तनान । दुन्द = दन्द । पूरा = भर दिया । आपुहि ...  
 जीऊ = यह जान रख कि तूने दूसरे के जीव को अपने कंज में कर  
 लिया है । नपा = दया । करुजिउ फेता = जीव को लौटा दे । कन्त देइ  
 मेा = स्वामी से निलाकर । बारी = हे वाला अथवा हे नादान स्त्री ।  
 मेह ... हारी = दम लाने नजर भर कर देखने वाली हूँ—यह  
 प्रेमिलापा है कि उमे देखती भर रहूँ, मुझे भोग-विलास की लालसा नहीं ।

[ दोहा २२ ] सवति = हे सपत्नी । नहोति = मत हो । जेहि हाथ =  
 जिसके हाथ में है, वश मे है । तोर ... माथ = तेरे चरणों पर अपना  
 निर रखती हूँ ।

कै = की । माइ = माता । सुरमती = सरस्वती । गोरीचंद जल  
 मैतावती = जैसे गोपीचन्द की माता मैतावती थी । साधरि = अधी ।  
 वृद्धि = वृद्धा । जीवन ... जीव = मेरा जीवन-स्वरूप रखनेवाला अथवा  
 जीवन का स्व स्वरूप रखनेवाला जान करने वाला । जीया  
 कड़ी = उसने तो प्राण ही निकाल लिया । देख ... अधर-स्नान । पद को  
 बुझाये की लकड़ी कहा जाता है । न ... वश है ... न के प्राण मे  
 दीयता है और न पुत्र की शत्रुता से के पाला घर मे उदक ही उल्लस  
 है । अधिचार = अधेता । सरयन = धनसुखाना घर पर रहने वाला  
 है । इनके माता-पिता अधे थे । यह उनका स्व स्वभाव था ।

नोट—पुराणों में कहा है कि पहले पर्वत चिडियों की भाँति उड़ने लगे थे और जहाँ बैठ जाते थे वहाँ की खेती बनी की चौपट काट दी गयी थी। इन्द्र ने पहाड़ों के पर काट डाले। तभी से यह प्रचलत हुआ। मयूर पहले सुमेरु पर्वत के पर काटे गए थे। पर काट जाने के बढ़ते में उनमें अंग सोने का हो गया था। मलिक मुद्गसूत जायसी ने यत्र के स्थान पर त्रिशूल लिख दिया। जायसी ने और भी कई स्थानों में शिव और इन्द्र की विभूति को एक कर दिया है। कैलास पर अप्सराओं का वास कराया है।

जो लहि घरी.....कग = जब तक रुचा सोना घरिया की कालिन् में नहीं पड़ता है तब तक उनमें शुद्ध सोने का जैसा तेज नहीं आता है मनुष्य में जब तक कोई दोष नहीं आता तब तक उसके गुण प्रस्फुटित नहीं होते।

एक नयन.....चाउ = मेरी एक आँख वर्ण के समान निर्मल है उसमें संसार का शुद्ध प्रतिबिम्ब जैसा का तैसा दिखलाई पड़ता है। चाहे कुरूप सही, किन्तु सब रूपवान् लोग मेरे पैर पकड़ कर मेरे मुख की ओर देखते हैं। अर्थात् मुझसे ज्ञान और आशीर्वाद चाहते हैं। 'मुनि जो वहि' का शाब्दिक अर्थ तो मुनि देखना है कि तु आलङ्कारिक अर्थ है मुख की पेची होना अर्थात् कुढ़ चाहना। कवि ने इस वाक्यांश का बहुत अच्छा प्रयोग किया है। जैसे लोग काने का मुँह नहीं देखना चाहते किन्तु जायसी के गुण के कारण सब लोग उसका मुँह ताकते हैं।

नोट—कवि ने अपना भौतिक दोष छिपाया नहीं है वरन् उसमें बेचड़क हो उसका वर्णन किया है और दोष को ही गुण माना है और इस बात को उदाहरणों से प्रमाणित किया है कि बिना दोषों के गुण नहीं रहते। कहा जाता है कि कोई राजा उनके कुरूप को देखकर हँसता था। उन्होंने कहा कि 'मोहि का हँससि कि कोहरहि' अर्थात् मुझे देख कर क्यों हँसते हो कुन्हार ( मेरे बनाने वाले ) पर हँसो ( यदि हँसना तो )

यहाँ तक कि काँवरि बनाकर उसमें उन्हें रखकर ताँप कराने । एक बार जब रात्रि का अंधकार हो चुका था यह नदी में उतर गये । कल-कलगन्ध सुनकर राजा दण्डवत् ने—नो आम्नेट हाथी समझकर इन पर तीर छोड़ दिया, जिससे इनकी मृत्यु ज्ञात होने पर वृद्ध तथा अंधे माता-पिता ने दण्डवत् को यह शाप कि जिस दुःख से पीड़ित हो हम मर रहे हैं उसी में मृत हो मरना पड़े । हुआ भी ऐसा ही । मरने से पूर्व यह कथा कौशल्या ने कही थी तथा वाल्मीकि रामायण में वर्णित है । का तात्पर्य स्वप्न से है, जो कि अपनी माता का डीक उसी प्रकार था जैसे श्रमणकुमार अपने माता-पिता का । डाँऊ = स्थान । टेक पाँऊ = जोकि इस शरीर का आधार हो और दृढत्व-पूर्वक मेव कर सगरी सिंघला = समस्त सिंहल-द्वीप में । दाधे = जला दिये । नियर = निकट जा पहुँचा ।

( दोहा २३ ) समुद्रतीर = समुद्र के किनारे । तेड रुन = वृद्ध पर । जौलगि = जवतक ।

अहेरा = आम्नेट, शिकार । कीन्ह = फेंका = उसी वृद्ध के जा पहुँचा । विरिद्ध = वृद्ध । तीग = किनारे । उतग = ऊँचा । गँभीरा = गहरी छाया । तुरग = घोडा । लाग ..... भाग्या = पत्नी । भापा सुनने लगा । अहा = था । पृछहि = सामा = सभी पत्नी उस उमका नाम पृछने दे तथा कहने दे कि हे मित्र, यह बतलाओ कि जाले ( सामा = ग्राम ) क्यों हो गये ।

( दोहा २४ ) अहि नाँव = उसका नाम । दाढे = जल गये । नियरा = निरला । सुन = शून्य, राजा-विहीन, शोभाहीन । राजा = भुंघ ( वृद्ध ) उट गयी है अथवा अन्धकार छाया हुआ है । कोठल बानी = कोयल के रँग की अर्थात् काली होगई है । अयनगि अयनक । भट्टे होइहि छाग = राख होगई होगी । भारा = अग्नि, ल









पर व राजा का गया पनि और परमेश्वर की इच्छा सिद्ध  
किया गया और दोनों उपायों का नरान निरान्त ही मशीन है।

( दो० ३१ ) पना कादि = फलित ज्योतिष की पुस्तक  
कर । गवन दिन = ग्रन्थान का दिन । रोन ... चाल = कि  
ग्रन्थान लिया जाये । मोंर = म.मने ।

चालू = चलना, ग्रन्थान । परी ... कालू = काल प्रवा  
समय घटी नहीं देवता ( वेम ही जमाना भी समय कुपमव  
तभी तो जम और जमाटे एक रह गये हैं ) । कोउन टेक =  
रोकता । गुरेरा = साक्षान, देवा देवी । जय ... दौड =  
स्पष्ट है यही यह भी व्यक्तित है कि मरने पर लोग म्मशान  
कर लौट जाते हैं तो बट को साथ में अपने ही कर्म अर्म्म  
गवन मव राजा = गाने का सामान, दायज । उहै ... राजा =  
कि वही राजा दे मरना था । कादि ... जोती = भावदार में  
कर रथों में भरवा दिये ।

( दो० ३२ ) लंगनी = कलम । लागि जो लेने = निम्न  
हिसाब लगाने लगे । अरबुद = ग्रन्थों । करोरि = करोड़ । ( यहाँ  
का क्रम ठीक नहीं बना ) ।

योहिन = जहाज । दिस्ट = दृष्टि । न थानी = न लाकर । ते  
बाउ = बाण । आधी उत्तराही = आधी उमड़ आते । उलथाना =  
उल्टे लित और विस्तृत हो गया । भुलापथ = मर्यादा छोड़ बैठा ।  
नियराना = आकाश निकट था गया, सरग दिवाई दे गया ।  
कँची वे लहरें । ताके = की और । भण कुपथ = मार्ग विगट  
लक दिसि हाँके = लका की और चल दिये । नया नहि सेवा =  
की रोक नहीं मानते । भण पारा = राजा-रानी एक-एक तरफ  
गये और एक दूसरे से दियुड़ गये । बाटा = मार्ग ।



—मुझे खी समझकर अपनी सार बात मुझमें कह दे। मैं जो सारी कथा समझ सकूँगी—यह भाव ।

( दो० ३५ ) आगर = बड़ा-बड़ा । लागि .. मोर = मोर, बहुत प्रभाव पड़ रहा है । केहि .. नागरी = हे चतुरा वृक्ष की रहने वाली है । काह = क्या । धनि = हे श्री । तोर = तेरा ।

नैन पसारि = नजर फैला कर । देख = देखा । धन चर्ता = ने चेतन होकर । आपन = अपना । तहाँ = उस स्थान पर । तुह हों कहाँ = तुम कौन हो और मैं कहाँ आगई हूँ । जो जिसको विधाता ने सुमेरु के समान गौरव सम्पन्न बनाया है । उन्होंने कहा । ऐस .. अही = न जाने ऐसी अवस्था तुम्हारी थी । सँवरि बिछोह = वियोग का स्मरण कर । मुरझि = मूर्च्छित का उरि = बावली ।

( दो० ३६ ) जो कि बनी बिगड़ी सभी का मार्ग है और सदा साथ निवाह सकता है उस प्रियतम की प्राप्ति अर्थ यदि जलाना पड़े तो भी हे जीव उसे भेंटकर चाहे जल भले ही जाय ।

सती होइ कँ = मती होने को । उवारा = खोला । मन मारा = ऐसा जान पड़ा मानो बिजली ने बादल में घाव कर दिया ( केँगों के बीच में उसकी मोंग की गोभा पर यहाँ उल्लेख की गई लाई = लगाई गई । के = की । छट गेटे = वह मोंग निमों पिरोये हुए थे छट गेटे और मोती झट पड़े तो ऐसा जान पड़ा मानो जल का वास्त्राव गंगही हा ( झटने हुए मोतियों को सब ओम् रूपा गया है ) । बिछाह = वियोग । मर = मरा की झड़ी । महर केँ = भर-भर गज्ज करने हुए । बग = तला । कतक = सब अगिनि मोंग = अग्नि मोंगती है । पाहुन कोट्टे = वे सब अनिवि समझकर पानी देना और उसकी हवा करती है । राख म्यामी । केहि बा = किस बल पर । मरी = मरने ।



है। रहा .... पूजी = मुझ से भी श्रव रहा नहीं जाता, होता है कि आयु समाप्त हुई जा रही है।

( दो० ३६ ) दुग्ध माँ कै = प्रीतम से मिलकर दुग्ध पड़ता है। सुग्न .... कोट्ट = कोट्टे सुग्न से न मोया, किसी के प्राप्त न हुआ। एही .... होट्ट = बस इमी स्थल अथवा विषय मन भयभीत होता है कि कहीं मिलकर वियोग न हो जाय।

गौड महलावा = गर्दन पर रक्खी। पाप शत्र घटा = मेरे मि भारी पाप घटना चाहता हूँ। बाग्हन ..... परगट = समुद्र वेश में आ उपस्थित हुआ। टुचादम = टादण, बारह। कनक सोने की छड़ी। सुशान्धवन = कान में कुण्डल धारण दिने कोंवे = कंधे पर। तर = नीचे। पाँवरि = सडाऊँ। कनक स्वर्ण की तथा जटाऊ। पाऊँ = पाँव में। आइ तेहि ठाऊँ = इस पर आकर। अपवाता = आत्मवात। कहसि .... वाता = हे कुमार मुझसे सच्ची बात कह दो, ठीक ठीक कारण बता दो। परियाई श्रियाविश।

मरहसि = मर रहा है। कौनिऊ = किसी भी प्रकार लाजा = लज्जा। बेहिकाज = क्यों।

( दो० ४० ) जिनि .... लावसि = गर्दन पर कटार मत मत मन आप = अपने मन में।

को .... भोंडे = हे ब्राह्मण, तुम्हें उत्तर कौन दे ? बोलेगा तो मैं न जिसके शरीर में जीव होगा। मैं तो सुदा हूँ, भला तुम्हारी बात क्या जवाब दूँ—यह भव। केर = का। कात न छाता = करते शोभा देता था, मुझ जैसे के योग्य कार्य न था। तान्दर वरी = राश्ट्र कन्या। निरमर = निर्मल, उज्ज्वल। बोहिन = जहान। तग = मरिचो ओती = उत्तनी। यहल = यैल। कुँवरि = राजकुमारियाँ, सुदामा





विशेष—दशवें दोहे के बाद कवि ने चार मित्रों का वर्णन किया है।

नीत = मित्र । जोरि... पहुँचाए = उनसे मित्रता जोड़ कर अपने को उनकी बराबरी का बर लिया । भेद बात = मर्म की बात, आध्यात्मिक रहस्य । भति माहो = बुद्धिमान ।

जोड़े दान ... बाहों = उसकी दोनों बाहों तलवार चलाने और दान देने के दोनों कन्धों में लगी रहती हैं ।

बरियारू = बलवान, जबरदस्त । दौर ... जुझारू = रणभूँच में धीर और तलवार से लड़ने वाले ।

लेख बड़े ... माना = श्रेष्ठ बड़े सुनूँचे हुए गिने जाते थे । उबका आदेश ( अर्थात् हुक्म ) पावन कर निद्र लोग भी अपने को बड़े अर्थात् गौरवान्वित मनभने थे ।

चतुरदस्ता = चौदह । रुन = विद्या । चौदह विधाएँ दस्त प्रकार हैं — चार वेद, दैवे वेदान्त ( सिद्धांत ब्रह्म, ज्योतिष व्याकरण, निरुक्ति और छन्द ) पुराणा, नानाशास्त्र, न्याय धर्मशास्त्र । धा नशो... रहे = और दूसर ने तबोग बना ली नकी बनाया । यदने... इतिप्राय यह है कि युद्ध ऐसा तबोग... ली बना ली तो नरक में ऐसा तबोग नहीं जाता कि चार ऐसे बुद्धिमान प्रार्थना कर ही जायें कि सब नष्ट हो ।

भँवर होइ = भ्रमर की भाँति । यह बाप = पद्मावती जैसी  
 निरखत आइ = आकर देखते ही । दीठी = दिखाई दी  
 पीठी = सुख फेर कर खड़ा होगया । जौ ..... भित्तारी = यदि  
 मली स्त्री होती तो उसे छोड़कर महादेवजी भित्तारी क्यों हो  
 जायसी ने भूल की है और लक्ष्मी और महादेव का जोड़ा मान  
 धनि = पद्मावती के रूप में लक्ष्मी । आगे होइ = आगे  
 निछोई = स्नेह-रहित ( होकर ) ।

( दो० ४३ ) अब... .. जौउ = रोती रोती प्राण खो रही  
 सोइ = वही । भोजू = भोगी । खोजू = पता । मालति

पद्मावती से । फूल..... सोई = फूल तो वही है पर वैसी  
 है; जान पडती है कि तू पद्मावती है, पर वास्तव में है,  
 ओहि..... देऊँ = उसकी सुगंध पर प्राण निछोवर काता  
 ओहि..... जाऊँ = जहाँ वह मेरी मालती है वहाँ जाना चाहे  
 ले चलो । पानि..... पियासा = प्यासे मरते को पानी पिलाया,  
 प्यासे को प्रेमी से मिलाया । कँवल = कमल, पद्मावती । दरसा =  
 सूर = सूर्य रत्नसेन । सूरज . परसा = सूर्य ने कमल का  
 से स्पर्श किया, देखा ।

( दो० ४४ ) नैनन्ह .. मेढ = नेत्रों से उसके पैरों की

दी अथवा नेत्र जल से पैर पवार दिये । सुदामा चरित में दे  
 "पानी परात कौ हाथ छुयौ नहि,  
 नैननि के जल सौ पग धोये ।"

प्रसाद = कृपा । पाइउँ = पागई । जौ ... दोऊ = यदि हम दोनों  
 अपना सब कुछ गँवा कर जावें । जत = जितने । आथी = सम्पत्ति  
 भरन = भोगना । 'जो ... पाऊँ = इनका जो कुछ डूब गया है वह  
 दीजिए । जरी अमृत = जड़ी बूटी अथवा सजीवनी शक्ति वाला अमृत  
 छेरिकि = छिटक कर । कै = करके । आनी = लाकर ।



















जादूगर्नी लोना चमारी, जिसकी जान तात्रिक लोग सब भी बहुत मानते हैं। दोवरू = कामरूप देश। एक दिन \* \* \* लायै = (१) जब चाहे चन्द्रग्रहण करादे (२) चन्द्रन्मा रूप राजा पर किर्नी राहु रूप वैरी का आक्रमण करादे। यहाँ पद्मावती के कारण यादगाह की चढ़ाई का संकेत भी मिलता है।

राजगार = राज-द्वार, राजा के दरवाजे पर, राजा की संरक्षकता में टोना = जादू, जत्र मंत्र। ग्योज = तलाश।

पृष्ठ ६६

वानि = वर्य। पीतर अस्त = पीतल जैसा, अनत्य। रिमान = क्रुद्ध हुआ। निनारहु देखू = देत से निकाल दो। रौंचा = प्रसन्न। ग्यान \* \* \* विचारा = ज्ञान की दृष्टि से पद्मावती ने भविष्य का विचार किया। वेगि = रीति। हेकारा = दुलाया। लेहु उतारा = दानलो। बान्हन \* \* \* दोलाया = यहाँ तत्कालीन ब्राह्मणों की मनोवृत्ति का परिचय दिया गया है।

धौराहर = महल। ऐस \* \* \* अकारन = उन्होंने अर्थात् राघवचैतन तथा पद्मावती ने मन में यह न जाना कि बिजली आकाश में रहती है। न जाने कब सिर पर आ गिरे—यह भाव। उन्होंने यह न जाना कि इन्द्र क्या दुष्परिणाम हो सकता है। निरकलक = निष्कलक। ततवन = तत्परा। भयउ दीसा = पद्मावती के मुखचन्द्र को देख कर वह चकोर होकर उसकी ओर पकड़ कर देखता रह गया। पहिरे \* \* \* मारा = चन्द्रमा नक्षत्रों की माला धारण किये हुए है, पद्मावती हार पहने ऐसी जान पड़ती थी। कोरी = बीस अथवा करोड़। पवारा = फेंका। लेइ = साथ लेकर। उठा चो धि = धोखे चो धिया गई।

राघव बिजुरी मारा = राघव का यह हाल था जैसे कि उसे बिजली मार गई हो। धिनेनर = बे सुध। सैनार = होश।

दोखा = दोष पाप, कलंक। देखै धरै = देखता सो दौड़ें। चेतु =

मुहम्मद .... कित्त = कवि मुहम्मद कहते हैं कि वह चारों मित्रों से मिल कर एक मन के हो गये । जब इस ससार में ऐसा प्रेम निभ गया और वे एक साथ एक चित्त होकर रह सके तो फिर दूसरे लोक में भी उनका विशोह किसी प्रकार नहीं हो सकता अर्थात् वे एक ही साथ रहेंगे ।

ग्यारहवें दोहे के पश्चात् कवि अपने जन्म-स्थान तथा अपनी रचना के बारे में कहता है ।

धर्म-स्थान = पुण्य-स्थान, तीर्थ-स्थान । कवि कीन्ह बलान् = कवि ने अपनी कथा कही ।

औ . . . भजा = और पड़िन लोगों से घिनती की कि जो इस दूटा हो अर्थात् खराब हो उसको मन्हाल दीजिए और इसमें कुसनाकर अच्छी-अच्छी बातें मिला दीजिए । कवि अपने कवित्व के अभिमान नहीं करता ।

पृष्ठ ६—हो . . . टगा = मैं स्वयं पड़िन नहीं हूँ, मैं तो पड़ितों का अनुगामी अर्थात् पीछे चलने वाला हूँ । तबले पर लकड़ी की चाट मारकर कुछ कह चला हूँ । इसका यह अभिप्राय है कि जो कुछ मैंने कहा है वह ऐसा ही है जैसा कि तबले पर कोड़े दूसरा चोट मार दे और उसमें शब्द निकले । गुरुओं और पड़ितों का उपदेश लकड़ी की तरह है ।

हिय भँडार कूँजी = हृदय के भण्डार में चा सिद्धान्त-रूपी प्रमूख्य रत्न की पूँजी है उसको जीभ और तालू की कूँजी से खोला । तब कोई हृदय की बात कहता है तब जीभ और तालू का संयोग होता है । इस लिये जीभ और तालू को कुँजी बताया गया है । 'तालू' का ताजा भी हो सकता है । उस अर्थ में जीभ और तालू की कुँजी खेगी ।

... अमोजा = जो मैंने बोले बोले हैं ( अर्थात् जो कुछ





बना रहे अथवा जब तक सूर्य में प्रकाश है तब तक युग-युग आपका राज्य बना रहे । सूर = सूर्य । न पूजा = बगवती नहीं कर सकते । केहि सरिदेउं = किसने उमड़ी उपमा दूँ । मनि = मणि । अलग = अप्सरा । परगसा = प्रकाशित हुई । काँच ..... चढावा = काँच पाने योग्य भित्तारी ने जिनमे सोना पा लिया उसीकी इतनी बड़ाई कर डालते हैं कि सुमेरु पर चढा देते हैं । नाँव भित्तारि .... बाँधी = भित्तारी के नाम पर अर्थात् तुम्हे भित्तारी समझ तेरी जीभ मुँह में रहने ली गई है, काँच नहीं ली गई है । जगत उपराहीं = मसार ने ऊपर । सरि = बराबर । जो . . . विलसी = जो उनकी एक दासी को मीठा देनेवाले तो उसके लावण्य को देखकर तूभी नमक होकर गल जाय ।

चढ़ावै = चक्रवर्ती । जौ . . . कैलास = पद्मिनी अगर कहीं है तो मेरे यहाँ ही है और अप्सराएँ कैलास में हैं—भला चित्तौड़ में कहाँ से आई अप्सरा और पद्मिनी ?

अनु = हाँ, ठीक है । कहवावा = प्रसिद्ध हुआ । काय ..... व नी = चोखे सोने के जैसा उसका शरीर है । वासा = सुगंध ।

पृष्ठ १००

ओहि मभागा = उसे जिस सौभाग्यवान् वृद्ध ने स्पर्श कर लिया वही चन्दन होगया । चिनेर = चित्रकार । सयै . . . पारे = उसी आशय पर विहारी का यह दोहा दृष्टव्य है —

‘ लिखिन बैडि जाकी सविहि, गहि-गहि गरव गरुवर ।

भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ ”

मूरुन तरीर = सूर्य की किरणों की अपेक्षा उमका शरीर अधिक निर्मल है । साँह = सामने । नैनन्ह आवै नीर = चकाचाँध के कारण आँखों में पानी आजाता है ।

फूल . . . बेकरारा = फूल के छूने से बेचैन हो जाती है । विहारी ने भी कहा है:—





भूपति, गता । भोग... नरी = फिर भी तो सोड़े किसी की स्त्री का नहीं मर्गिता । जो रान = यदि वह चक्रवर्ती है तो अपने राज्य के लिए है अथवा राज्य उसके लिए है । मद्रि माजु = पर अपने वरको बचाने का सामान मेरा पन्थ भी है । गता = लाल । कैई = के प्रति । ऐस न बोलू = ऐसे बचन मन कटो । होइ जुड = गाल्व होकर । दोलू = हलचल । जरि = चलकर जुट होकर । बारा = देर । मूहि = सूर्यरूपी शून्धार का । चदन = आक्रमण करना । तपे = तेज विस्तार करता है ।

तासां = देने बलशाली से । उट्टु चिन उगवाम = ताम चित्तांड में बैठे राज्य करते रहो । यहाँ यह व्यन्य है कि यदि उसकी इच्छा की पूर्ति न की तो चित्तांड छोड़ना पड़ेगा । उपर = इससे भी अधिक । चंदेरी = एक राज्य ।

वगनि = गृहिणी स्त्री । जिउ न लद = चाह प्रारा ही क्यों न लेले । हो रनयँमउ स्नाह हम्मरु = राथमोर के स्वामी हम्मरु जमा ठेक मन्दे वाला मुझे समझो । कलपि = संकल्प के के । माथ = मन्मथ मित्र । मरुबंधा = साका चलाने वाला । राहु = राहु नश्वरी मरुंधी = मरुंधी, द्रोपदी ।

पृष्ठ १०२

हनुवत सरिम = हनुमान के समान हूँ । भार = बोझ गधव = राम । समुद = समुद्र । जीताका = विचार किया । भणहुं नाइ आडा = न मिट सका । जियत • श्रोहा = मिह के जीवित रहन उसकी नब्ब को कौन पकड़ सकता है, वीर के जीवित रहते उसका अपम न कान कर सकता है ।

दरव • जाउ = यदि वह सम्पत्ति चाहे तो देना मुझे स्वीकार है, मैं पैर पकड़ कर उसकी सेवा करने को तैयार हूँ, पर यदि वह पद्मिनी को लेना चाहता है तो कदापि न दूंगा । वह सिंहलद्वीप को वापिस



जोजन = योजन, चार कोस । पयान = प्रयाण, मकर । अगिलाह =  
मिलान = जहाँ से आगे के लोग चलते थे वहाँ पीछे वाले आकर रहते थे ।

हाथ हिय चाँपे = हाथ से हृदय आस लिये । दूँगाई पानी =  
चिट्टियाँ भेजती । मँडू = बाँध । काँधा = ऊपर उठा लिया है । पुग्गट  
साथ = साथ दो । नाहिनेँ .. चढ़ाई = नहीं तो सुन्दर स्थान में डींग डाल  
सकना है अर्थात् फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो मैं शकने ही दया नहीं,  
मन का परित्याग न करूँगा । सुख-सागा = सुख रूपी गंगा । दूटे =  
बाँध के टूट जाने पर । बारि = जल अथवा बारी, बगीचा ।

बीरा = पान का बीड़ा । चून = चुना । काय = कथा । यहाँ संगठन  
की ओर इंगारा किया है और कहा है कि पान, सुपारी, कथा और चून  
के संगठन से ही बीड़ा बनता है जो ऐसा रंग लाना है ।

राय = राजा । माह के सेवा = बादशाह की मातहतगी । पंग =  
पक्षी । इन = यहाँ । एज्जने = एज्जने करके ।

पृष्ठ १०४

गाड = मंष्ट । जाँहर = लड़ाई के समय की चिन्ता, जो रात में उस  
समय तैयार की जाती थी जब राजपूत बड़े भारी शत्रु से लड़ने निकलते  
थे और रात का समाचार पाने की स्त्रियाँ जिसमें हूट पड़ती थी । पंग  
के लम्बा = पंग का मा हात है । देतु रोग = आज्ञा दो किन्तु हिन्दुओं  
की ओर से नकर लड़ें । यंचु = समय । मीनु = शत्रु । माहा =  
प्रतापनामा = अभिलाषा की । गौग = कमी । योँ चाँदि योँदे = विद्व  
में विद्वत् । चिन्नक लीन्हा = डीक कर लिया । गानुर = अनुसर्ग ।  
न काँटी = पर्याप्त न लड़ें । येगुन = अगुन । रा = ये गयन = नगरी ।

न लेख नावे = निन्दा में नहीं लगना है । गयगु = गयगु । गयगु =  
जागी । गयगु = आकाश । का = उदा है । गयगु = गयगु । गयगु =  
निन्दित अन्तः । लो = गयगु । गयगु = गयगु । गयगु = गयगु ।  
गयगु = गयगु, गयगु ।



बिहानु = सवेरा । धावा = आक्रमण । गरेंरा = बेरा । चहुँफेग = चारों ओर से । छेँका = घेर लिया । गरगज = शुरु पर । कम्मने = तोपें । ओदरहिं = विदीर्ण होते हैं, टह जाते हैं । जाहिं सब पीसा = सब पिसे जाते हैं ।

रावट = महल । राट = आग । अजर = जग रहित अथवा बिना जला हुआ । राजगीर = राज लोग, मैमार । थवई = मकान बनाने वाले म्यपनि । सरग हुन = आकाश में । गाजा = वज्र । परलै = प्रलय । जूक = दुद ।  
पृष्ठ १०७

हिये न हारा = पन्त हिम्मत न हुआ । राजपौरि पर = राजद्वार पर । अखारा = नृत्यसभा । साँह = नामने । घन तारा = बड़ी मूर्त । पातुर वेस्यापु । भूला = तल्लीन, निमग्न, बेमुद्य ।

जहँवा..... दीठी = जिधर बादशाह की दृष्टि थी उसी ओर नामने । दीन्ह तहँ पीठी = बादशाह को ओर पीठ दिवलादी । गूँजा = क्रोधित होकर गरजा । कबलगि... भूजा = हे मृग अर्थात् मुन्दरी, चन्द्रमा अर्थात् राजा कब तक तुझे भोगेगा । छाड़हिं बान = बारा छोड़ दी । जहाँगीर कनउजकर राजा = यहाँ ऐतिहासिक अमंगति है । मरग = मर्ग । साँचा = शरीर । उटसा = उखट गया । नचनिमा = नर्तकी । नारा = ताली, दोनों हाथ पीटना ।

विशेष—तीसवे टोहे में जहाँ बादशाह के तेज का वर्णन है वहाँ ईश्वरीय शक्ति का आभास भी दिया गया है ।

वरिस = वर्ष । आड पाणु = चित्तोड में आकर सुलतान ने जो आम लगाये थे वह फल बर झड़ भी गये, पर चित्तोडगढ़ अब तक मर न किया जा सफा । जो तारा = बादशाह कहना है कि यदि मैं गढ़ को तोड़ता हूँ तो । जहँहर हाड = जहँहर नर का पालन कर सभी स्त्रियाँ जल मरेगी और साथ में यमराज भी जल मरेगा । तब ताई = हमी बीच में । शरदामे = शयनाण । दंगेव = देव-विशेष । पछिडे = पश्चिम





होकर । सपथ = शपथ, कसम । न..... मनमाना = हृदय में विरक्त  
 नहीं बैठता । सपथ बोल = शपथ-पूर्वक कहीं गई बात । कब  
 परवाँना = प्रानाणिक है । लंभ..... पहर = जिस पर्वत ने संभर  
 भारी भार को अपने सिर लिया है उसका वचन मिथ्या नहीं जा सकता ।  
 इतने भारी सुलतान की बात झूठ नहीं हो सकती । नाव जीवा =  
 नरजा ने कहा कि जो व्यक्ति किसी बात का भार अपने ऊपर लेकर  
 गर्दन रुकाता है, वह नीच है । नरजै ..... वर्माठ = नरजा ने दुःख  
 पूर्वक सीधी-सीधी बातें बनाकर शपथ की जिसे राजा ने विश्वास  
 लिया और दूत की बात को मान लिया । सोनहार = समुद्र का पानी ।  
 डाँडी = पालकी । काँड़ी = पिंजरा ।

पृष्ठ १०६

आनि मेरावा = लाकर देगी । जोरे ..... बानू = यदि अब मेरे  
 किले में आने पर वह किसी प्रकार की कुटिलता करेगा तो फिर उसके  
 सामने बाण होगा । काहू = क्रोध । छोहू = स्नेह, दया । देव = देवने  
 को । प्रीति रम हांड = प्रेम उत्पन्न हो । उत्परकार = जितने प्रहार की ।  
 माह ..... आनी = चादगाह को खिलाने के लिए वह सब लाई गई ।  
 गवना = गया । जेवा ..... बिहाना = दूसरे दिन सुबे ही राजा ने  
 भोजन किया । केवल ..... लीन्हा = सूर्य अर्थात् सुलतान ने अपने  
 मित्र कमल को अर्थात् राववचेतन को साथ ले लिया । मनने  
 अधिक = मन से भी अधिक गतिवाला । उधरि पँवरि = टांटा  
 सुलगई । निरमरा = निमेल । उरंठकरि = चिन्तित कर ।

पँवरिया = छौदीदाग । निन्द ..... करोरि = जिनके सामने  
 करोड़ों मुक़्तारों । कनक = सोने के । भँवरी = चक्कर । साती.....  
 नैवर = यहाँ दृष्ट्योग में वर्णित शरीर के आन्तरिक भाग का दर्शन दिया  
 है । पाँवर = एक ठम नाँचा ।





मात्रा = बिंदु पिंजड़े में बन्द हुआ। एक ब्राह्मण ने देखा कि एक पिंजड़े में बन्द है। उसे क्या आउं और उसने पिंजड़े को खोल दिया। पिंजड़े में गहर निकले ही मित्र ने ब्राह्मण को न्या जाना चाहा। ब्राह्मण देवता ने कहा कि तुम्हें भलाउं के बदले बुगड़े नहीं करनी चाहिए। उसमें एक गोड्डा आ पहुँचा। उसे पच बनाया गया। उसने कहा कि पच तुम जिस दशा में थे उन्हीं में आ जाओ तब तो मैं नासतों को समझूँ। यह सुन कर गेर चट से पिंजड़े में धुस गया और ब्राह्मण ने क्रोध से उसका ताला बन्द कर दिया। इस प्रकार छल का बदला बदल दिया गया।

राजेलोन\* \* \* \* \* गोन = उन्होंने राजा से अच्छी बात कही थी। उसके बदले में उन्हें वह सुनना पड़ा जो उन्हें नमक जैसा तीव्र लगा। वह क्रोधित हो अपने महल को लौट गये और उन्होंने नमक निरा कि अथ बिंदु बन्धन में आना चाहता है, राजा कैद होता चाहना है।

निसरीं = निकलीं। रायमुनी = पत्नी-विशेष। पींजरहुँत = पिंजड़ा से। परयमें जोवन = प्राथमिक यौवन, यौवन की प्रागल्भिक अवस्था। सारंग भौहें = धनुष जैसी भौहें। मारहिं\* \* \* ओही = वह नौह लगी धनुष को धुमा कर कटाक्ष रूपी बाण छोड़ रही हैं। हनहिं = मारती हैं। आगरि = बढ़ कर।

दीरवआउ = उमर दराज (अधिक) हो, 'उमर दराजे महाराज तेरी चाहिए'। पठारथ = रत्न। कहैं\* \* \* वाप्पी = वह स्तब्धी इनमें कहाँ है जिसके पास अमर रहता है। कहैं\* \* \* \* \* जोती = वह दीपक इनमें कहाँ है, जिसके प्रकाश पर पतङ्ग नर झिटका है?

पृष्ठ ११२

दिस्ति तरनावा = नीची नजर करली। पाहुन = महमान। पाहुन\* \* \* परदाही = महमान को चाहिये कि ऊपर की न देंगे। जेने अर्जुन ने नीचे दया देल कर मत्स्य-वेध किया था वैसे ही आपकी नी







बखाना = प्रचर फैल गई। उगारूँदा = संसार में आकर दूँ।  
 अवतार लिया अथवा पृथ्वी को नाप डाला। ममे = गिरे।  
 = निगल लिया। पतार = पाताल में।

दुहेली = दुर्ग। निर्वित = निश्चिन्त होकर। निरुदर =  
 से लौटना (बहुगना) न हों।

सो " " अचा = उन चौपाइयों में यह भी भाव है कि जो कड़े  
 लोठ गया वह लौट कर न आया और न वहाँ की कड़े नर ही  
 'यत्र गत्वा न निवर्त्तन्ते'।

विशोवा = डोडना है। लेत्रुरि = रस्सी, रज्जु। डारै = डल  
 है, बहाती है।

पृष्ठ ११६

विलपै = रोती है। नागा = नागमती। विरहा = कागा = उस  
 विरह की अग्नि से जलने से काँप काले पड़ गये। पलुहै = पल्लवि  
 हो, हराभरा हो। नागेसरि = नागमती। नचा = तप्त, दुर्ग  
 अव ..... यचा = अव में नागमती विरह-रूप-गर्ह से नहीं  
 सजती (गर्ह सर्प भजी होता है) चीन = चीण, कुश। नाह =  
 स्वामी।









फूल के निकट होते हुए भी दूर है क्योंकि उन दोनों का आदर्श भिन्न है।  
चौंटा गुड़ से दूर रहता हुआ भी उसकी गंध पाकर उसके निकट आ  
जाता है, क्योंकि उसमें गुण-ग्राहकता है। इसी बात का नीचे के दोहे  
एक और उदाहरण दिया जाता है।

भँवर.....पास = भँवर वन में रहता है किन्तु जल में रहने वाला  
कमल के पास पहुँच जाता है पर मँडक जल में रहता हुआ भी कमल का  
गंध से आकर्षित नहीं होता।

तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही कहा है।

विशेष.—तेरहवें दोहे के पश्चात् कथा का प्रारम्भ होता है।

वरनि = वर्णन करके।

निरमल... ..देखा = वह वर्णन विशेष निर्मल दर्पण के प्रति  
बिम्ब की भाँति है। जो जिस रूप का है उसे वही रूप दिना  
पड़ता है।

नोट—कवि कहता है कि उसने जो कुछ वर्णन किया है यथा  
वर्णन किया है। गेम्सपीयर ने भी कहा है कि कवि बाह्य प्रकृति का  
दर्पण दिना देता है ( The Poet holds the mirror to nature )

वनि में दीप सवारी = वह मिहलदीप अन्य है जहाँ की स्थिति  
दीपक के समान उज्ज्वल प्रकाश देने वाली है और ब्रह्मा ने जिस पदमिनी  
अर्थात् पद्मावती का वन या रह अन्य है। इसका अर्थ यह भी हो सकता  
है कि वह दीप अन्य है जहाँ विद्या न गति का उपलब्ध किया, उस  
रूप के दीपक का जलाया।

सुगन्धरेन् = अच्छी गंध वाला सम्भव है वह गंध का प्रेमी हो  
अथवा उसने ही स्वाभाविक गंध आनी हो। सो राजा .....देसू =  
विहलदीप का राजा है और वह उसका देश है।

बाहि = अंग्रेज

गहं = म्नेह रूप जल में सींचनी रहें • प्रेम रुगती रहें । तैरोग = ताम्बूल, पान ।

पृष्ठ १००

समार = समाल । वार = देर । भोग मानिलेह = भोग विलास करले । कवल न बिासा = पचावती प्रसन्न न हुं । मपुटरहा = कनी जैसी यनी ग्ही । प्रकाको = प्रकाश । पटाग = ग्गामी वल । पालक पीढं = पलंग पर मोचे । मट्टी = मच मचिया ( पर ) । यदि = कैड में । जामी = लगी । नुगनी = नुग्गाटे हुं । जेलहि ' ' ' पीड = जय तक यौवन है तब तक प्रियतम न यावन क रहने चाहे जितने चाहते वाले मिल जायेंगे ।

पुरुष ' ' हेग = पुरुष के साथ किसका प्रपन्न होना है । अगर एक छोड़ जाय तो दूसरे को नोजलिया । जीवन पगडा = जैसे जैसे धीरे धीरे यौवन रूपी जल कम होता जाना = कम या भेवर मिटने जाते हैं और उनके मिटने पर हंस प्राते हैं । ( वर्षा के बानने पर हम प्राते हैं ) तात्पर्य यह कि यौवन की वर्षा बानने ही मफद जल रूप हम आजायेंगे, बुढापा आजायगा । विरमि जो लान = जय हुं विलास और विषय भोग करलो । कालिंडि = यमुना । विरामी = विलासी । परामी = भागेगी । समुद्र = समुद्र को । विरिड गृहावन्था ने । कौनेकाजा = किस काम का । जां लागि कालिंडि परामी = जय तक कालिंदी या यमुना है विलास करलो फिर तो गंगा में मिलकर गंगा होकर समुद्र में दौड कर जाना पड़ेगा अर्थात् जय तक काले वालों वाला यौवन है तब तक विलास करले फिरतो सफेद वालों वाला बुढापा आवेगा और तब मृत्यु की ओर तुम्हें दौटना होगा । जीवन ' ' तोरा = इस समय यौवन-रूपी भौरा है—तेरे केश अमर जैसे काले हैं और फूल जैसा तेरा शरीर है । हाथ मरोरा = इस फूल को हाथ से मल देगा ।



कौवल = कौपल, किरालय । तरिवार = पेंड में । तोहि = तेरा  
 रात = लाल । रह लेहु रचि = भोग-विलास करलो । पुनि .....  
 = जब तक कि पत्ते पीले पड़े — वृद्धावस्था आ उपस्थित हो और सुख  
 सुख में जाने की तैयारी हो । उरहि = हृदय में । रँग . . . रँग  
 = मैं उसके कच्चे रंग को जला दूँ जो अपने रँग को छोड़ कर दूसरे  
 रँग में रँग जावे । दूसर = दूसरा । करै दुइ पाटा = दो मार्ग का  
 देता है, प्रेमियों में अन्तर डाल देता है । एक पाटा = एक मिहामन पर  
 जेहिकै = जिसकी । जीउ = हृदय । दिठ = दृष्ट । सँपरा = स्मरण  
 कर लिया अर्थात् हृदय में धारण कर लिया है । आदि करत = आदि  
 भरते हुए । कौनि रसोई = किस काम की यह रसोई ( भोजन ) है  
 जेहि . . . होई = जिसमें दूसरा प्रकार न हो, जो एक ही प्रकार की हो  
 बँट्या = बँट गया है । दूसर पुरुष = अन्य पुरुष का । तुइ = तुने  
 पगवा = दूसरे का ।

पृष्ठ १२२

धैमे = बड़े रहने से, बिना उद्योग के । जरे मरे विनु = बिना  
 उद्योग के ।

बनुक तो नैना = तों बनूँ जैमे नेत्र । विहोमि . . . आन =  
 यदि वे कमल अर्थात् पद्मावती, तू प्रगल्भा-परेक स्वीकार करके तो  
 नुस्खे एक प्रेमी को लाकर बिना रखती है ।

नहि धाँडे = चाय नहीं है । मणि चहावमि = मैं ऊपर काँचिया  
 बँटती है । निमल . . . मामा = मगर मैं जब निमल बनूँगी है,  
 तो उसमें स्थानी पर गाय तो बँट जाना हो जाता है । पान्दये यह कि  
 मैं निमल हूँ यदि लच्छ भी भूल जायें तो यह नहि मणि मणि जायगी ।  
 उरद प्रस = उरद प्रस होता है । पप भाँड दीया = पप भाँड में  
 दीया पलता । उरद प्रस = उरद प्रस ही दिखाने पड़ता है, मणि



उल्लेख है, जिसमें यदि कोई भी चीज मिलती है तो पथर होकर जाती है। मंगमणीज ने भी इसका उल्लेख किया है। गव्या = गौशयुक्त। मो.स. . . चीक = उस का चिन कैसे चिन नित हो म है। पेरा नेन = आंग का टगारा करने ही। चेनि मो = मो दधि, भद . . . पृटी = उन्होंने उस कुतब को इतना कूटा कि टाकी हो गई। लाई = लगायी। गदर = गधे पर।

मुमद . . . ऊके = उमि करता है कि विमान ने जितने गन्धी गुरान स पर बनाया है उ. स्या कोई फुंक का उम मकत जिसके न हारे ससार स्थिर है वह पवन के झुके से कैसे उड़ा सकता है ?

बाग = हार पर। मु. = पृथ्वी पर। तहाँ तमि = वहाँ तक। आरु = निकल आये। चरन र रज भाग = चरणों की धूल पर। आनि = लेकर। गगत = रगत, धन दिया। मोनवारी = मोने उादि . . . पानी = राज गंगा : कहीं बहने लगी, अन्होनी हो गई

जो . . . द्वाज = जो रत्ने-तु हैं जो भा नहीं देता है। ज = करे र-त = रक्त। पाय = पार्श्व = पृथ्वी। मंभ = मन्भ, स्तम्भ : ३ आधार। दरसा = वर्षा में दूध . . . माना = इस दुःख रूपदुःखी पताल तक पहुँच गई है और माना में जानाश में जा चुके तेह . . . बाढ़े = उन्नी दुःख की बाढ़ को लेकर वन में दूध बढ़े हैं। उवारे = खोलकर।

पृष्ठ १२४

दुहुमि पुरि = पृथ्वी भर गई है। सायर = नागर। कं केर = काढ़ी का। वेहरि = विदीर्ण होकर। हिय फाटा = हृदय फट गया दिया = दीप्त। क = का। बेहर दिया = मेरा पयाह दिदीर्ण न हुआ। वदि = क्रंद में। हों मुकराव = मैं वदिनी जाऊँ और अपने पति को वंद से मुक्त कराऊँ।





कोय = कलश में वैशा दुग्ध । विनाय = मन्त्र । यत्न =  
 पाठ = मोरी बातों में तुम्हारे पैरों में फलदा दान दिया है, वह वि-  
 शेष भी नहीं छोड़ना चाहती । प्रति = स्वा । गतासी = गतासि  
 भाषी = वीर रथ चलाता है । मरुत = मरुत । तत्र मुँह में  
 तप में सत्ता भी है । पेनी = देख दूँ गता मार दूँ । कोनिकै =  
 कलश । पुनः = काटू = जैसे कि हाथी का निकला दंत फिर से  
 नहीं घुम सकता ठगी प्रकार पुनः की कही बात भी पीछे नहीं  
 सरती क्योंकि पुनः की बात कदुण का मला नहीं है जो पीछे डर जा-  
 गुमार = बुद्ध । नाहो = स्वामी । जिउ कौनो = जी को कौन पर रख  
 आर्थात् प्राणों को हथेली पर रखकर ।

मैं बैठि = बैठ कर सलाह करते हैं। सो मगहीन = ऐसा मत वि  
करना चाहिए। परै नहिं भोग = जो कि शुल न जाय। राजा  
साजा = राजा से छल किया। जस = जैसा कि। तुरकन्ह = सुयत्न  
ने। तस = वंसा ही।

पुरुष.....काँटे = पुरुष वहाँ ही झूल से काम लेते हैं जहाँ क  
काँटे पार नहीं पा सकते । फूल के साथ फूल अर्थात् भले के साथ भले  
और काँटे के साथ काँटा अर्थात् बुरे के साथ बुरा बनना पड़ता है—  
'कण्टके नैव कण्टकम्' ।

चण्डोल = डोले, पालकियाँ । सँजोइलकै = सजा कर । बैठ .....  
 भानू = इसे सूर्य भी न जानता था कि उसमें पद्मावती के वस्त्र लोहा-  
 बिछाया गया है । ओहार = उधार, परदा । सुरंग = अच्छे रंग के चयन  
 लाल रंग के । लाए = लगाये गये । भूलहि = भ्रम में पड़ जाते हैं ।  
 भए सँग = साथ चले ।



अगमन होइ = आगे बढ़कर । सँकरे साथ = संकट के साथ, संकट में पड़ कर । मीचु = मृत्यु । भरी थौ भूँजी = भोग ली । आउ = आयु । पूजी = पूरी हो गई । बहुतन्ह = अनेकों को । मरौं जो जूझी = युद्ध करते-करते मर जाऊँ । जिनि रोण्ड = मत रोना । ममदि = मेरे कर, छाती ने लगाकर । मसि माँक = कागिना में । छपा = छिप गया । कारी = अंधकार, रात्रि । सँक = सन्ध्या । हँका = हुँकार दी । धौल गिरि = धवलगिरि के समान । अग न मोरा = पीठ न दिवाऊँगा । सोहिल = अगस्त्य नामक सितारा । दुगव = किला । मगत = रास्ता । ठाहौं = भार डालूँगा । सँकरे = संकट में । निवाहौं = साथ दूँगा ।

पृष्ठ १३०

मेड = बाँध । टेकों = रोक दूँ । रनवैड = रनवाँकुरा । अगन घटा = गादल की घटा छाई हो । मेघ करि = मेघ की कड़ी । डोलै नाहि = विचलित नहीं होता । देव जय आदी = निरान्त देव ( १-देवता २-राक्षस ) हुआ है । बादी = दिरोधी दुश्मन, शत्रु । हरदानी = हरद्वान ( स्थान-विशेष ) की बनी हुई । सेज = छाटी तलवार, बरछी । गीज कै पानी = जैसे कि उस पर बिजली का पानी चढ़ा हो । लोम = पीछे । गाना = गाते हुए । सीस जुनु बाना = मानो उसके सिर पर प्राकर लगे जाते हैं । इदू = चन्द्रमा । गोरै = गोराने । जग... .. पानी = मानो बिना शुण्ड का मदनस्त हाथी हो । पहिलि = प्रथम । डौनी = चढ़ाई । आवत आइ = आते आते ही । हाँकि = हुँकार ।

स्यौं = सहित । टूटहि = कट कट कर गिरते हैं । बरतर = बचव । हंड = टोप । तुरय = घोड़े । बगमेल = बाग का बाग से मिलना, निकट आकर युद्ध होना । भार ... .. काँधा = वह पहाड़ के जैसे थे और कंधे को हाथ पर लेकर—प्राणों को हथेली पर रख कर युद्ध करते । घाव मुख लागे = मुख पर घाव लगने पर भी । जेमे ... .. दे = ठीक उसी प्रकार वह बढ़ बढ़ कर प्राण देने लगे जैसे कि पत्नी







मोर । तेहि.....तमचूरु=मुर्गा उत्तकी बराबरी की इच्छा करता है-  
 नेर=निपटे । जूझ=युद्ध में काम आजावे । एकौ=  
 एकजे, द्वन्द्वयुद्ध । मोहि .. ..राजा=आओ हम तुन द्वन्द्वयुद्ध करें ।  
 राज=राजा ने । पावा दाँव=बदला लेकर । फिरा=लौटा । बोहै  
 सा=हथियार छोड़ दिने । कारी=कारगर, गहरा । भार परा  
 मैन बाट=राजा योद्धा की तरफ निर्जोब होकर बीच रास्ते में गिर गया ।  
 सौरी=छड़ी, वेत । नाटी=नुर्दा शरीर । परावा=दूतरे का ।

पृष्ठ १३४

नेगी=पाने वाले । हुत=धा । टिकठि=तल्ली, झरयी ।  
 जोरी=जोड़ी, सगिनी । छार=राख । बहुरि न आवौं=आवागमन  
 रहित होवजैगी । गेडै=की भोति । खाटा=तात्पर्य है चिता ने ।  
 गति देइ=शीघ्रता-पूर्वक । होइ अगूता=आगे । सूता=सोना ।

पृष्ठ १३५

जूड़=ठरही । बूड़=ढूँढ़ा । राम औ सीता=तात्पर्य है रत्नसेन  
 और पद्मावती से । पिरधनी=पृथ्वी । नूदी=छतार । इस्तिरी=  
 स्त्रियाँ । जोरी.....जेरी=इत कविता को मैंने रक्त की लेंई लगा-  
 कर जोड़ा है और भागी प्रीति को आमुजों से भिगो-भिगो कर गीली  
 किया है । चीहा=चिह्न, निशान । उपराजा=उत्पन्न की ।  
 केइ .. ..बैचा=फिलने ऐने हैं जिन्होंने रम लनार में सोई ले लिह  
 अपना यश नहीं खोया प्रधाव अनेक लोग ऐसे हैं ।



मार्गों की गाथा चलाई। कबीर ने ईश्वर को श्रद्धासिद्धि रूप देकर उपास्य बनाया चाहा और प्रेम-मार्गों कवियों ने श्रद्धासिद्धि कथाओं में ईश्वरवादी रहस्य के दर्शन कराए। उनका मूल माधुर्य में था, इस लिए वे कथाएँ अधिक आकर्षक हुईं। कबीर ने केवल इनकी मदद नहीं की कि कदवापन विषयों पर प्रेम-मार्गों कवियों ने स्वाभाविक मिठाई में ही रसायन उत्पन्न करवा दिया है। जायसी इन्हीं प्रेम-मार्गों कवियों में से हैं। प्रेम मार्ग की परम्परा वैसे तो ऊषा अनुल्लस की कथाओं में चली आती है किन्तु उसका प्रौढ़ रूप मुसलमान कवियों में ही दिखाई पड़ता है। पद्यावत में चार कथाओं का उल्लेख है। वह इस प्रकार है—

विक्रम घँसा प्रेम के बारा । सपनावति को गण्ड पताग ॥  
मधुपाल मृग धावति लागी । गगनपूर होइता बैरागी ॥  
राजकुँवर कचनपुर गण्ड । मिरगावति कहँ जोगी भयड ॥  
साधु कुँवर खंडावत जोगू । मधु मालति कर कौन्हे विरोगू ॥  
प्रेमावति कहँ मुरसरि साधा । ऊषा लागि अनिरुध धर बाँधा ॥

इस प्रकार कृतग्रन्थ ( संवत् १५५० के लगभग ) की सृजावती मंजु की मधुमालती, मुग्धावती और प्रेमावती सिद्धि की दो का अन्तर्गत नहीं लगता है, इन चार प्रेम कथाओं का उल्लेख आता है। इन प्रेम-गाथाओं की चार विशेषताएँ हैं ( १ ) ये चरित्र काव्य नमनवियों के ढङ्ग पर रचे गये हैं, इन में सर्गों का विभाजन नहीं है बल्कि स्थान-स्थान पर घटनाओं के अनुकूल शीर्षक दे दिये गये हैं। ( २ ) ये पूर्वी हिन्दी अर्थात् अवधी में दोहा चौपाइयों में लिखी गई हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने रामचरित मानस में दोहा-चौपाई के ही क्रम का अनुसरण किया है। ( ३ ) ये प्रेम कहानियाँ मुसलमानों की ही लिखी हुई हैं और इनमें मुसलमानों की नस्ल की कसक मिलती है,



(१) ये सब कथाएँ हिन्दू-जीवन से सम्बन्ध रखती हैं। इन प्रेम कथाओं में जायसी का स्थान प्रथम है। उनकी कल्पना और कविता ने प्रौढ़ता । उस में सत्तार जीव और ईश्वर के सम्बन्ध में बड़े गहन विचार । प्रेम की तीता में वह अद्वितीय है । प्रबन्ध-काव्य की दृष्टि से लघु-मानस के परचा उलको दूसरा स्थान मिलता है, क्योंकि हमें जीवन की वतनी व्यापक व्याख्या नहीं मिलती कि गोस्वामी जी काव्य में है ।

वि २—जायसी के काव्य की विशेषताएँ बतलाइए ।

जवाब—जायसी के काव्य में गुण भी हैं और दोष भी । उनकी कुछ विशेषताएँ गुण से सम्बन्ध रखती हैं और कुछ दोषों से । यहाँ पर उनकी दोनों ही विशेषताएँ दी जाती हैं ।

गुण-सम्बन्धी विशेषताएँ—

१—जायसी ने अपने काव्य में चलन शब्दों का प्रयोग किया है । जहाँ तक हुआ है उसने संस्कृत का पुट नहीं दिया है उनकी भाषा शब्द-चातुर्य की अधिक है ।

२—जायसी ने प्रेम मार्ग की परम्परा का पूर्णतया प्रतिपालन किया है । जायसी परम्परा के पालन में बड़े नयनदायी थे । ईश्वर, नदी, गुरु, बादशाह वक्त सभा की स्तुति भी है और अपने काव्य में, गङ्गा, यमुना, उपवन, लसुन, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायनाला आदि वन, उपवन, लसुन, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायनाला आदि प्रायः सभी वस्तु विषय ले जाये हैं । राजतेज के मुख से नमो देव की स्तुति की निन्द प्रत्यक्ष आई है कि तुम्हारा ने प्रायः देव निन्द प्रतीति है ( इसमें थोड़े मुत्तलाना प्रभाव की भी मिलता है )

३—जायसी का काव्य निर्दोष है । यद्यपि यहाँ में प्रियतम के तद्वि विवरण का हुआ है । प्रधान बात





अपूर्ति के सुग-दुग-मग अनुभव के वर्णनों को रहस्यवाद कहते हैं। ये वर्णन गँगे के गुह्य की भाँति होते हैं और मैना के द्वारा तब समझा जा सकते हैं। अर्थात् उन में रहस्य की भाँति रहती है।

मिलने की दो अवस्थाएँ होती हैं छोटे तने पानी पानी में मिलने की भाँति मिलना मानते हैं और कड़ु प्रेमी प्रेमिका के साथ मिलना मानते हैं। उसमें भी प्रेम के परिणाम के कारण तन्निता आजाती है और सारा सार प्रेम-पान का ही रूप धारण कर लेता है। पहले प्रकार का मिलन (जहाँ पानी पानी का अद्वैत जलक होता है) अद्वैत जलक है। जायसी में दोनों ही प्रकार के मिलन की भाँति मिलती है। मिलाने वाला प्रायः गुरु होता है।

यद्यपि मुसलमानों के धर्म में ईश्वर का सग्वं धर्मालिख और बंदेब साभय का सग्वं धर्म है (अर्थात् वहाँ यह भी कहा गया है कि वह इतना निकट है कि चित्तों की गर्दन की तल तथापि मुसलमान सूफियों ने उसका प्रेम का सन्बन्ध बना दिया है। सूफी मत का चलन मुहम्मद साहब के शायर दोबी वर्णवाद हुआ। (सूफी शब्द 'सूफ' से जिसका अर्थ सफेद ऊन है, बना है सूफों लोग ऊन के मोटे कपड़े पहनते थे) भारत में सूफी मत का आरम्भ सिंध से हुआ। शायरी इन्हीं रहस्यवादियों सूफियों में से थी और चिरनी खानदान के शागिर्द थे।

जायसी में रहस्यवाद के धर्म सभी अज्ञ आगए हैं। जायसी अद्वैतवादियों की भाँति एक ही सत्ता को सारे विश्व में व्याप्त पाते हैं। जो कुछ दृश्य जगत है उसी का प्रसार है। जायसी ने प्रेम और भावना द्वारा ही अद्वैत की सिद्धि की है। सूफी सम्प्रदाय का रहस्यवाद प्रेम द्वारा द्वैत से अद्वैतता को पहुँच जाता है। वह सारे संसार को सिया राम मय देखने लग जाता है।

पगड मुकुट ताल नहीं पूरे रहा तो नाचें ।

जहाँ देखी तहाँ मोही, दुनर नहीं जहाँ जायें ॥

जायसी एक ही ज्योति से नव ज्योतियों को होना मानते हैं ।

बड़े दिन दूध ज्योति निभने । बड़े ज्योति ज्योति मोहि भई ॥

जायसी ने उरनिपदों के प्रतिवेन्द ही भक्त निबन्धी है । नारायण रूपभक्त जगत्कल प्रनिधि है जायसी ने गुरु की भी महिमा गुरु ब्रह्म गारं हैं और हम आत्मान में कहीं तो हेतुगत को गुरु मान है कहीं परमावती को । जगत् पर परमावती को गुरु माना है वहाँ पर गुरु श्री रामानन्दा को पुत्र कर दिया है । देखिए गुरु से एककर होने को वक्त का क्या सुंदर वर्णन है ।—

रख ली गुरु हीं कहा न चीहा । कोटि छँतरपट दीवहि । डीन्हा ॥

रख चीन्हा तब और न कोई । तन मन लिय जोगन मर मोई ॥

असली नाथक ने अहंकार नहीं रहना उनका भी जायसी ने विन्द-मान किया है ।

“हो” हो” कर धोव इताहीं । जब ना निद्र कर परियाहीं ॥

जायसी ने प्रेमी की पीर और मिलन की अकाल बड़ी सुंदर रीति में दिखाई गई है । जायसी ने मिलन के मुख और बिंदोद्वार में अकाल वरदात और विषाद दिख लाया है । जायसी के रहस्यार्थ में रतनी विशेषतः है कि उन्होंने प्रेम की पीर दोनों तरफ एकना दिखाई है । अंगरे में मेन की पीर एक ही ओर से है ।

जायसी ने परमाव भी मिलन के लिए उनकी से उत्सुक है बितना कि रतनमेन । परमावती रतनमेन से मिलने जाती है वह रतनमेन के उदराल पर वदन के छहरा में प्रेम मोह लिय देती है । उतने करने बिबह की इत्ता भक्त पर जाने को भेला है । रतनमेन भी नाथक से भिन्न दाता है । रतनमेन की तरह नाथक ही सेवा रहा है और अन्तर एक जान है ।



नागसती देवती ह कि दूसरों के प्रिय आगये पर मेरे नहीं आये तो  
उमरा दुःख बातें होता है—

‘चित्रानिघ्न नील रुर आवा । पपीहा पीउ पुकारत पावा’  
कहना उसी तन्हालीन बेइना को चित्रित करती है मनुष्यों के नाना  
ज्यों आर व्यापारों को अपने जैसा देखती है तभी उसे दुःख होता है ।  
जमें नवा झोंगि झोंगरी, नोर दुइ नैन चुबे उन प्रोरी ।

+ + + +

तब उन पियर पान भा मोरा । नेहियर प्रिरह डेइ करु मोरा ।  
उमरा दुःख की अभिलाषा का फेस्ता सुन्दर वर्णन है—

यहतन जारों दारने, कही कि पवन उठाव ।

नहु तेहि नारग उठि परे कन्त भ्रै जहे पाव ॥

इस प्रकार नारद नाम के द्वारा रवि ने प्रियतन्त्र श्वदार का जीता  
मगता चित्र खडा कर दिया है ।

प्रय आये संयोग-श्वदार की प्रेर । उनके रवि को सफलता  
प्राप्त नहीं हुई ।

पद्मावती प्रीत रत्नमेन के प्रधान सनातन के समय विनोद का  
विधान तो अत्यन्त विशा गया है, पर विनोद का भाव प्रिदक्षित भी  
नहीं हो पाता कि स्नातनियों की परिभाषाओं का दशाती है । उद्भूत-  
प्रदर्शन की तात्पर्य की रवि यश नहीं दश मना फिर भी उराल रत्न-  
पूर्ण पत्र सर्वांग है । पद्मावती श्वदार वरसे पति से मिलने चतुती है ।  
उस समय रवि मरता है —

‘नाजग खेद पत्रया आदन्तु जाट न नेट ।

तप-मन जोवन नाजि कै, देह चला खेद नेट ॥’

तप-मन योवन तीनों को नेट से देन को चतुता करा ही सुन्दर  
रहा गया है । सौन्दर्य का पश्यन प्रेरित है —

फूल के निकट होते हुए भी दूर है क्योंकि उन दोनों का आदर्श मिश्र  
चीटा गुड से दूर रहता हुआ भी उसकी गंध पाकर उसके निकट  
जाता है, क्योंकि उसमें गुण-आहकता है। इसी बात का नीचे के दोहे  
एक और उदाहरण दिया जाता है।

भँवर ... पास = भँवर बन में रहता है किन्तु जल में रहने  
कमल के पास पहुँच जाता है पर मैंढक जल में रहता हुआ भी कमल  
गंध से आकर्षित नहीं होता।

तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही कहा है।

विशेषः—तेरहवें दोहे के पश्चात् कथा का प्रारम्भ होता है।

वरनि = वर्णन करके।

निरमल... देखा = वह वर्णन विशेष निर्मल दर्पण के प्रति  
विम्ब की भाँति है। जो जिस रूप का है उसे वही रूप दिख  
पड़ता है।

नोट—कवि कहता है कि उसने जो कुछ वर्णन किया है यथा  
वर्णन किया है। शेक्सपीयर ने भी कहा है कि कवि चाहिय प्रकृति  
दर्पण दिव्या देता है ( 'The Poet holds the mirror to nature'  
re' )

वनि में दीप सवारी = वह मिहलदीप धन्य है जहाँ की स्थिति  
दीपक के समान उज्ज्वल प्रकाश देने वाली है और प्रज्ञा ने जिस पदमि  
अर्थान पञ्चावर्ता का बनाया वह धन्य है। इसका अर्थ यह भी हो सकता  
है कि वह दीप धन्य है जहाँ विद्या ने पश्चिमी को उपलब्ध किया, उ  
रूप के दीपक को जलाया।

सुगन्धरेनु = यन्त्री गंध वाला, सम्भव है यह गंध का प्रेमी  
होकर उसने ही स्वाभाविक गंध ग्रानी हो। तो राजा ... देव  
वद मिह दीप का राजा है और वह उसका देव है।

काँइ = अंगूठा



प्र० १२—आचार्य की भाषा समस्त श्री विज्ञानाचार्य पर विचार कीजिए ।

उत्तर—संक्षिप्त पाठ्यपुस्तक की भाषा देखेंगे ।

प्रश्न १३—प्रत्येक कथानुसार की दृष्टि में प्रस्तावना पर विचार कीजिए ।

उत्तर—आचार्य ने काव्य के दो भेद माने हैं (१) सुगम, जिसमें प्रत्येक क्षण स्वा. सम्पूर्ण और आनन्द होता है और (२) प्रयत्नकाव्य, जिसमें कथानुसार का कथानुसार आनन्दक है और प्रत्येक क्षण उपर्युक्त के सम्मुख होता है । प्रयत्नकाव्य में कथानुसार को अपने उद्देश्य की ओर आकर्षण रूप में प्रेरित होना चाहिये । उसमें न तो किसी अनावश्यक प्रसंग अथवा कथा को लाना चाहिये और न आवश्यक को छोड़ना ही चाहिये । उसका कोई अंग ऐसा न होना चाहिये जो मुख्य उद्देश्य की पूर्ति न करता हो । साथ ही संगठन की दृष्टि से प्रत्येक प्रसंग को उचित विस्तार एवं सशक्त प्रद. न करना चाहिये इतिवृत्तात्मक एवं गत्यात्मक स्थलों का उचित साम. रम्य होना चाहिये । रम्यत्व स्थलों में मनुष्य के हृदय की वृत्तियाँ लीन होनी हैं और इतिवृत्तात्मक से उसकी जिज्ञासावृत्ति ( आगे क्या हुआ यह जानने की तालसा ) की तृप्ति होनी है । प्रत्येक काव्य में भावों की सुन्दरता के अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि भाव परिस्थिति के अनुकूल है अथवा नहीं । इस दृष्टिकोण से यदि हम पद्मावत को देखें तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि उसमें अनावश्यक प्रसंगों का समावेश तो अवश्य है किन्तु अनावश्यक बातों का समावेश नहीं हुआ । कथानुसार में सम्यन्ध विच्छेद भी नहीं पाया जाता । जो प्रसंग बीच में लाये गये हैं उनका मुख्य कथा से सामञ्जस्य स्थापित कर दिया गया है । जैसे समुद्र से पाँच स्तनों की प्राप्ति और उनका अला उद्दीन को दिया जाना तथा देवपाल की शत्रुता और दूरी का भेजा जाना आदि का उससे मृत्यु को प्राप्त होना । इसमें घटनाचक्रों के भीतर जीवन दशाओं और पारस्परिक सम्बन्धों की वह अनेकरूपता तो नहीं है जो तुलसीदास के रामचरित मानस में है तथापि यह



हारिल .....हरा = हरियल ( तोते की जाति का एक पक्षी ) ऐसी बोली बोलता है मानो कहता हो कि मैं हार गया और हा, प्रकार वह अपना हारिल नाम सार्थक करता हो ।

विरोप—इन पक्षी के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि यह पृथ्वी पर नहीं पैर रखता है। जब पानी पीने के लिए उतरता है तो पैर में कोई लकड़ी का टुकड़ा दबाये रहता है। इस प्रकार वह वृक्ष से अपना सन्ध नहीं ढोड़ता ।

कुराहर = कोलाहल ।

जायत .....नाउ = संसार के जितने पक्षी हैं उसी प्रमराई में बैठे हैं और अपनी-अपनी बोली से ईश्वर का नाम लेते हैं। मनुष्य भी ऐसा ही करते हैं। उपनिषदों में कहा है कि एक ही परमात्मा को लोग बहुत प्रकार से कहते हैं ।

पृष्ठ =

पैंग पैंग = एक-एक पैर पर, थोड़ी-थोड़ी दूर पर। पॉयरी = सीढ़ी। इसका अर्थ पॉरी का द्वार भी हो सकता है। ठावहिं ठावें = स्थान-स्थान पर।

सत्र ... नाउ = वे सत्र कुण्ड पवित्र स्थान हैं और उनके चारों ओर भलरा नाम है। मउ = जहाँ साधु और विशासी लोग रहते हैं। मउप = बस-होम दिवस के लिए जो स्थान बनाए जाते हैं। ये चारों ओर से घुंते होते हैं और गर्मियों पर धुन होती है। तपा = तपस्वी लोग। जपा = जप करने वाले। मानमरोदक = मानमरावर का जल। अति प्रगाहा = अति गर्म और अथाह ।

अमृत सुनालू = मानो अमृत लाकर उसमें ऊपर की सुगंध उत्पन्न कर दी गई हो ।

गररी = चरचर । चडुपेरी = चरों ओर । रता = जाता । कृता = कृता, समूह ।

तरार... आइ = सब पेड़ पेयों में मानो मत्स्यगिरि से आए गए हैं। उनकी ऐसी बनी दाँद है कि उसके कारण मत्स्यगिरि में दाँद भी जाती है और गाँव सी दिग्गो पड़ती है।

ओइ... देवावर = उस की दया से मत्स्यगिरि में रात्रि राजाओं है और आकश हवा अर्थात् नीला दिग्गो पड़ता है। होइ धिमरान् = धिमरान् पाता है।

पथिक... धूपा। इसका साधारण अर्थ सरल है। इसका अन्य नित्य अर्थ यह है कि जो जीव इस संसार के तीनों तापों से पोंडित हो ईश्वर की शरण में जाता है उसका दुःख दूर जाता।

अस... वसन्त = वह अमराई वादल के समान बनी है उसके बरान का अंत नहीं हो सकता है। वहाँ उहाँ ऋतुओं ने ऐसे फल और फूल लगे रहते हैं मानो वहाँ सदा वसन्त ही रहता हो, अर्थात् वसन्त वन गया हो।

पवि = पत्नी। उलास = उल्लास, आनन्द। करहिं मात्वा = वृत्तों की शास्त्रा को देखकर आनन्द करने हैं। बनी शास्त्राओं से पत्नी बहुत प्रमत्त होते हैं।

चुहचुही = एक चिडिया अथवा 'चुहचुहाकर'। पोंडु = पिडुक्रिया। तुही = परमात्मा वृ एक ही है। सारी = मेना। रहचह करही = रहचह करने हैं। उरहि = दूर दूर करने हैं। परेव = कूनर। करवरही = धर से उग्र उड़ते हैं। गदुरी = एक पत्नी। जीहा = जीभ।

तुही जीहा = गदुरी 'तुही तुही' पुकारती है। कहने का अभिप्राय यह है कि प्रातः काल पत्नी भी प मात्मा का स्मरण करते हैं।

भिगराज = नृप राज, कहा जाता है कि यह सब बोलियों का अनुकरण करता है। महरि = एक चिडिया जिसको कुछ लोग बालिन कहते हैं।



नोट—पारिभाषिक रूप से ढँवत ये ही कहलाते हैं जिनमें हजार पसुरियाँ हों । 'सदस-पत्र कमलं, शत-पत्रं पुशेयम्' अर्थात् सदस इस वाला कमल कहलाता है तथा सौ पत्र वाला पुशेयम् कहलाता है ।

पाल = बाँध । बारी = बगीचा । अपूर = आपूर्ण ।

विध.....वासा = उसके फूलों की इतनी सुगंध है कि उसने चंद्रन की गंध की भाँति पास के वृक्षों को सुगंध से बसा कर चन्दन बना दिया है ।

देसा = देश । अवासा = महल । 'कैलास' का तात्पर्य यहाँ अमरावती समझना चाहिए क्योंकि वही इन्द्र के रहने का जगह है । ईसतामुरी = प्रसन्नमुग्ध । चौरा = चवूतरा । मेव = कस्तूरी । गौरा = गोरोचन । ग्याता = ज्ञाता ।

सबै मुग्ध .....वाता = सब लोग संसृत होतते हैं, पंडित होने के कारण प्राकृत भाषा नहीं बोलते । अथवा यह भी अर्थ हो सकता है कि वे लोग शोधी हुई सभ्य लोगों की भाषा में बातचीत करते हैं ।

अस.....अनूप = दरों को ऐसा सजाया है कि मानो वे अपनी बराबरी न रखने वाले शिवजी के लोक हैं ।

आपु = जाने पर । करिन्द = हाथी दिक्पाल । तरहि दीटी = सिंहल गढ़ के मकानों की नींव वहाँ तक पहुँचती है जहाँ कि दिक्पाल और भगुकि ( शेफनाग ) है और वह के महल इतने ऊँचे हैं कि उनके ऊपर से इन्द्रांक दि ई पता है ।

लोह = लोहा । वंका = सुन्दर । बाँका टेढ़े को कहते हैं ( गढ़ के टेढ़े होने में ही विशेषता है ) । टेढ़ी वस्तु अधिक सुन्दर मालूम होती है इसीलिए बाँके को सुन्दर कहते हैं । टर खाई = डर जाता है । सस = सातवें पाताल । नीचे के लोकों की गणना में पाताल का नम्बर

आता है देखिए अतल, वितल, सुतल, तलातल महातल, रसातल पाताल ।

पृष्ठ ६

नव... नवयदा = गढ़ के नौ बरगद और उनमें जाने के लिए अलग अलग छ्योड़ियाँ हैं। नवों .. ब्रह्मयदा = जो नवों ब्रह्मों के ऊपर पहुँच जाता है वह मानों ब्रह्मयद के ऊपर चला जाता है ( ब्रह्मयद के भीतर पृथ्वी नक्षत्र आदि सब लोक आ जाते हैं ) ।

जरे = जड़े । नवतहि .. दीसा = गढ़ में जो नग और शीशे जड़े हुए हैं वे ऐसे मालूम होते हैं मानों आकाश में तारागण और त्रिजली घूम रही हो । च हि = अपेक्षा । लका \* \* ताक' = वह गढ़ लका से भी ऊँचा दिखाई पड़ता है । दीड मन धाक = दृष्टि और मन देखते-देखते थक जाते हैं ।

हिय \* \* \* फेर = उस गढ़ की रचना न तो हृदय में समाती है और न दृष्टि में समाती है । वह इतनी पेचीदा है और विस्तृत है कि दृष्टि और हृदय उसके ग्रहण करने के लिए पर्याप्त नहीं है ।

फेर = घेरा । नित \* \* चूरू = उस गढ़ की इतनी ऊँचाई है कि सूर्य और चन्द्रमा उस गढ़ को घूँटकर चलने दें । यदि ऐसा न करें तो उनके रथ और घोड़े चूर चूर हो जावें ।

पौरी = प्रवेश-द्वार । चत्र के सजी = चत्र की चर्तोंदुई : पार्वी : । पदल निपाही । कोतार = कोटपाल, कोतशाल ।

हिा नुनांगी = पाँच कोतशाल ले ग उनही रस के लिए उनके खानों और दिन रात पहन दते हैं ।

नोट—सिद्धगढ़ की रचना शरीर ही जैसी करी गई है । शरीर में भी नाद्वार है "नो दूरे को पीछरा नन प नी सोन" शीव को-उल 'नय, अपान, उदान, प्य न, नन न' शरीर के सब भाग हैं ।

काप \* \* \* सोरी = पारी न पुनने ही रर करन्य है ।

पौनडि पौरि... काढ़े = प्रत्येक दरवाजे पर गढ़े हुए  
वहाँ गया देख कर लोग डर जाते हैं ।

वह विधान..... चढ़े = वे सिंह बड़ी ताक़ीब के साथ गढ़े गए  
ऐसे मालूम होते हैं कि मानो वे गरजते हैं और सर पर  
ट. हि पेंछ = पेंछ हिलाते हैं ।

कुँजर डहि... लोहा = हाथी डरते हैं कि सिंह गरजकर  
वही खा न आवें ।

कनक..... ताड़े = सोने की शिलाओं को गढ़ कर सीढ़ियाँ  
गढ़े हैं और वे गढ़ के ऊपर तक जगमगाती हुई जाती हैं ।

नयी..... पार = उस गढ़ के नीचे खण्ड हैं और नीचे ही  
उनमें वज्र के किवाड़ लगे हुए हैं । चार बार टहर कर लोग उन  
पर चढ़ पाते हैं और सत्य के आधार पर ही वे उसके पार जाते हैं ।

नोट—जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कवि ने सिंहल-गढ़  
मनुष्य-शरीर की एक सी रचना दिखलाने है । इस वर्णन में हिन्दुओं  
राज्यांग और मुक्ती धर्म के सिद्ध-तों का बहुत कुछ सम्मिश्रण है ।  
कोट के नीचे दावाजी के अनुकूल शरीर में श्याम कनक नाक आदि के नीचे  
दावाज है । हड्डियाँ ही वज्र के दाव हैं । गम वर दाव ६ मरुतों योद्धा  
हैं । पाण, अंगान यदि पंच प्रायु पाँच कानवल । गढ़ ६ ऊपर जाने  
के लिए कर दह न ६ स्थान बनवाए गए हैं । मुक्किया भी भाषा में  
इन गढ़ान के स्थानों की मुकाम कहते हैं । यथा १ यथासिद्ध सत्य  
के बली यथासिद्ध ही उद्यम की प्रत्यक्ष गणनाओं के अनुकूल  
निष्पत्ति प्रत्यक्ष में मानी गई है । यहाँ पर सत्य के राज्यांग शरीर  
का निर्माण हुई एक ही गढ़ान में । यथा २ यथासिद्ध सत्य के  
निष्पत्ति से चार प्रकारों के वर्णन दिया जाता है ।

The text at the bottom of the page is a library stamp from the University of Delhi, dated 1954.





नोट—घड़ी यहाँ सृष्टि है, घड़ी का अर्थ रहँट की घड़िया भी ।  
और घड़ी ( समय का एक विभाग ) भी है ।

भारि = निरे, सभी । असुपति = अश्वपति । भूनरपति = भूपति और  
नरपति । भूनर पति से मालूम होता है कि उस जमाने में कुछ लोग  
ऐसे भी थे जिनका केवल जमीन पर अधिकार था, शासन नहीं करते थे।  
नरपति, वही हो सकता है जो मनुष्यों पर शासन करे ।

धौराहर = महल । सभागो = भान्यवान । परस-पखान = पारस पत्थर  
(स्पर्श पाषाण) । माना = जाना । भोग माना = सब लोगों का वहाँ  
भोग और विलास का ही काम रहता था क्योंकि वहाँ किसी प्रकार की  
चिन्ता नहीं थी । चौपारी = बैठने के स्थान, बैठक । सारी = पौसा, चौसर ।

पौसा . . . कोई = खूब पैसे पड़ते हैं और अच्छा खेल होता है ।  
किन्तु उसी के साथ साथ वहाँ लोग तलवार चलाने और दान देने में  
अपनी बागबरी नहीं रखते थे ।

भाट . . . . सिंघली = भाट लोग उनकी सुन्दर कीर्ति का वर्णन करते  
हैं और पुरस्कार स्वरूप हाथी और सिंहली घोड़े पाते हैं ।

राज धरियार = राजा का घण्टा जिसमें और कोई लोग रहबदल नहीं  
कर सकते और जिसके अनुकूल सब को अपना काम करना पड़ता है ।

धरियारी = घण्टा बजाने वाला ।

घरी . . . निवारी = घण्टा बजाने वाला ( अथवा साल ) घड़ियों के  
गेनता रहता है, पहर पहर पर अपने आप याता है यदि 'यापनि वारी'  
पाठ समझा जावे तो अर्थ ठीक बैठता है । पहर पहर पर अपनी अपनी  
आती है अर्थात् पहरा बदला जाता है ।

जबहि . . . पुकारा = अब घड़ी बज जानी है कटोरी (जलघड़ी) पानी  
जाती है तब वह घण्टे पर चोट मारता है तब घण्टे-घण्टे पर घटा  
है, आगे बतलाते हैं कि घण्टा बज कर क्या कहता है ?

परा.....भाँडा ? = घण्टे पर जो लकड़ी की चोट पड़ी तो उसकी धावाज सारे संसार को डटती है कि हे मट्टी के बर्तनो ( मनुष्यो ) तुम अपना निश्चिन्त होकर सो रहे हो ।

तुम.....बाँचे = तुमको नहीं मालूम तुम कच्चे बर्तन हो । काल के चक्र पर चढ़े हुए हो । तुम समझते हो कि तुम 'आएँहु रहै' अर्थात् तुम रहने को आए हो । किन्तु स्थिर नहीं रह सकते, काल चक्र पर घूमते ही रहोगे ।

कहीं कहीं 'आएँहु फिरै' पाठ है । इससे यह अर्थ होगा कि तुम फिरने के लिए ही आए हो ।

घरी .....बराऊ = जब जब घड़ी की कटोरी भर जाती है तभी-तभी तुम्हारी उम्र का एक हिस्सा घट जाता है । तो तुम पथिक किस लिए निश्चिन्त होकर सो रहे हो ?

गजर = चार घण्टे पूरे होने पर जो कई बार घण्टे बजते हैं उन्हें गजर कहते हैं ।

चोवा = एक सुगन्धित द्रव्य । वही श्रुतु बारह मास = ज़ोर देने के लिए वही श्रुतु के बारह मास लिख दिया गया है ।

बारा = द्वार, द्वार का बार रह गया ।

जनु पहारा = मनो जिन्दा पहारा खड़े हुए है । रतनारे = लाल । धन = धन के रत्न । सन = सफेद हाथी बर्तन में होते हैं । बुद्ध धर्म में इनका क्या अर्थ है ? रतनार = रत्नहार पर । मन ने अगमन = मन के नाश का जान बाल न होना । मन की भी पटुव्य उनका साथ नहीं होती । रत्नार ना = रत्नार का हिलना है ।

धिर उपरार्ह = निश्चय प्राप्त स्थिर नहीं रहने । जागने के निन्दित्याकुल रहने । लज्जित का चक्र व रत्नार अपनी पूँछ को सर पर टुलना है, करने का तात्पर्य यह है कि उनका पूँछ बड़ी लम्बी है ।

तुषार = नुषार रेश के बोंदे । रवगाढ = रव के ने जाने वाले ।  
 बरुनी = बरुनी । धनि = रव ? ।

दर = दण, मेना । निगान = उँका । द्वाग = द्वय ।

पृष्ठ ११

पादा = पीड़ा = मिहामन । भूने = मुग्ध हो जाना या । नेट = ५  
 कस्तूरी । अपूरी = आपूर्ण, चारों ओर से पूर्ण । नाँक = ब्रह्म  
 इन्द्रात्मन = प्रधान आत्मन ।

नोट—इस वर्णन में कवि ने यह दिखताया है कि राजा का  
 को सभा में बड़े-बड़े राजा रहते थे ।

द्वय... परताप = राजा का सर्वोच्च या दृढ़ आकाश में लगाना  
 और वह स्वयं सूर्य के समान प्रताप वाला था । उस सूर्य के सम्मुख  
 में बैठे हुए राजा रूपी कमल मिले थे । राजा के मन्त्र पर बड़ा तेज  
 साजा \* \* कैलास = राज-मन्दिर कैलाश की तरह सजा हुआ  
 धरति = धरती, पृथ्वी । धौराहर = महल ।

उहै \* \* राजा = उतने बड़े नरपुंगव वाले महल का वैसा  
 राजा ही इतना कर सकता था । यन्दुर्गन्ध = प्रथमराशों से ।

नोट—यहाँ पर भी कवि इन्द्र और शिव को जिला देते हैं ।  
 हाँ प्रायः इन्द्र के यहाँ रहा करनी ।

रूप = रूपवती । बबानी = गिनी जानी है । मुकुवारी = मुकुट  
 गट = राज मिहामन । परधानी = प्रधानी = पदरानी । दीपक  
 वानी = द्वादश आदित्य के समान प्रकाश करने वाली । आरहवणी =  
 सूर्य के वर्ण ( रंग ) वाली । बर्तनी लच्छनी = वर्तनी लच्छनी  
 पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं । जवन = जितने ।

चम्पावति \* \* ओतारी = परमात्मा ने जो चम्पावती को रूप  
 यह इसीलिए कि वह उसके गर्भ से चम्पावती को उत्पन्न करना चाहता

सलौनी = लावण्यमयी सुंदर ।  
 में चाहे .. होनी = पद्मावती के अवतार से कथा ऐसी सुन्दर  
 बनने वाली है अर्थात् जिस प्रकार चम्पावती का रूप पद्मावती को सुन्दर  
 बनाने को हुआ । उस पद्मावती का जन्म कथा को सुन्दर बनाने को हुआ ।  
 जो होना चाहता है वह होकर ही रहता है ।

सिंहलदीप 'अर्जु' = सिंहलदीप में 'दीप' शब्द का प्रयोग तभी से  
 सार्वक हुआ जब से कि वहाँ ऐसे दीपक का प्रकाश हुआ । इसका यह भी  
 अर्थ हो सकता है कि सिंहलदीप का भी नाम सत्तार में इन्हीं दीपक के  
 द्वारा प्रकाशित हुआ ।

प्रथम .. 'अर्जु' = आकाश में परमान्मा ने जिस ज्योति या निर्माता  
 किया वह पिता के माथे में प्रकाशमान मणि ( वीर्य ) के रूप में आई ।  
 नोट—लोगों का विश्वास है कि इंगूर जिते सत्तार में भेजता है  
 उसकी ज्योति पहले आकाश में रच देता है । वह प्रकाश फिर वीर्य रूप  
 में पिता के मस्तक में जाता है ।

अंतर = उदर । अनुधान = गर्भ । जन्मानु = जन्मे गान के नाम  
 से पूरे हुए । परमानु = प्रकाश ।

जन्म दीया = जिस प्रकार प्रकाशमान दीपक आकाश में विद्यमान  
 नहीं छिपता वैसे उसी प्रकार गर्भस्थ पद्मावती का वस्त्र का आभूषण क  
 हुवर में प्रकाश आ गया था वह छिपा नहीं पता था । अर्जु  
 उजाला में रहा था । अर्जु = उज्ज्वल हुआ

मोने दीप = पद्मावती का जन्म के समय मन्त्र का प्रयोग करने  
 वरों को मोने में लगाने के लिए अर्जु नाम का मन्त्र प्रयोग करने से  
 जो प्रकाश देने वाली मणि थी वह सिंहलदीप में पद्मावती के रूप में  
 उज्ज्वल हुई । मुनि = मैं ।

सुरज्जला नदी = उसके प्रकाश के समान नदी का जल उज्ज्वल  
 नहीं थी । उसका प्रकाश उसमें भी दृष्ट हुआ था इसका यह भी अर्थ

तुषार = तुषार देश के बड़े । रथवाह = रथ के ले जाने वाले ।  
बड़ी = बैठी । धनि = धन्य है ।

दर = दल, सेना । निशान = डका । द्युत = छत्र ।

पृष्ठ ११

पाटा = पीढ़ा = सिंहासन । भूले = मुग्न हो जाता था । मेद =  
कस्तूरी । अपूरी = आपूर्ण, चारों ओर से पूर्ण । माँक = वीर  
इन्द्रासन = प्रधान आसन ।

नोट—इस वर्णन में कवि ने यह दिखलाया है कि राजा की  
सभा में बड़े-बड़े राजा रहते थे ।

छत्र . . . परताप = राजा ग वर्चस्व का छत्र आकाश में लगता  
और वह स्वयं सूर्य के समान प्रताप वाला था । उस सूर्य के सम्मुख  
में बैठे हुए राजा रूपी कमल लिले थे । राजा के मन्त्र पर बड़ा तेज

साजा . . . कैलामू = राज-मन्दिर कैलान की तरह सजा हुआ

धरति = धरती, पृथ्वी । वीरादर = महल ।

उहै . . . राजा = उतने बड़े नरपुंगव वाले महल का वैसा  
राजा ही इतना कर सकता था । यदुर्गन्ध = ग्रामराशियों में ।

नोट—यहाँ पर भी कवि इन्द्र और शिव को मिला देते हैं ।  
राएँ प्रायः इन्द्र के यहाँ रहा करती हैं ।

रूप = रूपवती । बलानी = गिनी जाती है । सुकनारी = सुकुमार  
पाट = राज सिंहासन । पारधानी = प्रधानी = पदरानी । दीपक  
वानी = द्वादश आग्नि के समान प्रकाश करने वाली । वारहवर्णी =  
सूर्य के वर्ण ( रंग ) वाली । वर्तमानो लक्ष्मी = वर्तमानो लक्ष्मी  
मुक्तक के पीछे छिपे हुए । जवन = जिनने ।

चम्पावति . . . ग्रीतारी = परमात्मा ने जो चम्पावती को रूप  
दिए इसलिए कि वह उसके गर्भ से पञ्चावति को उत्पन्न करना चाहता















र जल में छोड़ दिया ) और उसके हाथ ने मणिहार खोजा'। इस कारण वह अचेत होगई। लागी '... हाथ = सब महेलियों एक साथ जाता लगा लगा कर उस द्वार को खोजने लगीं। किसी के हाथ में मोती पा जाता था और किसी के हाथ में घोंघा याता था।

नोट—इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि मूर्ख लोग इस ससार में जीवन-रुही-द्वार खोजते हैं। दोहे का अभिप्राय यह है कि इस ससार में सबों अपने भाग्य के अनुकूल मिलता है।

कहा "आई = मानवरोवर ने कहा कि जो मैं चाहता था (इन रत्नशियों का दुर्लभ दर्शन और स्वर्ण) नो पागया। पारम स्वरूप ये मोक्ष-रत्नशियों यही आई हैं। जिस प्रकार पारल पत्थर लोहे आदि पुरी धातुओं को उत्तम बना देता है उसी प्रकार ये स्त्रियों भी मुझे सुदृढता प्रदान करेंगी यह भाव।

पाया रूप दर्शन = रूपवती स्त्रियों के दर्शन करने से उसको रूप प्राप्त होगया। परमात्मा के दर्शन से जीव भी परमानन्द स्वरूप बन जाता है।

मलय पुनर्आई = उन स्त्रियों के शरीर को स्पर्श करती हुई उनके शरीर की सुगन्ध लेकर जो ऐसा आई या मलय-मन्मथ भी भोति शक्ति थी। उनके द्वारा मानवरोवर शक्ति प्राप्त कर उसकी गरमी जाती रही।

पेन = पवन। न प्रय = नावृत्त नहा जानती ऐसा उनकी यहां जिया आई। उतिराग = उषर प्रागदा (पेन मलय होता है कि मानवरोवर ने उस द्वार को दिखा दिया था, अब उसका दर्शन कर ही तब हुआ था। उनकी शक्ति मिलती उन्होंने द्वार को ऊपर नेजिय)

चद रिनेनाला = पद्मावती स्त्री। रिनेना पुनुर देवि मनिरेना = पद्मावती का प्रसन्न चद-रुः देवि मनिरेना रूपिणी कुलदिनियो निज गई। मैं तब देवि = तबने पद्मावती को मैं देना चले उले कान्ति मिल गई।



